Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आधुनिक भारत के निर्माता

पं. जवाहरलाल नेहरू

व्यक्तित्व और विचार

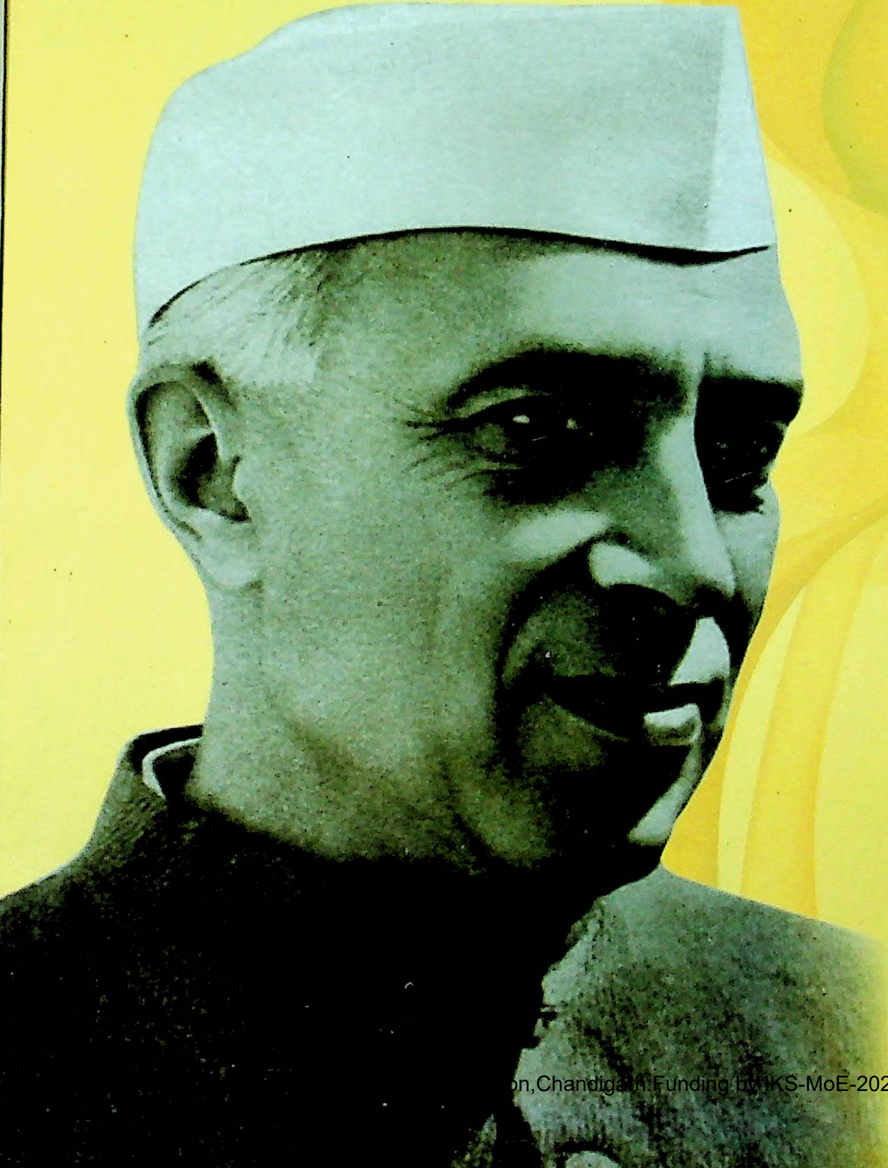

on,Chandigarh:Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आधुनिक भारत के निर्माता

पं. जवाहरलाल नेहरू

व्यक्तित्व और विचार

डॉ. सत्येन्द्र चतुर्वेदी

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc No. 7801
Dated 10/11/92

फ्यूजन बुक्स

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant
780

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

© प्रकाशकाधीन

प्रकाशक : फ्यूजन बुक्स
X-30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-II
नई दिल्ली-110020
संस्करण : 2019
मुद्रक : जी.एस. इन्टरप्राइजिज

ADHUNIK BHARAT KE NIRMATA PT. JAWAHARLAL NEHRU
by :Dr. Satyendra Chaturvedi

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भूमिका

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू के व्यक्तित्व और उनके विचारों के संबंध में डॉ. सत्येंद्र चतुर्वेदी ने एक पुस्तक का प्रणयन किया है। उन्होंने मुझे उसकी भूमिका लिखने के लिए आमंत्रित किया, वह उनकी सदाशयता का परिचायक है। मेरा धन्यवाद! वैसे पंडित नेहरू पर अनेकों पुस्तकें अंग्रेजी तथा अन्य भारतीय और स्वदेशी भाषाओं में लिखी गई हैं। यही नहीं, उनकी स्वरचित पुस्तकों, लेखों तथा भाषणों के अनुवाद भी अनेक भाषाओं में उपलब्ध हैं। पं. नेहरू का व्यक्तित्व इतना महती और बहुपक्षीय है कि उसका कोई-न-कोई पक्ष हर एक व्यक्ति को प्रभावित करता है। यह जीवनी डॉ. सत्येंद्र ने साधारण व्यक्तियों और नवयुवकों को दृष्टि में रखते हुए लिखी है, ताकि ऐसे पाठकों में पं. नेहरू के व्यक्तित्व के प्रति उत्सुकता उत्पन्न हो। यह उत्सुकता पाठक को उनकी रचनाओं की ओर भी आकर्षित करेगी। पुस्तक चाहे आकार में छोटी हो पर वह तथ्यों, जीवनी और लेखक के विस्तृत अध्ययन व मनन पर आधारित है। कहा गया है कि महापुरुषों की जीवनियां प्रत्येक दशक में लिखी जानी चाहिए, चूंकि हर पीढ़ी अपने समय के आलोक में उनको समझना और मूल्यांकन करना चाहती है।

पं. जवाहरलाल नेहरू का जीवन प्रारंभ से ही अपने में तथा अपने परिवार की पृष्ठभूमि में ही अत्यंत रोचक है। पर वह भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष और स्वराज की प्राप्ति के उपरांत भारत के निर्माण के साथ जुड़ा है। आजादी के समय और आजादी के बाद जो भूमिका पं. नेहरू की रही है, वह अभूतपूर्व है। नेहरू केवल कल्पनाशील ही नहीं प्रत्युत संपूर्ण जीवन में कर्मशील भी रहे। अपने विचारों और आदर्शों को उन्होंने अमलीजामा पहनाने की निरंतर कोशिश की है। वे हर मसले की जड़ में जाते थे और अपने सिद्धांतों की कसौटी पर तौलते थे। उनके जीवन में आदर्शवाद और कर्मशीलता का अद्भुत मिश्रण है। इसी प्रकार भारतीय चिंतन और संस्कृति को नेहरू ने सदैव आधुनिक विचारधाराओं और आवश्यकताओं से भी सामंजस्य बैठाने की चेष्टा की। उनके लिए भारत का स्वतंत्रता संग्राम अपने देशवासियों तक ही सीमित नहीं था। वह साम्राज्यवाद और औपनिवेशिकवाद के विरुद्ध जो युद्ध आवश्यक था, उसका ही यह एक अहम हिस्सा था। भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत हम देखते हैं कि अफ्रीका, एशिया और अन्य गुलाम देश भी धीरे-धीरे आजादी की ओर बढ़ने लगे। पं. नेहरू हमेशा रंगभेद और जातिभेद के विरोध में कड़े शब्दों में अपने विचार प्रकट करते हैं और भारत ने उसी प्रकार की नीतियों का अनुसरण किया। वे अंतर्राष्ट्रीय जगत् में अलग-अलग गुट और ब्लॉक बनाने के खिलाफ थे। पं. नेहरू विश्वशांति के प्रबल समर्थक थे। वे किसी देश में भी जाएं, उनका एक संदेश अवश्य रहता था कि विश्व

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की कोई समस्या ऐसी नहीं कि आपसी बातचीत से हल न की जा सके। भारत के पास आजादी के बाद कोई विशेष सामरिक शक्ति नहीं थी, पर अपने सिद्धांतों और नैतिकता के बल पर पं. नेहरू ने विश्वमंच पर महत्त्वपूर्ण भूमिका का कई कठिन परिस्थितियों में निर्वाह किया। इसी कारण उनकी गिनती आदर के साथ विश्व के प्रमुख नेताओं में की जाने लगी।

वे भारत की जनता के चहेते थे और उन्हें भी देशवासियों से बेहद प्यार था। कठिन-से-कठिन विषयों को वे सरल भाषा में अपने भाषणों द्वारा आम जनता को समझाने की कोशिश करते थे। वे चाहते थे कि सर्वसाधारण देश की समस्याओं को समझे और दिलचस्पी ले। संविधान शीघ्र बने और वह पूरी तरह से प्रजातांत्रिक बने, यह उनका प्रयास रहा। यही कारण है कि हमारे संविधान में वह लचीलापन और गतिशीलता है कि हर कठिन समस्या का संवैधानिक हल निकल आता है। पड़ोसी देशों में संविधान बार-बार बदले पर हमारा संविधान अक्षुण्ण है। नेहरू ने संसद की स्वस्थ परंपराओं की नींव रखी। यह अलग बात है कि परवर्ती देश के कर्णधार उनको सदैव कायम न रख सके। पं. नेहरू ने योजनाबद्ध समावेशी विकास के लिए मार्ग प्रशस्त किया एवं अथक परिश्रम किया। उनके सामने एक समृद्ध, गतिशील, सुखी और समतामूलक भारत की तसवीर थी। उनकी धर्मनिरपेक्षता का तात्पर्य धर्महीनता या धर्मविमुखता नहीं थी। वे धार्मिक समभाव और सौहार्द में विश्वास करते थे। डॉ. सत्येंद्र अपने पूज्य पिता द्वारा स्थापित मासिक 'लोकशिक्षक' को लगातार संपादक के रूप में अपने सीमित साधनों के होते हुए भी निस्पृहता से निरंतर निकाल रहे हैं। मासिक पत्र का उद्देश्य उसके नाम में ही निहित है। उसका हर अंक समाजोन्मुखी और सद्विचारों से प्रेरित रहता है।

डॉ. सत्येंद्र पं. नेहरू के जीवन और विचारों के गहन अध्येता और प्रशंसक रहे हैं। नेहरू उनके प्रेरणा पुरुष हैं। उनके पिता पं. जुगल किशोर चतुर्वेदी राजस्थान के स्वतंत्रता सेनानियों और समाजसेवकों में एक विशेष स्थान रखते थे। वे स्वयं पं. नेहरू के अनन्य भक्त थे। डॉ. सत्येंद्र जीवनभर प्रोफेसर रहे और बहुत कुछ लिखा है। उनका लेखन बहुत स्पष्ट, किंतु मर्यादित रहा है। उनके लिए मूल्य और आदर्श सदैव सर्वोपरि रहे हैं। डॉ. सत्येंद्र ने पं. नेहरू की यह लघुकाय जीवनी बड़ी आस्था से लिखी है। मैं समझता हूं कि जवाहरलाल नेहरू के समग्र व्यक्तित्व, कृतित्व और सोच के प्रत्येक पहलू की झलक पाठक को इस छोटी-सी पुस्तक में कुछ-कुछ मिलेगा। उनका जीवन देश के उत्थान, प्रगति, लोकतंत्र को दृढ़ करने तथा विश्वशांति को समर्पित था। मुझे विश्वास है कि लेखक के इस प्रयास का सर्वसाधारण द्वारा समुचित स्वागत होगा। प्रकाशक भी प्रशंसा का पात्र है। व्यापक जनहित को ध्यान में रखते हुए उचित मूल्य में यह सुंदर प्रकाशन जनता हेतु प्रस्तुत किया गया है।

25 मई, 2012

—त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

संपादक 'साहित्य अमृत'

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुक्रमणिका

1.	बाल्यकाल और शिक्षा–दीक्षा	7
2.	स्वाधीनता संग्राम के सेनानी	16
3.	राजनीतिक मंच पर गांधीजी	20
4.	मसूरी में निर्वासन : एक वरदान	26
5.	असहयोग आंदोलन में योगदान	29
6.	नेहरूजी का जेल जीवन और जीव–जन्तु प्रेम	46
7.	विविध आयाम	55
8.	स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री	62
9.	बापू का बलिदान	66
10.	आधुनिक भारत के निर्माता	68
11.	युगपुरुष जवाहरलाल नेहरू	78
12.	नेहरूजी की 'वसीयत'	95
13.	जवाहरलाल और धर्म	98
14.	साम्प्रदायिकता और नेहरूजी की प्रतिक्रिया	103
15.	नेहरूजी और लिपि	107
16.	नेहरूजी की विदेश नीति	109
17.	भारत और अमरीका संबंध	112
18.	सोवियत संघ से संबंध	114
19.	भारत–चीन संबंध और नेहरूजी	117

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

1

बाल्यकाल और शिक्षा-दीक्षा

वन-पथ हैं प्रियतर
घोर अंधेरे और घनेरे
लेकिन वादे हैं
जो करने पूरे
और दूर जाना है मीलों
सोने से पहले
मीलों सोने से पहले

महाकवि रॉबर्ट फ्रॉस्ट की प्रेरक पंक्तियों को अपने कर्मसंकुल जीवन में संकल्प और चुनौती के रूप में अवतरित करने वाले जन-जन के आराध्य और लोकप्रिय जवाहरलाल नेहरू का जन्म 14 नवम्बर 1889 को इलाहाबाद में हुआ था। उनके पूर्वज मूलतः कश्मीर के निवासी थे, पर 18 वीं सदी के शुरू में वे दिल्ली आ गए। मुगल बादशाह फरूखसियर ने अपने शासनकाल में बसने के लिए उन्हें नहर के किनारे मकान-जागीर प्रदान की। इस प्रकार लम्बे समय तक नहर के किनारे बसने के कारण उनके नाम के साथ नेहरू जुड़ गया। वस्तुतः वे कौल कश्मीरी ब्राह्मण थे।

जवाहरलाल नेहरू की बाल्यावस्था बड़े वैभवपूर्ण आभिजात्य वातावरण में व्यतीत हुई। उनके पिता मोतीलाल नेहरू, इलाहाबाद उच्च न्यायालय के उच्च कोटि के वकील के रूप में प्रख्यात थे। वकालत से उनकी भारी आय थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उनका व्यक्तित्व बहुत प्रभावशाली था वे विचार में आधुनिक, व्यवहार में सुसंस्कृत, रुचि से परिष्कृत और वृत्ति से दानी थे। माँ स्वरूपरानी गुड़िया जैसी मुखाकृति वाली, सुडौल-सुन्दर महिला थीं। मोतीलाल जी आगन्तुकों की बड़ी आवभगत करते थे। वे बड़े वाक् कुशल और विनोदी स्वभाव के थे, अनेक भाषाओं के जानकार थे। उन्होंने कई बार विदेश यात्राएं कीं और मोटरकार तथा कई मूल्यवान चीजें वहाँ से खरीदकर लाये। विदेश यात्रा धर्मविरुद्ध समझी जाने के कारण 1899 में उन्हें बिरादरी से बहिष्कृत होना पड़ा पर वे प्रायश्चित करने को कतई प्रस्तुत न हुए। अंग्रेजी रहन-सहन और तौर-तरीके उन्हें विशेष प्रिय थे। भरे-पूरे नेहरू संयुक्त परिवार के वे प्रभावशाली मुखिया थे। अपनी रुचि के अनुरूप परिवार को उन्होंने पश्चिमी साँचे में ढालने की चेष्टा की। जवाहरलाल को पहले उन्होंने सेंट मेरी कान्वेंट में प्रवेश दिलाया पर छह महीने बाद ही वहाँ से हटाकर निजी शिक्षकों द्वारा घर पर अध्ययन की व्यवस्था की। ऐसे संपन्न ऐश्वर्यवान् परिवार में ग्यारह वर्ष तक जवाहरलाल नेहरू एकाकी संतान थे, सब के दुलारे, माता-पिता की आँखों के तारे। विजयलक्ष्मी और कृष्णा दोनों बहनों का जन्म तो कई वर्षों के अंतराल के बाद हुआ। यूं तो जवाहरलाल जी के परिवार में चचेरे भाई, अन्य रिश्तेदार वर्ग तथा अन्य बहुत लोग थे, पर उम्र में वे सब उनसे बहुत बड़े थे और स्कूल-कॉलेजों में पढ़ते थे। अपनी मन:स्थिति का चित्रण करते हुए नेहरू जी ने लिखा है– 'इस तरह इतने बड़े परिवार में मैं और भी अकेला लगता था और ज्यादातर अपने ही ख्यालों और खेलों में मुझे अकेले अपना वक्त काटना पड़ता था।'

इसी एकाकीपन ने नेहरूजी को जीवन-जगत को गहराई से समझने की अन्त:दृष्टि प्रदान की। लम्बे समय तक एक मात्र संतान के रूप में माता-पिता, संबंधियों का प्रचुर लाड़-प्यार पाने पर भी मोतीलाल जी ने जवाहरलाल को सदैव कठोर अनुशासन में रखा। एक बार जब वे पांच-छह वर्ष की अवस्था के थे उन्होंने पिता की मेज पर दो फाउण्टेन पेन रखे देखे। यह सोचकर कि पिताजी दो पेनों का क्या करेंगे, उन्होंने एक पेन जेब में रख लिया। बाद में जोरों से तलाश हुई, पेन उनके पास मिलने पर क्रुध पिता ने जवाहरलाल जी की इतनी मरम्मत की कि उनके दर्द करते बदन पर कई दिनों तक क्रीम-मरहम लगाये गये।

जवाहरलाल अपने पिता की असाधारण विशेषताओं के बड़े प्रशंसक थे और उनका बहुत सम्मान करते थे। वे उन्हें बल, साहस और बुद्धिमत्ता की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

साकार प्रतिमा मानते थे और अपना जीवनादर्श भी। मोतीलाल जी को यद्यपि अपने व्यवसाय, क्लब, अन्य आयोजनों से बहुत कम अवकाश मिल पाता था फिर भी समय निकालकर वे जवाहरलाल के साथ टेनिस-क्रिकेट खेलते थे। कभी-कभी पिता-पुत्र पतंगबाजी भी करते थे। उन्होंने जवाहरलाल की शिक्षा-दीक्षा की घर पर ही समुचित व्यवस्था की। हिन्दी, संस्कृत पढ़ाने को एक बूढ़े पण्डितजी रखे गये, पर उनसे वह विशेष ग्रहण न कर सके। जवाहरलाल जी पर सबसे अधिक प्रभाव एफ. टी. ब्रुक्स नामक शिक्षक का पड़ा। वे निष्ठावान थियोसाफिस्ट थे और डा. बेसेण्ट की अनुशंसा पर उन्हें मोतीलाल जी ने शिक्षक नियुक्त किया था। भारतीय दर्शन ने युवा ब्रुक्स को अपनी ओर विशेष आकर्षित किया। उन्होंने संस्कृत का अभ्यास कर भगवद्गीता का अनुवाद किया। ब्रुक्स धार्मिक वृत्ति के एक भावुक व्यक्ति थे। ग्यारह वर्षीय बालक जवाहरलाल के गृहणशील, अन्तर्मुखी चरित्र को उनके सम्पर्क ने बहुत रुचियाँ जागृत कीं, जो जीवनभर उनके साथ रहीं—स्वाध्याय और विज्ञान के प्रति रुझान। यद्यपि जवाहरलाल अध्ययनप्रिय थे, पर उनका अभ्यासक्रम व्यवस्थित न था। ब्रुक्स ने उनको इस दिशा में विशेष प्रोत्साहित किया। उनकी ही प्रेरणा से उन्होंने अंग्रेजी साहित्य के स्काट, डिक्न्स, थैकरे आदि प्रमुख उपन्यासकारों की कथाकृतियों, एच. जी. वेल्स की साहसपूर्ण कथाओं, मार्क ट्वेन की विनोद कथाओं और शर्लॉक होम्स की जासूसी कहानियाँ को पढ़ा। अंग्रेजी कविता के रसास्वादन की ओर भी उनकी प्रवृत्ति हुई। विज्ञान के रहस्यों से जवाहरलाल का सर्वप्रथम परिचय ब्रुक्स ने कराया। उन्होंने घर पर ही विज्ञान की प्रयोगशाला खड़ी कर ली थी जहाँ जवाहरलाल घंटों प्रारम्भिक भौतिक विज्ञान और रसायनशास्त्र के प्रयोग बड़ी दिलचस्पी से करते रहते थे। किशोर जवाहरलाल को ब्रुक्स की थियोसाफिकल विचारधारा ने बहुत प्रभावित किया। वह प्रति सप्ताह उनकी बैठक में सम्मिलित होते और चर्चाओं में भाग लेते। इसी दौरान उनका हिन्दू धर्मग्रंथ, बुद्ध के धम्मपद, यूनानी तत्त्ववेत्ताओं तथा कई दार्शनिक ग्रंथों से भी परिचय हुआ और यहीं से धर्म, परलोक आदि गूढ़ विषयों के संबंध में उनकी चिन्तन प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। तभी हिन्दू धर्म की विशिष्ट कृतियाँ, उपनिषद् और भगवद्गीता की विचारधारा में उनकी प्रवृत्ति हुई। श्रीमती बेसेण्ट जब इलाहाबाद,आयीं तो उनके मार्मिक भाषणों को सुनकर जवाहरलाल इतने भावाभिभूत हुए कि तेरह साल की आयु में उन्होंने थियोसाफिकल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
सोसायटी की सदस्य बनने का निश्चय कर लिया। मिसेज बेसेण्ट ने स्वयं इनको प्रारंभिक दीक्षा प्रदान की। थियोसाफिकल कन्वेशन में सम्मिलित होने वे बनारस गए। पर ब्रुक्स के चले जाने और आगे की शिक्षार्जन हेतु उनके इंग्लैंड प्रस्थान कर जाने तक शनैः-शनैः यह प्रभावक्षीण हो गया।

अपनी माँ और चाची से जवाहरलाल ने रामायण-महाभारत की कथाएं इन्हीं दिनों सुनीं। उन्हें बचपन में ही हिन्दू पौराणिक कथाओं और गाथाओं की काफी जानकारी हो गई थी। पिता के मुंशी मुबारक अली से जवाहरलाल 1857 के गदर की कहानियाँ बड़े चाव से सुना करते थे। लेटे-लेटे घंटों वे अलिफ लैला या दूसरे किस्से-कहानियों में खो जाया करते थे। इन प्रभावों, स्वाध्याय में गहरी रुचि, ज्ञान की तीव्र ललक, अपने परिवेश को पहचानने का उत्साह इन सबने मिलकर जवाहरलाल जी के व्यक्तित्व और जीवन को एक संपूर्णता प्रदान की।

मोतीलाल जी हालांकि प्रचलित अर्थों में धार्मिक नहीं थे पर उस वातावरण में पले बड़े होने के कारण धर्म का आदर करते थे। घर की महिलाओं की पूजा-पाठ, व्रत-त्यौहार आदि मांगलिक अनुष्ठानों में विशेष रुचि थी। अपनी माँ-चाची के साथ जवाहरलाल भी कई बार गंगा स्नान और मंदिरों में दर्शनों के लिए जाते थे। वे होली-दिवाली, ईद आदि पर्वों और दशहरा-रामलीला जैसे उत्सवों में बड़े चाव से भाग लेते। पर उन्हें सबसे ज्यादा मजा अपनी वर्षगांठ के दिन आता था। उस दिन उन्हें नई पोशाक पहनने को मिलती, भेंट में खूब उपहार आते। वे चाहते, यह दिन वर्ष में कई बार आये। मोतीलाल जी पहले इलाहाबाद शहर के पुराने भाग चौक में रहते थे। बाद में यूरोपियनों के परिवेश के कारण वे सिविल लाइन्स क्षेत्र में चले गये। जवाहरलाल जब दस वर्ष के थे, उनहेंने एक विशाल भवन खरीद लिया जिसका 'आनंद भवन' नामकरण किया गया। इसमें विशाल कमरों, विस्तीर्ण लॉन के अतिरिक्त एक तरन-ताल भी था। यहीं जवाहरलाल ने तैरने का अभ्यास किया। जवाहरलाल की पहली बहन स्वरूप का जन्म सन् 1900 में हुआ। कश्मीरियों में विवाह के बाद वधू को नया नाम देने की प्रथा है। इसीलिए वे बाद में विजयलक्ष्मी पण्डित कहलायीं। बहन के आगमन के समाचार से जवाहरलाल को स्वभावतः बहुत हर्ष हुआ, अभी तक घर में किसी भाई-बहन का अभाव उन्हें बुरी तरह खटकता था। दूसरी बहन कृष्णा का जन्म सन् 1907 में हुआ, तब वे विदेश में शिक्षा ग्रहण कर रहे थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मोतीलाल जी की मित्र-मण्डली में अधिकांशतः अंग्रेज थे। स्वयं वे भी अंग्रेजी जीवन पद्धति के समर्थक थे इसीलिए ब्रिटिश पब्लिक स्कूलों के विशेष प्रशंसक थे। अपने इकलौते पुत्र जवाहरलाल को उन्होंने वहीं शिक्षा दिलाने का निश्चय किया। संयोगवश इग्लैंड के हैरो स्कूल में उन्हें प्रवेश मिल गया। उस समय जवाहरलाल की अवस्था लगभग पंद्रह वर्ष थी। एक वर्ष पूर्व एक ऐसी युगान्तरकारी घटना घटी थी जिसने भावनाशील किशोर के अन्तर्मन को आंदोलित कर दिया–ये थी रूस-जापान की लड़ाई। इसने समूचे एशिया में राष्ट्रीयता की हिलोर पैदा कर दी और भारत के शिक्षित मध्यवर्ग के ध्यान को पूरी तरह अपनी ओर केन्द्रित कर लिया। इन्दिरा के नाम लिखे एक पत्र में बाद में उन्हेंने इस संदर्भ में अपनी प्रतिक्रिया इन शब्दों में व्यक्त की–''बीसवीं शदी के शुरू में एक घटना घटी। उसने पूरे एशिया के दिमाग पर असर डाला। वह था रूस के जार साम्राज्य की जापान द्वारा पराजय। मुझे भली प्रकार याद है कि तब युद्ध में जापान की सफलता के समाचारों से कितना उत्तेजित हो जाया करता था। उस समय मेरी अवस्था तुम्हारे बराबर थी।" स्पष्ट है किशोर जवाहरलाल में राष्ट्रीयता के भाव आरम्भ से कितने प्रबल थे, जिन्होंने शनैः-शनैः विकसित और वृद्धि कर स्वदेश ही नहीं सभी पददलित और पराधीन राष्ट्रों को विदेशी जुए से मुक्ति दिलायी। बोअर युद्ध (1899-1902) के दौरान उनकी राजनीतिक चेतना उद्बुद्ध हो गई थी। उस समय उनको पूरी हमदर्दी बोअरों के साथ थी और उत्सुकतावश वे समाचार पत्र पढ़ने लगे थे।

हैरो स्कूल में पहुँचने पर वहाँ के विदेशी वातावरण से सामंजस्य करने में जवाहरलाल को शुरू में थोड़ी कठिनाई अवश्य हुई पर धीरे-धीरे वे उस जीवन क्रम के आदी हो गए। खेल-कूदों में भरसक भाग लेने लगे। एक बार उन्होंने आधे मील की दौड़ प्रतियोगिता में विजय प्राप्त की और मील भर की दौड़ में वे तृतीय स्थान के अधिकारी हुए। 1905 के तृतीय सत्र की परीक्षा सूची में वे सर्वप्रथम उत्तीर्ण हुए। इसी प्रकार 1906 में प्रथम सत्र में उन्होंने प्रथम स्थान प्राप्त किया। जवाहरलाल में सामान्य ज्ञान की समझ अपनी अवस्था से ज्यादा थी। समकालीन घटनाचक्र पर वे अपने सहपाठियों की तुलना में ज्यादा ध्यान देते थे। किताबों, अखबारों में भी उनकी अधिक रुचि थी। राइट ब्रदर्स ने उन्हीं दिनों हवाई जहाज का आविष्कार किया था। जवाहरलाल की इसमें गहरी दिलचस्पी हो गयी। एक बार तो जोश में आकर उन्होंने अपने पिता को पत्र लिख दिया– अब वे प्रति सप्ताह हिन्दुस्तान आकर सबसे मिल सकेंगे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हैरो की इंग्लैंड के प्रतिष्ठित स्कूलों में गणना थी। यहाँ के छात्रों ने विश्व में बड़े-बड़े योद्धा व राजनीतिज्ञों के रूप में कीर्तिमान स्थापित किये। ब्रिटेन के युद्धकालीन प्रधानमंत्री और विश्व राजनीति के प्रमुख सूत्रधार विंस्टन चर्चिल हैरो स्कूल के ही भूतपूर्व विद्यार्थी थे। अन्य अंग्रेजी स्कूलों की तरह हैरो में क्रिकेट, फुटबॉल आदि खेलों में भाग लेना अनिवार्य था। जवाहरलाल ने खेलने में कभी कोताही नहीं बरती। स्कूल की कोर में वे सम्मिलित हुए और एक अच्छे सैनिक के गुण प्रदर्शित किये। छात्रावास के सुपरिंटेण्डेंट की दृष्टि में वे सभ्य दृढ़ चरित्र-समपन्न शांत और परिष्कृत रुचि के विद्यार्थी थे। स्कूल में अच्छे कार्य व्यवहार के लिए जवाहरलाल को इटली के स्वतंत्रता संघर्ष के महान सेनानी गैरी बाल्डी की जीवनकथा पुरस्कारस्वरूप मिली थी। उसके अध्ययन से उन्हें ब्रिटिश दासता से भारत को मुक्त कराने की प्रेरणा मिली। वे इंग्लैण्ड के अखबारों में भारतीय समाचार जानने को बहुत लालायित रहा करते थे। हालांकि स्वदेश के समाचार उनमें बहुत कम होते थे पर कभी-कभी उनसे यह संकेत अवश्य मिलते थे कि भारत में विदेशी साम्राज्य के विरुद्ध धीरे-धीरे विरोधी भावनाएँ बढ़ती जा रही हैं। बंग-भंग के कारण पूरे बंगाल में विरोध और विद्रोह की आँधी आयी हुई थी। महाराष्ट्र में उग्र राष्ट्रीयता के जनक बाल गंगाधर तिलक अंग्रेजी शासन और उसकी ज्यादतियों के खिलाफ वाणी और लेखनी दोनों से आग उगल रहे थे। पंजाब में लाला लाजपतराय के नेतृत्व में किसान-मज़दूर बगावत का बिगुल बजा रहे थे। युवा जवाहरलाल के मन पर स्वदेश की इन बढ़ती हुई हलचलों का तीव्रता से प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था।

लगभग दो वर्ष तक हैरो स्कूल में अध्यन करने के उपरांत जवाहरलाल जी ने कैम्ब्रिज के ट्रिनीटी कालेज में प्राकृतिक विज्ञान के विद्यार्थी के रूप में प्रवेश लिया किन्तु यहाँ भी राजनीति और साहित्य के प्रति उनकी दिलचस्पी बराबर बनी रही। कैम्ब्रिज के हिन्दुस्तानी विद्यार्थियों ने 'मजलिस' नाम से एक सभा बना रखी थी। जवाहरलाल प्रति सप्ताह उसकी बैठकों में सम्मिलित होते पर संकोचवश वहाँ कभी बोले नहीं। भारतीय राष्ट्रीय नेता जब इंग्लैण्ड जाते, जवाहरलाल उनके भाषणों को अवश्य सुनते थे। लाला लाजपतराय के विचारों से वे विशेष प्रभावित हुए। 1910 की गर्मियों में जवाहरलाल ने कैम्ब्रिज

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

से भौतिक विज्ञान विषय में ऑनर्स की उपाधि प्राप्त की। उनकी योग्यता के अनुरूप अब कार्यक्षेत्र चुनने का प्रश्न उपस्थित हुआ। एक बार उन्होंने आई. सी. एस. परीक्षा में प्रविष्ट होने का मन भी बनाया, किन्तु अन्ततः त्याग दिया और कानून का अध्ययन करने का निश्चय किया। इंग्लैण्ड में उन दिनों समाजवादी लेखकों और उनकी विचारधारा का बहुत प्रभाव था। जवाहरलाल उसमें पर्याप्त रुचि लेते थे। 1912 में उन्होंने कानूनी अध्ययन पूरा किया और 'बार एट लॉ' की उपाधि ग्रहण की। लौटने से पूर्व अवकाश के दिनों में उन्होंने यूरोप की सैर की। वे जर्मनी, पेरिस गये, नार्वे में तो पानी के तेज प्रवाह में एक बार डूबते-डूबते बचे। अध्ययनार्थ सात वर्ष का इंग्लैण्ड निवास कर 1912 में जवाहरलाल भारत वापस आ गये। इलाहाबाद के उच्च न्यायालय से उन्होंने वकालत आरम्भ की। पर यहां के नीरस जीवन से वे जल्दी ऊब गये। उन्हें यह कार्य विशेष चुनौती भरा नहीं लगा। वे 'बार टलॉ' के पुस्तकालय अथवा क्लब, जहां भी जाते, सहकर्मी वकील लोग हमेशा बस कानून या न्यायालयों की ही बातें करते रहते। जवाहरलाल के प्रखर और उद्‌बुद्ध मस्तिष्क को इन एकरस बातों से तृप्ति कैसे मिलती। आरंभ से ही उनकी राजनीति में विशेष रुचि थी। देश की विषम परिस्थितियाँ मानो उन्हें आमंत्रित कर रही थी। वे सक्रिय राजनीति की ओर अधिकाधिक बढ़ते चले गए।

1. अनेक पुस्तकों ने जवाहरलाल के ऊपर राजनैतिक प्रभाव डाला लेकिन सबसे अधिक मैरीडिथ टाउनसेण्ड की 'एशिया और यूरोप' नामक पुस्तक ने प्रभावित किया। पुस्तकें पढ़ने के बहुत शौकीन थे। हैरो स्कूल में अच्छा काम करने के लिए उन्हें जी. एम. ट्रेवेलियन की गैरीबाल्डी सम्बन्धी एक पुस्तक पुरस्कार स्वरूप मिली। यह पुस्तक उन्हें इतनी अच्छी लगी कि उस श्रृंखला की बाकी दो पुस्तकें खरीदकर पढ़ डालीं। गैरीबाल्डी की पूरी कहानी बड़ी मनोयोग से पढ़ी। समाजवाद तथा विश्वविद्यालय विषय पर जार्ज बरनार्ड शॉ का भाषण सुनकर पिता मोतीलाल को पत्र लिखा, जो इस प्रकार था–

ट्रिनिटी कॉलिज
कैम्ब्रिज

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

24 अक्टूबर, 1907

प्रिय पिताजी,

मैं अभी-अभी 'समाजवाद तथा विश्वविद्यालय' पर भाषण सुनकर लौटा हूँ। भाषण लगभग दो घंटे चला। इसी कारण मुझे कुछ देर हो गई है। वक्ता जार्ज बरनार्ड शॉ थे जिनके बारे में आप काफी सुन चुक होंगे। मेरी दिलचस्पी भाषण से ज्यादा वक्ता में थी औ मेरे जाने का कारण भी यही था। जार्ज बरनार्ड शॉ शोग्य वक्ता हैं। उन्होंने बहुत मनोरंजक तथा शिक्षाप्रद भाषण दिया।

कैम्ब्रिज में जवाहरलाल की राजनीतिक विचारधारा में प्रखरता तथा अधिक समझ आती गई। उन्होंने आयरलैंड के सिन-फिन आंदोलन की प्रशंसा करते हुए घर पर पत्र लिखा–

ट्रिनिटी कॉलिज
कैम्ब्रिज
24 अक्टूबर, 1907

प्रिय पिताजी,

क्या आपको आयरलैंड के सिन-फिन के बारे में जानकारी है? यह एक बहुत ही दिलचस्प आंदोलन है जो बहुत कुछ भारत के तथाकथित उग्रवादी आंदोलन के समान है। इसकी नीति कृपा-याचना न होकर अपने अधिकार छीन लेने की है। वे इंग्लैंड से सशस्त्र युद्ध करना नहीं चाहते। उनका उद्देश्य इंग्लैंड की उपेक्षा और बायकाट करके चुपके से आयरलैंड का प्रशासन अपने हाथ में ले लेना है। उन्हें राष्ट्रवादियों से कोई सरोकार नहीं है। वे तो हाउस ऑफ कॉमन्स का भी बायकाट कर देंगे जो मिस्टर रेड्म और उनके अनुयाइयों के लिए शोभनीय नहीं है।

जवाहरलाल कैम्ब्रिज से लिखे गए अपने पत्रों में राष्ट्रीय भावनाएँ अभिव्यक्त करते रहे। इन पत्रों में अंग्रेजी प्रशासन की घोषणाओं के प्रति अविश्वास तथा कटुता का बोध समाविष्ट रहता था।

सूरत में सम्पन्न हुए इण्डियन नेशनल कांग्रेस अधिवेशन के उत्तेजनात्मक वातावरण की कार्यवाही पढ़ने के बाद उन्होंने पिताजी को पत्र लिया। जो उनकी राजनैतिक सोच और चिंता को दर्शाता है–

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2 जनवरी, 1908

प्रिय पिताजी,

कांग्रेस का सूरत अधिवेशन हमारी आशा के ज्यादा ही उत्तेजनापूर्ण रहा। पार्टी में ऐसी फूट पड़ जाना बड़े दुख की बात है परन्तु यह फूट अवश्यम्भावी थी और इतनी जल्दी पड़ गई यह भी अच्छा ही हुआ। शायद आप सारा दोष तिलक तथा उग्रवादियों के सिर नहीं मढ़ेंगे। उन्हें भी दोषी ठहराया जा सकता है परन्तु उसकी जिम्मेदारी निश्चित रूप से नरम दल पर है। मुझे अधिवेशन में अरविंद घोष की उपस्थिति पर कोई आपत्ति नहीं परन्तु विरोध के बावजूद, उन्हें जिस ढंग से अध्यक्ष घोषित किया गया था, उसे किसी भी दृष्टि से उचित नहीं कहा जा सकता। संभवतः नरम दल वाले देश के किसी भाग-विशेष का प्रतिनिधित्व करते हों, परन्तु लगता है कि यह सोचते हैं या चाहते हैं कि लोग यह विश्वास करें कि वह स्वाभाविक रूप से नेता हैं तथा पूरे देश का प्रतिनिधित्व क़रते हैं। उनमें से कुछ अपनी असहमति प्रकट करने वालों की जिस प्रकार उपेक्षा करते हैं वह यदि हास्यास्पद नहीं तो परेशान करने वाली अवश्य है। मुझे पूरा यकीन है कि अगले कुछ वर्षों में कोई भी तथाकथित नरम दल वाला बचा नहीं रह पाएगा। वह इस समय जो तरीके अपना रहे हैं उनके कारण उनकी पार्टी का बहुत शीघ्र सत्यानाश हो जाएगा।

सस्नेह, आपका बेटा
जवाहरलाल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2

स्वाधीनता संग्राम के सेनानी

1912 के भारत की राजनीतिक स्थिति बड़ी अस्थिर और निष्क्रिय थी। नेतागण कांग्रेस के नरम और गरम दलों में बंटे हुए थे। गरम दल के नेता अंग्रेजी सरकार के विरोध में उग्र कार्रवाई करने के पक्ष में थे जबकि नरम दल के नेता उदारपंथी थे, उनकी नीति समझौतावादी थी। उग्रपंथियों के नेता लोकमान्य तिलक उस समय जेल में बंद थे। ऐसे माहौल में बांकीपुर में 1912 में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। जवाहरलाल प्रतिनिधि के रूप में उसमें सम्मिलित हुए। पर तत्कालीन कांग्रेस की रीति-नीति उनमें विशेष उत्साह का संचार न कर सकी। पर वे कांग्रेस कार्यक्रमों में निरंतर भाग लेते रहे। सार्वजनिक सभाओं में बोलने में अभी उन्हें झिझक मालूम होती थी। 1916 की लखनऊ कांग्रेस में जवाहरलाल जी पहली बार महात्मा गांधी के सम्पर्क में आये। दक्षिण अफ्रिका में सत्याग्रह के माध्यम से भेदभाव और अन्याय के विरोध में उन्होंने जो अहिंसक लड़ाई लड़ी थी उसके कारण जवाहरलाल के मन में उनके प्रति प्रशंसा के भाव विद्यमान थे। देश के आगामी तीव्र राजनीतिक घटनाचक्र के दौरान दोनों अधिकाधिक निकट आए और नेहरूजी की कार्यक्षमता के प्रति गांधीजी की आस्था तथा गांधीजी की महानता के प्रति नेहरूजी की श्रद्धा अधिकाधिक घनी होती चली गई।

1916 में बसंत पंचमी के दिन 17 वर्षीय कमला से जवाहरलाल नेहरू का विवाह संपन्न हुआ। कमला देह से दुबली और संकोचशील वृत्ति की थी। पर स्वाधीनता संघर्ष में वे पति की सच्ची सहगामिनी सिद्ध हुई।

जवाहर का प्रकृति-प्रेम—विवाह के पश्चात जवाहरलाल और कमला

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
कश्मीर घूमने गए। गर्मी के कुछ महीने उन्होंने कश्मीर में ही बिताए। पर्यटन और पहाड़ी प्रदेशों में प्रकृति से साक्षात्कार करना उन्हें बहुत पसंद था। परिवार को श्रीनगर की घाटी में छोड़कर अपने चचेरे भाई के साथ कई हफ्ते तक पहाड़ों में घूमते रहे और लद्दाख रोड तक आगे बढ़ते चले गए। उस रोमांचकारी और अविस्मरणीय घटना का वर्णन करते हुए उन्होंने 'मेरी कहानी' में लिखा है–

"संसार के उच्च प्रदेश में, उन सँकरी और निर्जन घाटियों में, जो तिब्बत के मैदान की तरफ ले जाती हैं, घूमने का यह मेरा पहला अनुभव था। जोजी-ला घाटी की चोटी से हमने देखा तो हमारी एक तरफ नीचे की ओर पहाड़ियों की घनी हरियाली थी, और दूसरी तरफ खाली कड़ी चट्टान। हम उस घाटी की सँकरी तह के ऊपर चढ़ते चले गए, जिसके दोनों ओर पहाड़ हैं। एक तरफ बर्फ से ढकी हुई चोटियाँ चमक रही थीं, और उनमें से छोटे-छोटे ग्लेशियर-हिमसरोवर हमसे मिलने के लिए नीचे को रेंग रहे थे। हवा ठंड और कटीली थी, लेकिन दिन में धूप अच्छी पड़ती थी और हवा इतनी साफ थी कि अक्सर हमें चीजों की दूरी के बारे में भ्रम हो जाता था। वे दरअसल जितनी दूर होती थी, हम उन्हें उससे बहुत कम दूर समझते थे। धीरे-धीरे सूनापन बढ़ता गया, पेड़ों और वनस्पतियों तक ने हमारा साथ छोड़ दिया–सिर्फ नंगी चट्टान और बर्फ और पाला और कभी-कभी कुछ सुंदर फूल रह गए। फिर भी प्रकृति के इन जंगली और सुनसान निवासों में मुझे अजीब संतोष मिला। मेरे उत्साह और उमंग का ठिकाना न था।

इस यात्रा में मुझे एक बड़ा दिल को कँपा देने वाला अनुभव हुआ। जोजी-ला घाटी से आगे सफर करते हुए एक जगह, जो मेरे खयाल में यातायन कहलाती थी, हमसे कहा गया कि अमरनाथ की गुफा यहाँ से सिर्फ आठ मील दूर है। यह ठीक था कि बीच में बुरी तरह हिम से ढका हुआ सरोवर पड़ता था, जिसे पार करना था। लेकिन उससे क्या? आठ मील होते ही क्या है? जोश खूब था और तजुरबे नदारद! हमने अपने डेरे-तम्बू, जो ग्यारह पाँच सौ फुट की ऊँचाई पर थे, छोड़ दिए और एक छोटे-से दल के साथ पहाड़ पर चढ़ने लगे। रास्ता दिखाने के लिए हमारे साथ यहाँ का एक गड़रिया था।

हम लोगों ने रस्सियों के सहारे कई बर्फीली नदियों को पार किया। हमारी मुश्किलें बढ़ती गईं तथा साँस लेने में भी कठिनाई मालूम होने लगी। हमारे कुछ सामान उठाने वालों के मुँह से खून निकलने लगा, हालाँकि उन पर बहुत बोझ नहीं था। इधर बरफ पड़ने लगी और बर्फीली नदियाँ भयानक रूप से रपटीली हो गईं। हम लोग बुरी तरह थक गए और एक-एक कदम आगे बढ़ाने के लिए बहुत कोशिश करनी पड़ती थी। लेकिन फिर भी यह मूर्खता हम करते ही गए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

हमने अपना खेमा सुबह चार बजे छोड़ा था और बारह घंटे लगातार चढ़ते रहने के बाद एक सुविशाल हिम-सरोवर देखने का पुरस्कार मिला। यह दृश्य बहुत ही सुंदर था! उसके चारों ओर बर्फ से ढकी हुई पर्वत-चोटियाँ थीं, मानो देवताओं का मुकुट अथवा अर्द्ध चंद्र हो। परंतु ताजा बर्फ और कुहरे ने शीघ्र ही इस दृश्य को हमारी आँखों से ओझल कर दिया।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पता नहीं कि हम कितनी ऊँचाई पर थे, लेकिन मेरा खयाल है कि हम लोग कोई पंद्रह-सोलह हजार फुट की ऊँचाई पर जरूर होंगे, क्योंकि हम अमरनाथ की गुफा से बहुत ऊँचे थे। अब हमें इस हिमसरोवर को, जो संभवत: आधा मील लम्बा होगा, पार करके दूसरी तरफ नीचे गुफा को जाना था। हम लोगों ने सोचा कि चढ़ाई खत्म होने से हमारी मुश्किलें भी खत्म हो जायेंगी, इसलिए बहुत थके होने पर भी हम लोगों ने, हँसते हुए यात्रा की यह मंजिल भी तय करनी शुरू की। इसमें बड़ा धोखा था, क्योंकि वहाँ दरारें बहुत-सी थीं और ताला गिरने वाली बर्फ खतरनाक दरारों को ढक देती थी। इस नई बर्फ ने मेरा करीब-करीब खात्मा कर दिया होता, क्योंकि ज्योंही मैंने उसके ऊपर पैर रखा वह नीचे को खिसक गई और मैं धम्म् से मुँह बाये हुए एक विशाल दरार में जा गिरा। यह दरार बहुत बड़ी थी और कोई भी चीज उसमें बिलकुल नीचे पहुँचकर हजारों वर्ष बाद तक भूगर्भशास्त्रियों की खोज के लिए इत्मीनान के साथ सुरक्षित रह सकती थी। लेकन मेरे हाथ से रस्सी नहीं छूटी और मैं दरार की बाजू को पकड़े रहा और ऊपर खींच लिया गया। इस घटना से हम लोगों के होश तो ढीले हो गए थे, फिर भी हम लोग आगे चलते ही गए। लेकिन दरारों की तादाद और उनकी चौड़ाई आगे जाकर और भी बढ़ गई। इनमें से कुछ को पार करने के कई साधन भी हमारे पास न थे, इसलिए अंत में हम लोग थके-माँदे हताश हो लौट आए और इस प्रकार अमरनाथ क गुफा अनदेखी ही रह गई।

कश्मीर के पहाड़ों तथा ऊँची-ऊँची घाटियों ने मुझे ऐसा मुग्ध कर लिया कि मैंने एक बार फिर वहाँ जाने का संकल्प किया। मैंने कई योजनाएँ सोचीं, और कई यात्राओं के मनसूबे बाँधे और उनमें से एक के तो खयाल ही से मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। वह भी तिब्बत की अलौकिक झील मानसरोवर और उसके पास का हिमाच्छादित कैलाश। यह अठारह बरस पहले की बात है और मैं आज भी कैलाश तथा मानसरोवर से उतना दूर हूँ जितना पहले था। मैं फिर कश्मीर न जा सका, हालाँकि वहाँ जाने की मेरी बहुत इच्छा रही। लेकिन मैं राजनीतिक और सार्वजनिक कामों के जंजाल में अधिकाधिक उलझता गया। पहाड़ों पर चढ़ने या समुद्रों को पार करने के बदले मेरी सैलानी तबीयत को जेलों में जाकर ही

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE 2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
संतोष करना पड़ा। लेकिन अभी भी मैं वहां जाने के मनसूबे गढ़ा करता हूँ, क्योंकि वह तो एक ऐसे आनंद की बात है जिसे कोई जेल में भी नहीं रोक सकता। और इसके अलावा जेलों में से स्कीमें सोचने के सिवा और कोई करे भी क्या? अत: मैं उस दिन का स्वप्न देख रहा हूँ जब मैं हिमालय पर चढ़कर उसे पार करूँगा और उस झील तथा कैलाश के दर्शन करके अपना मनोरथ पूरा करूँगा। परंतु इस बीच में जीवन की घड़ियाँ दौड़ती जा रही हैं, जवानी अधेड़पन में बदल रही है और कभी-कभी मैं यह भी सोचता हूँ कि मैं इतना बूढ़ा हो जाऊँगा कि कैलाश और मानसरोवर जा ही न सकूँगा। परंतु यद्यपि यात्रा का अंत न भी दिखाई दे, तब भी यात्रा करने मं हमेशा आनंद ही आता है।''

मेरे अन्तर्पट पर इन गिरि शृंगों की पड़ती छाया,
सांध्य गुलाबों से रंजित है जिनकी भीषण दुर्गमता;
फिर भी मेरे प्राण मुग्ध पलकों पर बैठे अकुलाते,
शांत शुभ्र हिम के ये प्यासे, है कैसी पागल ममता।
(वाल्तर दि ला मेयर के एक पद्य का भावानुवाद)

आनन्द भवन का जीवन अभी वैभव सम्पन्न और सुविधापूर्ण था। पर जवाहरलाल और मोतीलाल नेहरू दोनों के राजनीतिक आंदोलनों में तेजी से बढ़ते झुकाव के कारण वहाँ की व्यवस्था और जीवनशैली पर प्रभाव लक्षित होने लगा। इन्दिरा का जन्म यहाँ नवम्बर 1917 में हुआ।

सच्चे भारत का निकट से परिचय प्राप्त करने के लिए जवाहरलाल नेहरू ने उत्तर प्रदेश के देहाती इलाकों का दौरा किया। वहाँ पहली बार उन्हें देश की भूखी-नंगी अन्याय पीड़ित जनता से साक्षात्कार हुआ। उन्हीं दिनों घटित पंजाब के जलियांवाला बाग के लोमहर्षक हत्याकाण्ड ने जवाहरलाल नेहरू को बहुत मर्माहत किया। वे अंग्रेजी शासन के अत्याचारों के विरुद्ध संघर्ष में अधिकाधिक सक्रिय होते चले गये। प्रिंस आफ वेल्स की भारत यात्रा के दौरान बहिष्कार कार्यक्रम में भाग लेने के कारण 1911 में पहली बार वे गिरफ्तार हुए और पांच माह जेल में रहे। फिर तो दिन-रात संघर्ष, सत्याग्रह आंदोलनों का नेतृत्व करना और जेल जाना उनके जीवन की सामान्य घटना हो गई।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3

राजनीतिक मंच पर गांधीजी

समय का चक्र बढ़ता जा रहा था। नवंबर 1918 में प्रथम विश्वयुद्ध समाप्त हो गया। इस युद्ध में भारतीयों की इच्छा के विरुद्ध उन्हें युद्ध में झोंक दिया गया। युद्ध के नाम पर चंदा-वसूली से गरीब जनता का खूब आर्थिक शोषण हुआ। जबरन भर्ती करके नवयुवकों को युद्ध के मोर्चों पर भेज दिया गया। आँकड़ों के अनुसार युद्ध लड़ने के लिए साढ़े नौ लाख से अधिक युवक भर्ती किए गए जिनमें से तीस हजार मारे गए, साठ हजार घायल हुए, और सात हजार बंदी बना लिए गए और पाँच हजार लापता हुए। यह देश की परतंत्रता की परवशता थी।

1919 की वसंत ऋतु में अंग्रेजी सरकार ने कार्यपालिका को विशेष अधिकार देने के उद्देश्य से नया कानून रौलट एक्ट बनाने का निश्चय किया। प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति के बाद भारतीय अंग्रेजों से उदार व्यवहार की आशा कर रह थे क्योंकि युद्ध के समय भारतीयों ने उनका पूरा साथ दिया था। लेकिन इस नए कानून ने उनकी आशाओं पर वज्रपात कर दिया। भारतीय सदस्यों के विरोध के बावजूद यह कानून विधानसभा में स्वीकृत हो गया। इससे वातावरण अशांत हो गया। जिसके चिह्न जनता में, खासकर किसानों में, दिखाई पड़ने लगे। विश्वयुद्ध में पंजाब के देहाती क्षेत्रों से जबरन रंगरूट भरती करने की बातें लोग अभी तक भूल नहीं पाए थे और कामागाटामारू वाले तथा दूसरे लोगों पर षड्यंत्र के मुकदमे चलाकर जो दमन किया गया था, उसकी याद भी अभी तक लोग भूल नहीं पाए थे। इन नए कानूनों, रौलट बिलों के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
कारण क़ानूनी कार्रवाई के बिना भी गिरफ्तार करने और सजा देने की धाराएँ रखी गई थीं। हिन्दुस्तानी जनता औ सभी दलों ने एक स्वर से इसका विरोध किया। इसी समय राजनैतिक क्षितिज पर गांधीजी की उपस्थिति हुई।

1919 के प्रारंभ में गांधीजी रोग-शय्या से उठे थे। उन्होंने इस नये बिल को कानून न बनने देने की वायसराय से प्रार्थना भी की थी। लेकिन गांधीजी की अपील पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। मजबूर होकर अस्वस्थ होने पर भी गांधीजी को नेतृत्व करना पड़ा जो उनके जीवन का प्रथम भातरव्यापी आंदोलन था। उन्होंने सत्याग्रह सभा का प्रारंभ करके सदस्यों को रौलट एक्ट को न मानने की प्रतिज्ञा करवाई। अनुयाइयों ने सत्य पर आरूढ़ रहते हुए किसी भी व्यक्ति, जीवन अथवा सम्पत्ति को हानि न पहुँचाने की शपथ ली और उसका अनुकरण भी किया।

गांधीजी की इस अपील से जवाहरलाल बहुत प्रभावित हुए लेकिन मोतीलाल ने गांधीजी के इस रास्ते पर चलने का कड़ा विरोध किया। वह सविनय अवज्ञा आंदोलन के पक्ष में नहीं थे। उनका विचार था का कानून की अवहेलना करके कुछ लोग जेल तो चले जायेंगे लेकिन इसका सरकार के प्रशासनिक ढाँचे पर कोई असर नहीं पड़ेगा। जवाहरलाल नेहरू के जेल जाने पर उनकी माँ, वृद्ध पिता के पेशे और युवा पत्नी पर प्रतिकुल प्रभाव पड़ेगा। यह गांधीजी का नया राजनैतिक प्रवेश था, इसलिए इस प्रकार की भ्रांतियाँ स्वाभाविक थीं। जवाहरलाल राजनैतिक आस्थाओं और परिवार के स्नेह बंधन के मध्य उलझकर विवश से हो गए। मोतीलाल भी समझ रहे थे कि बहुत दिनों तक पैतृक अधिकार का प्रयोग करके जवाहरलाल के राजनैतिक कदम पर अंकुश नहीं लगाया जा सकता। अतः उन्होंने गुप्त रूप से फर्श पर सोना शुरू पर दिया ताकि वह स्वयं अनुभव कर सकें कि जेल में उनके बेटे पर क्या बीतेगी?

मोतीलाल ने गांधीजी से इस संबंध में सहायता माँगी। गांधीजी ने इलाहाबाद जाकर जवाहरलाल को कुछ समय के लिए धैर्य करने को कहा, जिससे मोतीलाल की परेशानियाँ न बढ़ें। 13 अप्रैल, 1919 में अमृतसर में जलियाँवाला बाग का भयंकर गोलीकांड हुआ और पंजाब में मार्शल-लॉ लागू कर दिया गया। इस अप्रत्याशित घटना ने मोतीलाल, जवाहरलाल और गांधीजी को एक राजनैतिक मंच पर लाकर खड़ा कर दिया।

पंजाब को अन्य प्रांतों और देश के अन्य हिस्से से काटकर रख दिया गया। जिससे बाहरी दुनिया को उसकी खबर न पहुँचे और न ही वहाँ बाहरी दुनिया की कोई खबर पता चले। वहाँ आने-जाने पर प्रतिबंध लगा दिया गया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

13 अप्रैल को वैशाखी के दिन लगभग बीस हजार स्त्री, पुरुष, बच्चे बाग में इकट्ठे होकर शांतिपूर्ण ढंग से विरोध प्रदर्शन कर रहे थे। लाला हंसराज जिस समय भाषण दे रहे थे तभी जनरल डायर अपने सैनिकों को लेकर वहाँ आ पहुँचा। बाग में प्रवेश और निकास का एक ही मार्ग था। जनता बेपरवाह ध्यानमग्न होकर भाषण सुन रही थी कि उस क्रूर हत्यारे जनरल ने जनता पर गोलियाँ बरसाने के आदेश दे दिये। देखते-ही-देखते सैकड़ों लोग शहीद हो गए और हजारों घायल हो गए। जलियाँवाला बाग हृदय-विदारक चीखों से गूँज उठा।

इस हत्याकांड से सारे देश में रोष फैल गया। लेकिन गांधीजी ने किसी को हिंसक कार्रवाई नहीं करने दी। पंजाब से मार्शल-लॉ हटने के बाद कांग्रेस ने एक जाँच कमेटी अमृतसर भेजी। इस कमेठी में थे महात्मा गांधी, देशबंधु, मोतीलाल नेहरू, अब्बास तैयबजी, सन्तानम तथा फजलुल हक। जवाहरलाल भी देशबंधु दास के सहायक के रूप में इस कमेटी मे सम्मिलित थे। जवाहरलाल नेहरू ने जलियाँवाला बाग तथा वह सँकरी गली देखी, जिसमें लोगों को पेट के बल रेंगने के लिए मजबूर किया गया था। बाग में जाने-आने का एक ही रास्ता होने के कारण लोग गोली चलने पर वहीं मरने को मजबूर थे। कुछ तो जान बचाने के लिए कुएँ में कूद गये और मर गए। कुआँ लाशों के ढेर से पट गया था। बाग के केवल एक तरफ कोई सौ फीट के लगभग कोई मकान न था, बस पाँच ऊँची दीवार थी। गोलियाँ तड़ातड़ चल रही थीं और लोग मर रहे थे। जब लोगों को कोई रास्ता नहीं सूझा तो सैकड़ों-हजारों आदमी उस दीवार की ओर झपटे और उस पर चढ़ने का प्रयास करने लगे। तब उस दीवार को निशाना बनाकर गोलिया चलाई गईं जिससे कि कोई उस पर चढ़कर भाग न सके। जैसाकि गोलियों के निशानों को दीवार पर जाँच कमेटी ने पाया। जब गोलियाँ चलना बंद हुईं तो मुर्दों और घायलों के ढेर दीवार के दोनों ओर पड़े हुए थे।

उसी वर्ष 1919 में अंत में जवाहरलाल नेहरू अमृतसर से दिल्ली के लिए रात की गाड़ी से लौट रहे थे। उस रात उन्होंने जो कुछ देखा और सुना, उन्हीं के शब्दों में, "जिस डिब्बे में मैं चढ़ा उसकी तमाम जगहें भरी हुई थीं, सिर्फ ऊपर एक 'बर्थ' खाली थी। सब मुसाफिर सो रहे थे। मैंने वह खाली बर्थ ले ली। दूसरे दिन सुबह मुझे मालम हुआ कि वे तमाम मुसाफिर फौजी अफसर थे। वे वापस में जोर-जोर से बातें कर रहे थे जो मेरे कानों तक आ ही पहुँचती थीं। उनमें से एक बड़ी तेजी के साथ, मगर विजय के घमण्ड में, बोल रहा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
था और फौरन ही मैं समझ गया कि यह वही जलियाँवाला बाग के 'बहादुर' मि. डायर हैं। वह अपने अमृतसर के अनुभव सुना रहा था। उसने बताया कि कैसे सारा शहर उसकी दया के भरोसे था। उसने सोचा इस बार इस सारे बागी शहर को खाक में मिला दूँ। मगर कहा, फिर मुझे रहम आ गया और मैं रुक गया। हण्टर कमेटी में अपना बयान देकर वह लाहौर से वापिस आ रहा था। उसकी बातचीत और संगदिली को देखकर मेरे दिल को बड़ा धक्का लगा–वह दिल्ली स्टेशन पर उतरा तो गहरी गुलाबी धारियों वाला पायजामा और ड्रेसिंग गाउन पहने था।''

पंजाब–जाँच के समय में जवाहरलाल को गांधीजी को समझने का अवसर मिला। उनकी दूरदृष्टि तथा राजनैतिक अन्तदृष्टि में जवाहरलाल की श्रद्धा और विश्वास ब्रढ़ते चले गए।

अमृतसर कांग्रेस पहली गांधी कांग्रेस बनी। लोकमान्य 'तिलक' ने इस अमृतसर कांग्रेस में उपस्थित होकर उसकी कार्यवाई में प्रमुख रूप से भाग लिया था। अली बंधु तभी नजरबंदी से छूटकर इसमें भाग लेने के लिए पहुँचे। इसमें भाग लेने वाले अधिकांश प्रतिनिधि गांधीजी के नेतृत्व की ओर आशा की नजरों से देख रहे थे। हिन्दुस्तान के राजनैतिक मंच पर 'महात्मा गांधी की जय' की आवाज सुनाई देने लगी थी। राष्ट्रीय आंदोलन एक नया रूप धारण कर रहा था और नई नीतियाँ बनाई जा रही थीं।

मौलाना मुहम्मद अली खिलाफत डेपुटेशन में यूरोप चले गए। दूसरी तरफ हिन्दुस्तान में खिलाफत कमेटी दिन–पर–दिन गांधीजी के प्रभाव में आने लगी। दिल्ली में जनवरी 1920 में खिलाफत के नेताओं, मौलवियों और उलेमाओं की प्रारंभिक मीटिंग हुई। खिलाफत डेपुटेशन गांधीजी के साथ वायसराय से मिलने जाने वाला था। गांधीजी के दिल्ली पहुँचने के पहले ही प्रार्थना–पत्र का मसौदा परम्परानुसार वायसराय को भेजा जा चुका था, जो बाद में गांधीजी को पसंद नहीं आया। वे प्रार्थना–पत्र की गोल–गोल भाषा में खुश नहीं थे। इसमे मुसलमानों की माँगों को स्पष्ट रूप से नहीं रखा गया था। गांधीजी ने कहा, ''इससे न तो बादशाह के साथ इंसाफ होता है और न ब्रिटिश सरकार के साथ, न लोगों के साथ, न अपने साथ। उन्हें बढ़ी–चढ़ी माँगें पेश नहीं करनी चाहिए, जिन पर वे अड़ना न चाहते हों। मगर छोटी–से–छोटी माँग बिलकुल साफ शब्दों में हो, ज़िसमें किसी प्रकार का शक–शुबहा न हो फिर मरने तक उस पर डटे रहो। अगर आप लोग सचमुच कुछ करना चाहते हो यही सच्चा और सही राजमार्ग है।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गांधीजी की यह दलील हिन्दुस्तान के राजनैतिक क्षेत्र में एक नई चीज थी। 1920 में राजनैतिक आंदोलन और खिलाफत आंदोलन गांधीजी के नेतृत्व में शुरू हो गए। इस आंदोलन मे जवाहरलाल के साथ मोतीलाल भी वकालत छोड़कर शामिल हो गए। इस असहयोग आंदोलन में स्कूलों, अदालतों, विधान मण्डलों तथा विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार सम्मिलित था।

गांधीजी ने क्रांतिकारी अगुआ के रूप में एक भाषण दिया जो एक डिक्टेटर के रूप में था जिसमें विनम्रता तो थी किंतु हीरे की तरह स्पष्टता और कठोरता थी। उनकी भाषा मनोरंजक-मीठी किन्तु कठोर निश्चय तथा सच्चाई से परिपूर्ण थी। इसका वर्णन करते हुए जवाहरलाल ने 'मेरी कहानी' में लिखा है—गांधीजी की आँखों में मृदुलता और शांति थी, मगर उनमें से जबरदस्त कार्य-शक्ति और दृढ़ निश्चय की लौ निकल रही थी। उन्होंने कहा-"यह मुकाबला बड़ा जबरदस्त होगा और सामना भी बड़े जबरदस्त से है। अगर आप लड़ना ही चाहते हैं तो आपको अपना सब-कुछ बर्बाद करने के लिए तैयार हो जाना चाहिए और लड़ाई का एलान कर दिया जाता है तो फौजी कानून का दौर हो जाता है। हमारे अहिंसात्मक युद्ध में से भी हमारी विजय होगी। आपको यह हक है कि आप मुझे ठोकर मारकर निकाल दें, मेरा सिर उतार लें, और जब कभी और जैसी चाहें सजा दे दें, लेकिन जब तक आप मुझे अपना अगुआ मानते हैं, तब तक आपको मेरी शर्तों का पाबंद जरूर करना होगा, आपको डिक्टेटर की राय पर चलना होगा और फौजी कानून के अनुशासन में चलना होगा। लेकिन डिक्टेटर बना रहना बिल्कुल आपके सद्भाव, आपकी मंजूरी और आपके सहयोग पर अवलम्बित रहेगा। ज्योंही आप मुझसे उकता जाएँ, त्योंही आप मुझे उठाकर फेंक दें, पैरों तले रौंद दें और मैं चूँ तक न करूँगा।"

इस दृढ संकल्प, फौजी मिसाल और हार्दिक सच्चाई से लोगों में नया जोश भर गया और श्रोताओं के मन में सरसराहट फैल गई। इस प्रकार मुस्लिम लीग और कमेटी सहित सभी लोगों ने जोश और उत्साह के साथ लड़ाई के लिए कमजोर कस ली। युवा नेहरू पर तो गांधीजी की विशेष प्रभाव पड़ा। जवाहरलाल ने स्वयं कहा, ''वह उनकी सीधी गेंद से आउट हो गया।''

आनंद भवन में उन दिनों तक पश्चिमी तथा भारतीय दोनों प्रकार के भोजन बनते थे, अब केवल एक ही प्रकार का भारतीय भोजन बनने लगा। तहखाने में शराब रखना बंद कर दिया गया। सेवा के लिए रखे नौकरों की संख्या में कमी कर दी गई। विदेशी सामान की होली जलाकर हमेशा के लिए तिलांजलि दे दी गई।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नेहरू परिवार के लिए गांधीजी जादूगर बन गये और उन साबरमती के संत से सांत्वना तथा सहयोग प्राप्त करना सीख लिया। जवाहरलाल गांधीजी से राजनीति के साथ-साथ भावनात्मक बंधन में भी बँध गए। जवाहरलाल के शब्दों में, ''मैं इस आंदोलन में कूद पड़ा। मैंने इसके परिणाम की चिंता नहीं की।'' वे गांधीजी की तरह सादा जीवन व्यतीत करने लगे। सिगरेट पीना छोड़ दिया। शाकाहारी तथा भारतीय भोजन प्रारंभ कर दिया। 'गीता' का भी नियमित पाठ करने लगे। नेहरूजी ने स्वीकार किया, ''दार्शनिक या धार्मिक दृष्टि से नहीं बल्कि इसलिए कि इसकी बहुतेरी बातों का मुझ पर गहरा प्रभाव पड़ा।'' उन्होंने तत्कालीन यू.पी. सरकार के मुख्य सचिव्र को लिखा, ''मेरे लिए 'असहयोग' एक पवित्र वस्तु है जो सत्य तथा अहिंसा पर आधारित है। एक नये धर्म-परिवर्तित व्यक्ति के समान जवाहरलाल भी इस आंदोलन में मन और आत्मा से जुड़ गए। राष्ट्रीय राजनीति में वे इतने गहरे उतरे कि बाकी सब चीजें भुला बैठे। उन्होंने अपनी आत्मकथा मे लिखा कि, ''मेरी सभी अन्य सहयोगियों, पुराने मित्रों, पुस्तकों, यहाँ तक कि समाचार-पत्रों से भी कोई सरोकार नहीं रहा, केवल उन्हीं से वास्ता रहा जो मेरे काम से समबद्ध थे... अपना परिवार, अपनी पत्नी तथा अपनी बेटी भी प्रायः मैं भूल-सा गया।''

1 अगस्त का दिन, गांधीजी ने असहयोग प्रारंभ करने का निश्चय किया था लेकिन दुर्भाग्यवश 1 अगस्त, 1920 को ही लोकमान्य 'तिलक' का मुंबई में निधन हो गया। उस महान नेता की अंतिम यात्रा में गांधीजी, जवाहरलाल नेहरू सहित अनेक नेता तथा भारी जनसमूह सम्मिलित था। सारी मुम्बई ही उस मान्य और प्रभावशाली नेता को श्रद्धांजलि देने के लिए उमड़ पड़ी थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

4

मसूरी से निर्वासन : एक वरदान

जवाहरलाल की पहचान अब कांग्रेस के सक्रिय कार्यकर्त्ता के रूप में होने लगी थी। सरकार बड़े नेताओं की गतिविधियों पर नजर रखती थी, उसी प्रकार जवाहरलाल को भी अब संदेह की दृष्टि से देखने लगी थी। इसका प्रमाण है मसूरी की घटना, जब जवाहरलाल को मसूरी छोड़ने के लिए बाध्य होना पड़ा। मसूरी उत्तर भारत का एक प्रसिद्ध पर्वतीय स्थल है जहाँ का प्राकृतिक वातावरण स्वच्छ स्वास्थ्य के लिए बहुत उत्तम माना जाता है।

जवाहरलाल की माँ स्वरूप रानी और पत्नी कमला दोनों ही अस्वस्थ थीं। अत: स्वास्थ लाभ कराने के लिए वह उन दोनों को लेकर मई 1920 में मसूरी गये। वहाँ वे सेवास होटल में ठहरे। उसी होटल में अफगान प्रतिनिधि मंडल भी ठहरा हुआ था जहाँ अफगान प्रतिनिधियों और ब्रिटिश राज प्रतिनितियों के बीच सुलह की बातें हो रही थीं। उस होटल में नेहरूजी किसी के सम्पर्क में नहीं थे और होटल में एक तरफ अपने क्रियाकलापों में ही व्यस्त थे। वह प्रतिनिधि मंडल के किसी सदस्य को पहचानते तक नहीं थे। एक दिन पुलिस सुपरिंटेण्डेण्ट ने आकर स्थानीय सरकार का पत्र दिखाया जिसमें वायदा लेने का आदेश था कि जवाहरलाल अफगान प्रतिनिधि मण्डल से कोई वास्ता न रखें। जबकि सुपरिंटेण्डेण्ट भी जानता था कि जवाहरलाल का इस प्रतिनिधि मण्डल से कोई वास्ता नहीं है।

जवाहरलाल को उस प्रतिनिधि मण्डल में कोई रुचि नहीं थी फिर भी वह ऐसा कोई वायदा देना नहीं चाहते थे। परिणामस्वरूप 24 घंटे के अन्दर मसूरी, यहाँ तक कि देहरादून जिले की सीमा से बाहर जाने का हुक्म मिला। वह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बीमार माँ और पत्नी को छोड़कर जाना तो नहीं चाहते थे लेकिन उस समय हुक्म तोड़ना भी उन्होंने ठीक नहीं समझा। जवाहरलाल मसूरी छोड़कर चले गये। बाद में उनकी माँ की हालत ज्यादा खराब हो गई। कुछ समय बाद ही जवाहरलाल और मोतीलाल मसूरी आ गये। लेकिन उनके मसूरी पहुँचने से पहले ही हुक्म के रद्द होने का तार मिल गया।

जब वे लोग मसूरी होटल पहुँचे तो उन्होंने देखा कि अफगान प्रतिनिधियों में से एक व्यक्ति जवाहरलाल की बेटी को अपनी गोद में लिए हुए था। वह व्यक्ति अफगानिस्तान का एक मिनिस्टर और प्रतिनिधि मण्डल का सदस्य था। दरअसल उस प्रतिनिधि मण्डल को उनके मसूरी से निकले जाने की घटना अखबारों के माध्यम से मिली। फिर तो उन लोगों की दिलचस्पी इतनी बढ़ गई कि प्रतिनिधि मण्डल के प्रधान रोजाना फूलों और फलों की एक डलिया जवाहरलाल की माँ को भेजते। इन दोनों के पहुँचने पर उन लोगों ने उन्हें अफगानिस्तान आने का निमंत्रण भी दिया।

जवाहरलाल को मसूरी से निकाल दिए जाने पर इलाहाबाद रहना पड़ा। इन दो हफ्तों में वह किसानों के सम्पर्क में आये और उन पर होने वाले अत्याचार और दुख-दर्दों को समझा और महसूस किया। उन्होंने अपने मन में विचार किया कि यदि मसूरी से निकाला न जाता तो किसानों की समस्याओं और किसानों के सम्पर्क में कैसे आ पाता! वहाँ से निकाला जाना एक प्रकार से वरदान सिद्ध हुआ। एक मजबूत राजनीतिक सोच का जन्म हुआ। उस समय जून 1920 में प्रतापगढ़ देहात से चलकर लगभग 200 किसान इलाहाबाद आये थे जो अपने कष्टों और तकलीफों की ओर विशेष राजनीतिज्ञों का ध्यान आकर्षित करना चाहते थे। जवाहरलाल कुछ साथियों के साथ यमुना के घाट पर उनसे मिलने गये। वहाँ उन्होंने ताल्लुकेदार और जमीदारों के जुल्मों और अमानवीय व्यवहार की क्रूर दास्तान को सुना तो उनके वहाँ आकर प्रत्यक्ष रूप से उनकी बदतर हालत को देखे।

जवाहरलाल अपने कुछ साथियों को लेकर वहाँ गये और तीन दिन रहे। उन लोगों ने जवाहरलाल और उनके साथियों पर इतना प्रेम बरसाया जैसेकि वे उनके रहनुमा हों। उनकी तकलीफों को देख जवाहरलाल को बड़ी शर्म महसूस हुई। वह स्वयं लिखते हैं–"उनकी मुसीबतों को और अपार कृतज्ञता को देखकर मैं दुख और शर्म के मारे गड़ गया। दुःख तो हिन्दुस्तान की जबरदस्त गरीबी और जिल्लत पर, और शर्म मेरी अपनी आराम की जिंदगी पर, और

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
शहरों की कुछ-न-कुछ राजनीति पर, जिसमें भारत के अधनंगे करोड़ों पुत्र-पुत्रियों के लिए कोई स्थान न था। नंगे-भूखे, दलित-पीड़ित भारतवर्ष का नया चित्र मेरी आँखों के सामने खड़ा होता हुआ दिखाई दिया और हम लोगों, जो दूर शहर से उन्हें देखने कभी-कभी आ जाते हैं, के प्रति उनकी श्रद्धा को देखकर मैं परेशानी में पड़ गया और उसने मुझमें वह नई जिम्मेदारी का भाव पैदा कर दिया जिसकी कल्पना से मेरा दिल दहल उठा।''

वे किसान लगान के बोझ तले दिन-दिन कुचले जा रहे थे, जोर-जुल्म से वसूलियाँ होतीं और उन्हें कच्चे झोंपड़ों से भी बेदखल कर दिया जाता था। वे मजबूर किसान एजेण्टों, साहूकारों और पुलिस के गिद्धों से घिरे रहते थे।

जवाहरलाल ने वहाँ देखा कि किसानों, मजदूरों और आम गरीब लोगों की बड़ी-बड़ी सभाएँ भी होतीं जिनसे उन्हें बला मिलता रहता था। पुरानी धुन 'सीताराम' ने युद्धघोष का रूप लेकर सबको एक सूत्र में बाँधने का काम किया हुआ था। फैजाबाद, प्रतापगढ़, रायबरेली राम और सीता की पुरानी कथाओं से ओत-प्रोत थे। तुलसीदास की रामायण वहाँ के घरों में सुनी और सुनाई जाती।

देश में असहयोग आंदोलन के साथ-साथ किसान आंदोलन भी जोर पकड़ता जा रहा था क्योंकि दोनों आंदोलनों का मूल कारण समान था।

1919 में गांधीजी ने जो हड़तालें कराई थीं, उनमें किसानों ने भी हिस्सा लिया था। गांधीजी का नाम भी उन देहात के लोगों पर जादू का काम करने लगा था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

5

असहयोग आंदोलन में योगदान

गाँवों के इस संक्षिप्त दौरे से जवाहरलाल के मन से जनसभाओं में बोलने का भय और संशय जाता रहा। उनके जीवन में नया आर्थिक और सामाजिक मोड़ आया जिसने उनको राजनीतिक लोकप्रियता के प्रथम सोपान पर लाकर खड़ा कर दिया।

असहयोग के प्रश्न पर निर्णय लेने के लिए 1920 के सितम्बर माह में कलकत्ता में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन लाला लाजपतराय के सभापतित्व में हुआ। कलकत्ता के विशेष अधिवेशन ने कांग्रेस की राजनीति में 'गांधी-युग' की शुरुआत की जो आजादी मिलने तक कायम रहा। केवल 1922 से 1929 तक का समय ऐसा था जब गांधीजी ने अपने-आपको पीछे रखकर स्वराज्य पार्टी को अपना काम करने दिया था जिसके नेता थे देशबंधु दास और मोतीलाल नेहरू। असहयोग आंदोलन से विलायती कपड़ों को तिलांजलि देकर खादी पहनने का प्रचलन बढ़ गया। कांग्रेस के प्रांतीय अधिवेशनों में अंग्रेजी के स्थान पर वहीं की भाषा का प्रयोग होने लगा। कांग्रेस में एक नया जोश और सच्चाई से प्रेरित स्फूर्ति दिखाई देने लगी।

कलकत्ता का विशेष अधिवेशन समाप्त होने के बाद गांधीजी मृत्युशय्या पर अड़े 'अमृत बाजार पत्रिका' के महान सम्पादक मोतीलाल घोष से मिलने गये। जवाहरलाल भी उनके साथ थे। मोतीलाल घोष ने गांधीजी के आंदोलन को आशीर्वाद देते हुए कहा, "मैं तो अब दूसरी दुनिया में जा रहा हूँ। वह दुनिया कहीं भी हो, मुझे एक बात का संतोष है कि वहाँ ब्रिटिश साम्राज्य न होगा-अब मैं इस साम्राज्य की पहुँच से बाहार हो जाऊँगा।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कलकत्ता से लौटने से पहले जवाहरलाल गांधीजी के साथ रवीन्द्रनाथ ठाकुर तथा उनके बड़े भाई 'बड़ो दादा' से मिलने शांति निकेतन भी गये। वहाँ चार्ली एण्ड्रूज ने कुछ किताबें जवाहरलाल को दीं, जिन्होंने उन्हें बहुत प्रभावित किया। एण्ड्रू इस विदेशी सत्ता की जाति के थे जो भारत पर शासन कर रही थी। उन्होंने हिन्दुस्तान की स्वाधीनता की प्राप्ति के लिए 'इण्डिपेण्डेंस दि इमीजिएट नीड' नामक एक उच्च स्तरीय लेख लिखा जिसमें शुद्ध राष्ट्रीयता, हिन्दुस्तान के प्रति सहानुभूति, पराधीनता से छुटकारा पाने की इच्छा व्यक्त की गई थी। जवाहरलाल को लगा कि उनके हृदय के भावों को ही मर्मस्पर्शी ढंग से दिल को हिला देने वाली भाषा में रख दिया गया है। एण्ड्रूज ने लिखा, "आत्मोद्धार का एक ही मार्ग है कि अपने अंदर से कोई जबरदस्त हलचल-क्रांति पैदा हो। ऐसी क्रांति के लिए जिसे बारूद की जरूरत है और वह खुद हिन्दुस्तान की आत्मा में से पैदा होनी चाहिए। वह बाहर से किसी के देने, माँगने, मिलने, एलान करने और रियायतें देने से नहीं आ सकती। वह अपने अंदर से ही आनी चाहिए। इसलिए जब मैंने देखा कि ऐसी ही आंतरिक शक्ति, वह बारूद, दरअसल मेरे अन्दर भी चिंगारी पनप रही है तो मेरे अंतर्रात्मा से आवाज ई, 'जागो, गुलाम मत बने रहो' और हिन्दुस्तान की हृय्यतन्त्री उसी स्वर में झनझना उठी—तो मेरे मन और आत्मा उस बोझ से छुटकारा पाने की खुशी से नाच उठे। एक आकस्मिक हलचल के साथ उसकी बेड़ियाँ ढीली हुई और आजादी का रास्ता खुल गया।"

देश-भर में असहयोग की लहर फैलती चली गई। नई कौंसिलों के बहिस्कार में खूब सफलता मिली। नागपुर कांग्रेस 1920 के अधिवेशन में तो पुराने कांग्रेसी नेता भी असहयोग के मंच पर एक साथ हो गये।

कांग्रेस ने असहयोग को अपनाकर नया रूप जो कांग्रेस का दिया, वह जनता का संगठन बन गई। इससे नाखुश होकर कुछ पुराने नेता कांग्रेस से पीछे हट गए जिनमें मुख्य थे एक मशहूर और लोकप्रिय नेता जिन्ना। जिन्हे सरोजिनी नायडू ने 'हिन्दू-मुस्लिम एकता का राजदूत' कहा था और यह सच भी था कि मुस्लिम लीग उनकी वजह से ही कांग्रेस के निकट आई थी।

असहयोग आंदोलन से आम आदमी के अंदर आजादी और आजादी के गर्व का भाव आ गया था। हम दबे हुए, कुचले हुए हैं, यह भावना लागों के मन से तिरोहित हो गई थी। नैतिकता की ऊँची भावना उत्पन्न हो गयी थी। गांधीजी पर और उनके बताए उपायों पर लोगों को गर्व की अनुभूति होने लगी थी। यहाँ तक कि अंग्रेजों को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हिन्दुस्तानी फौज और पुलिस पर भी अविश्वास होने लगा। दिसम्बर 1921 में लार्ड रीडिंग ने तो कह ही दिया था कि हम हैरान और परेशान हो रहे हैं।

दिन-पर-दिन विरोध और शासन का सामना करने की भावना प्रबल होती जा रही थी जिससे अंग्रेज अफसर चिंतित हो उठे थे। लेकिन कांग्रेस के साधन शांतिमय थे। आम अंग्रेज इस बात को मानने को तैयार नहीं था कि कांग्रेसी सच्चे दिल से अहिंसा चाहते हैं और इसी रास्ते चलकर असहयोग भी कर रहे हैं। वे इसे गहरी साजिश और धोखाधड़ी समझ रहे थे। जवाहरलाल ने अंग्रेजों के विषय में लिखा–"अंग्रेजों को बचपन से ही यह सिखाया जाता है कि पूरब एक रहस्यमय देश है, और वहाँ के बाजारों और तंग गलियों में दिन-रात छिपी साजिशें होती रहती हैं। इसलिए वे इन रहस्यमय समझे जाने वाले देशों के मामलों को सीधा नहीं देख सकते। वे एक पूरब के पुरुष को, जो सीधा-सादा और रहस्य से खाली है, समझने की कभी कोशिश ही नहीं करते। वे उससे एक दूरी पर ही रहते हैं, उसके बारे में जो कुछ खयाल बनाते हैं, वे भेदिया और खुफिया पुलिस के द्वारा मिली भली-बुरी खबरों के आधार पर बनते हैं, और फिर उसके सम्बन्ध में अपनी कल्पना की उड़ान को खुला छोड़ देते हैं। अप्रैल 1919 के शुरू में पंजाब में ऐसा ही हुआ था। अधिकारियों में और आम तौर पर अंग्रेज लोगों में एकाएक दहशत फैल गई। उन्हें हर जगह खतरा-ही-खतरा, एक बगावत, एक दूसरा गदर जिसमें भयानक मारकाट होगी, दिखाई देने लगा और हर सूरत में आँखें मूँदकर आत्मरक्षा की सहज वृत्ति ने उनसे वे-वे भयंकर कांड करा डाले, जिनके अमृतसर का जलियाँवाला बाग और रेंगने वाली गली, से प्रतीक और दूसरे नाम हो गये।"

1921 का वर्ष बहुत तनावपूर्ण रहा जिससे अंग्रेजी अफसर चिढ़ गये और घबरा भी गये। जो कुछ होता नहीं था वे डरकर उसकी भी कल्पना कर बैठते थे। इसी संदर्भ में उदाहरण देते हुए जवाहरलाल नेहरू ने 'मेरी कहानी' में लिखा है, "मेरी बहन स्वरूप की शादी इलाहाबाद में 10 मई, 1921 को होने वाली थी। देशी तिथि के हिसाब से पंचांग में शुभ दिन देखकर यह तारीख मुकर्रर की गई थी। गांधीजी तथा दूसरे कांग्रेसियों को, जिनमें अली-बंधु भी थे, निमंत्रण दिया गया था। और उनकी सुविधा का खयाल करके उसी समय के आस-पास कार्यसमिति की भी बैठक इलाहाबाद में रख ली गई थी। स्थानीय कांग्रेसी चाहते थे कि बाहर से आये हुए नामी-नामी नेताओं की मौजूदगी का फायदा उठाया जाए और इसलिए उन्होंने बड़े पैमाने पर एक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

जिला कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया। उन्हें उम्मीद थी कि आस-पास के देहात के किसान लोग बहुत बड़ी तादाद में आ जायेंगे।

Gandhi Memorial College Of Education Bahtalab Jammu

इन राजनैतिक सभाओं की बदौलत इलाहाबाद में खूब चहल-पहल और जोश छाया हुआ था। इससे कुछ बदौलत इलाहाबाद के दिलों में अजीब घबराहट छा गई। एक रोज एक बैरिस्टर दोस्त से मैंने सुना कि इस आयोजन से कितने ही अंग्रेजों के होश ठिकाने न रहे और उन्हें डर हो गया कि शहर में एकाएक कोई बवंडर खड़ा हो जाने वाला है। हिन्दुस्तानी नौकरों पर से उनका विश्वास हट गया और वे अपनी जेबों में पिस्तौल रखने लगे। यहाँ तक कहा गया कि इलाहाबाद का किला इस बात के लिए तैयार रखा गया था कि जरूरत पड़ने पर तमाम अंग्रेजों को पनाह देने के लिए वहाँ भेज दिया जाए। मुझे यह सुनकर बड़ा ताज्जुब हुआ और इस बात को समझ न सका कि कोई क्यों इलाहाबाद जैसे सोये हुए और शांतिमय शहर में ऐसे किसी बवंडर का अंदेशा रखे, खास कर उस समय जबकि खुद अंहिसा का दूत ही वहाँ आ रहा हो। अरे! यहाँ तक कहा गया कि 10 मई, (और इत्तिफाक से यही तारीख मेरी बहन की शादी की नियत हुई थी) 1857 को मेरठ में जो गदर शुरू हुआ था उसी का सालाना जलसा करने की ये तैयारियां हो रही है।''

इस असहयोग आंदोलन ने नेंटरूपी को आजादी का ध्येय समझा दिया था जिसमें आम आदमी के शोषण का अंत कर दिया था। भगवद्गीता के आध्यात्मिक भाव को समझकर वह इसकी तरफ इतने आकर्षित हुए कि उन श्लोकों को पढ़ना पसंद करने लगे जो शाम को गांधीजी के आश्रम में प्रार्थना के समय पढ़े जाते थे, जिनमें शांत, स्थिर, गंभीर और निष्काम भाव से कर्म करने वाला तथा फल के विषय में अनासक्ति के भाव छिपे हुए थे।

1923 में कांग्रेस दल के नेता की हैसियत से जवाहरलाल नेहरू को इलाहाबद म्युनिसिपिल बोर्ड का चेयरमैन नियुक्त किया गया। शहर के समुचित विकास के लिए दो वर्ष की अवधि में उन्होंने अनेक महत्त्वपूर्ण और रचनात्मक कार्य किये, जिसकी इलाहाबाद के तत्कालीन ब्रिटिश कमीश्नर और उत्तर प्रदेश सरकार दोनों ने भरपूर सराहना की। उत्तर प्रदेश सरकार ने जवाहरलाल को प्रदेश के शिक्षामंत्री पद की भी पेशकश की, पर देशप्रेम के दीवाने को ऐसे प्रस्तावों में रुचि कहाँ थी। उनकी कर्मठता और लोकप्रियता से से प्रभावित हो 1923 में जवाहरलाल जी को काकीनाडा कांग्रेस का महासचिव मनोनीत किया

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गया। आगामी बेलगांव कांग्रेस की गांधीजी ने अध्यक्षता की और जवाहरलाल नेहरू को महासचिव का दायित्व व पुनः सौंपा गया।

देश के राजनीतिक चक्रवात में बुरी तरह उलझे रहने के कारण जवाहर लाल जी पारिवारिक समस्याओं पर बिलकुल ध्यान नहीं दे सके थे। विवाह के कुछ समय बाद ही देश की तेजी से बदलती राजनीति से उनके जीवन को पूरी तरह, आवृत्त कर लिया। उन्होंने अपना तन मन धन सर्वस्व भारत माँ की सेवा में अर्पित कर दिया था। इसका सब से अधिक प्रतिकूल प्रभाव पत्नी कमला के स्वास्थ्य पर पड़ा। वे पहले से कृशकाय थीं। अस्थिर जीवन, चिन्ता आये दिन की पारिवारिक हलचलों के कारण उद्धिग्न, धीरे-धीरे वे तपैदिक की शिकार होती चली गयी। उपचार से जब लाभ नहीं हुआ तो अवस्था विशेष गंभीर होने पर 1926 में जवाहरलाल उन्हें लेकर यूरोप चले गए। आठ साल की पुत्री इंदिरा भी साथ थीं। वहां जिनेवा, स्विट्जरलैण्ड और मोण्टाना के सैनीटोरियम में उनका अधिकांश समय बीता। इक्कीस माह के विदेश प्रवास में जवाहरलाल नेहरू ने ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी आदि कई देशों की यात्राएँ कीं। ब्रुसेल्स में पीड़ित राष्ट्रों की कांग्रेस में भारतीय प्रतिनिधि के रूप में वे सम्मिलित हुए और वहां बहुत ही प्रभावशाली भाषण दिया। साम्राज्यवादी ताकतों के खिलाफ यह सम्मेलन पहला संयुक्त मोर्चा था। सोवियत गणराज्य की दसवीं वर्षगांठ के अवसर पर मोतीलाल जी के साथ 1927 में वे मास्को गए। इस यात्रा में साम्यवाद और साम्यवादी शासन का जवाहरलाल नेहरू ने निकट से परिचय पाया। उन्होंने प्रख्यात लेखक रोमा-रोला से भेंट कीं। विदेशों में बसे निर्वासित भारतीय क्रांतिकारियों से भी सम्पर्क किया तथा 1927 के अंत में विदेश यात्रा से सपरिवार स्वदेश आ गए।

ब्रिटिश सरकार ने भारत के विभिन्न दलों से वार्ता कर राजनीतिक सुधारों की अनुशंसा करने के लिए साइमन कमीशन की घोषणा की, पर इसके स्वरूप से असहमत होने के कारण भारत की लगभग सभी राष्ट्रीय पार्टियों ने इसका बहिष्कार किया। कांग्रेस सब से अग्रणी थी। देश में जगह-जगह उसने विरोध में प्रदर्शन किए, जुलूस निकाले और आम सभाएं कीं। सरकार ने निहत्थे सत्याग्रहियों पर गोलियां चलाई, निर्ममतापूर्वक लाठी चार्ज किया। पंजाब केसरी लाला लाजपतराय की पाशविक ढंग से पिटाई की गई और वे शहीद हो गये। लखनऊ में जुलूस का नेतृत्व जवाहरलाल नेहरू कर रहे थे। श्री गोविन्द वल्लभ पंत उनके साथ थे। वे अपने, सत्याग्रही दल को सभा स्थल की ओर ले जाना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
चाह रहे थे, तभी उसे गैरकानूनी घोषित कर दिया गया। नेहरूजी को यह वचन दिया गया कि यदि वे लिखित रूप में प्रार्थना करें तो उन्हें सुरक्षापूर्वक चले जाने दिया जायेगा, पर उन्होंने ऐसा करने से साफ इन्कार कर दिया। अचानक अपने डंडे सब तरफ घुमाती घुड़सवार पुलिस उनके दल पर टूट पड़ी। इस संदर्भ में नेहरूजी की प्रतिक्रिया से उनकी धीरोदात्त नायक की छवि पर बड़ा सजीव प्रकाश पड़ता है। उनकी सहजवृत्ति तो संकट से अपने को बचाने की हुई, वे पीछे हटने लगे– ''लेकिन.....। मैं रुका और मैंने अपने-आपसे कुछ सवाल-जवाब किया और निश्चय किया कि ऐसा करना अशोभनीय होगा... अपने लिये... कायर की तरह व्यवहार करने का विचार भी मैं नहीं बर्दाश्त कर सकता था, फिर भी वीरता और भीरूता के बीच की रेखा बहुत क्षीण थी...।''

दूरसे दिन इस भीषण घटना की और भी बड़े पैमाने पर पुनरावृत्ति हुई। ''खूब कसकर कुटम्मस हुई और पिछली शाम को साफ देखने की जो शक्ति मुझ में थी, जाती रही...। डंडों की मार से मैं अंधा-सा हो गया और बीच-बीच में मुझ में हलका-सा गुस्सा और बदले में पलटकर पीटकर चलने का भाव भी जागता... लेकिन बहुत दिनों का शिक्षण और अनुशासन काम आया। मैंने अपना हाथ न उठाया, उठाया तो केवल चोट से चेहरे को ढकने के लिए।'' गांधीजी की नैतिक शिक्षा का यह नेहरूजी पर जबरदस्त प्रभाव था। गांधीजी ने इन शब्दों में आशीर्वाद दिया– ''मेरा प्रेम स्वीकार करो। तुमने बहुत बहादुरी का परिचय दिया मगर आगे तुम्हें इससे भी बड़ी बहादुरी का परिचय देना है। भगवान तुम्हें अभी बहुत वर्षों तक आबाद रखे और हिन्दुस्तान को गुलामी से छुड़ाने में तुम्हारा उपयोग खास तौर से चुने हुए यंत्र के रूप में करे।''

ब्रिटिश सरकार की ऐसी दमनात्मक कार्यवाहियों की कई जगह, विशेष रूप से पंजाब में, जहाँ लाला लाजपतराय ब्रिटिश सत्ता की निरकुंशता और क्रूरता के शिकार हुए थे, तीखी प्रतिक्रिया हुई। एक पुलिस अधिकारी सांडर्स की क्रांतिकारियों द्वारा हत्या कर दी गई। महान् क्रांतिकारी भगतसिंह ने उत्तेजित और विक्षुब्ध होकर केन्द्रीय सभा में बम फेंका, अन्ततः उन्हें फाँसी पर चढ़ा दिया गया। उनकी जीवन रक्षा के गांधीजी के सारे प्रयास निष्फल रहे। अंग्रेजों के निर्मम अत्याचारों के खिलाफ पूरे देश में उग्र वातावरण बन रहा था। कांग्रेस में जवाहरलाल नेहरू तथा एक बहुत बड़े वर्ग-विशेष रूप से नवयुवकों की पूर्ण स्वराज्य से कम किसी समझौता-वार्ता में आस्था न थी। नेहरू समस्त देश की आशा-आकांक्षा के प्रतीक बन गए। 1929 के लाहौर में कांग्रेस अधिवेशन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
का उनको अध्यक्ष बनाया गया। उस समय वे चालीस वर्ष के थे। 31 दिसम्बर की अर्धरात्रि को लाहौर की रावी नदी के किनारे ''इंकलाब जिंदाबाद'' के गगनभेदी उद्घोष के बीच पण्डित नेहरू ने पूर्ण स्वराज्य का प्रतिज्ञा-पत्र पढ़कर सुनाया–

''हम भारत के प्रजाजन अन्य राष्ट्रों की भाँति अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानते हैं कि हम स्वतंत्र होकर ही रहें, अपने परिश्रम का फल स्वयं भोगें, हमें जीवन निर्वाह के लिए आवश्यक सुविधाएँ प्राप्त हों, जिसमें हमें भी विकास का पूरा अवसर मिले। हम यह भी मानते हैं कि यदि कोई सरकार हमारे यह अधिकार छीन लेती है तो प्रजा को उसे बदल देने या नष्ट कर देने का पूरा अधिकार है।

भारत की अंग्रेजी सरकार ने केवल देश की प्रजा को पराधीन ही नहीं बनाया बल्कि इस सरकार का आधार ही गरीब भारत के शोषण पर है और इसने आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक दृष्टि से भारत का नाश कर दिया है।

अत: हमारा विश्वास है कि भारत को विदेशियों से सम्बन्ध-विच्छेद करके पूरी स्वतन्त्रता प्राप्त कर लेनी चाहिए।

इसीलिए हम शपथपूर्वक संकल्प करते हैं कि पूर्ण स्वराज्य की स्थापना के लिए कांग्रेस समय-समय पर जो आज्ञाएँ देगी, उनका हम पालन करेंगे।''

तीस हजार कण्ठों ने समवेत स्वरों में उसे दुहराकर अपना समर्थन व्यक्त किया। अध्यक्षीय भाषण में नेहरूजी ने कहा– ''स्वराज्य का अर्थ हमारे लिए ब्रिटिश अधीनता और साम्राज्यवादी शिकंजे से पूरी तरह मुक्त होना है। स्वराज्य-प्राप्ति के बाद मुझे बिल्कुल संदेह नहीं कि हिन्दुस्तान विश्व सहयोग के लिए सब प्रयासों का स्वागत करेगा।'' विश्व सहयोग की यह प्रबल भावना अंत तक उनकी विचारधारा की धुरी बनी रही। भाषण के अंत में सबको आह्वान करते हुए उन्होंने कहा– ''सफलता अधिकतर उन्हीं को मिलती है जिनमें हिम्मत होती है, जो कर्मठ होते हैं। डरपोकों से यह दूर भागती है जो हमेशा नतीजे की चिन्ता में डूबे रहते हैं। हमको अब बड़ी बाजी लगानी है। जीवन में बड़े जोखिम उठाने से ही बड़ी उपलब्धि हो सकता है।''

इस समय तक जवाहरलाल नेहरू अपने सम्मोहक प्रेरक व्यक्तित्व और गतिशील नेतृत्व के कारण कोटि-कोटि भारतीय जन के हृदय सम्राट और आदर्श कल्पना पुरुष बन गए थे। देश की आम जनता में सचमुच उनकी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लोकप्रियता अद्भुत थी। उनके कांग्रेस अध्यक्ष बनते ही देश में एक नया जोश हिलोरे लेने लगा। राष्ट्रीय रंगमंच पर उनका महत्त्व तेजी से बढ़ता जा रहा था। गांधीजी के विशेष आग्रह पर ही इस भार को सम्भालने के लिए नेहरूजी तैयार हुए थे। देश को लगा मानो गांधीजी ने उनको अपने उतराधिकारी के रूप में वरण कर लिया है, उनके वैशिष्ट्य को अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी है। हालांकि कुछ राष्ट्रीय मुद्दों पर कई बार नेहरू की राय गांधीजी की विचारधारा से भिन्न होती थी, लेकिन उनका एक-दूसरे से इतना अधिक गहरा और अटूट आत्मिक संबंध स्थापित हो गया था कि वह उनके सहज विश्वास को डिगने नहीं देता था। गांधीजी ने कहा था– ''चिन्तन में जवाहरलाल अतिवादी है और सोचते-सोचते वह परिवेश के बाहर चला जाता है, मगर उसमें विनम्रता और व्यावहारिकता भी इतनी काफी है कि वह रस्सी को इतनी दूर नहीं खींचते कि वह टूट जाए। वह हीरे के समान स्वच्छ है। वह इतना स्वच्छ हीरा है कि उस पर कभी शंका ही नहीं हो सकती। राष्ट्र का सौभाग्य उसके हाथ में सुरक्षित है।''

कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन के बाद मोतीलाल जी ने अपने विशाल घर 'आनंद भवन' को पुत्र को सुझाव पर राष्ट्र के सुपुर्द कर दिया। 'स्वराज्य भवन' इसको नया नाम दिया गया। 1930 की 26 जनवरी को कांग्रेस कार्यकारिणी के निर्णयानुसार देश में स्वाधीनता दिवस मनाया गया। अंग्रेजी राज्य को जड़-मूल से उखाड़ने के लिए जगह-जगह संकल्प लिए गए। देश में इस समय एक नई चेतना की लहर दौड़ रही थी। गांधीजी ने तभी अपने यहां एक सभा की बैठक, जिसमें अन्य बातों के अलावा एक उल्लेखनीय बिन्दु था–नमक से कर हटवाना। गांधीजी की मान्यता थी, यह साधारण और गरीब तबके के साथ सबसे बड़ी ज्यादती है और शीघ्र इसका निराकरण होना चाहिए। तत्कालीन वायसराय लार्ड इरविन ने उनकी मांग को नामंजूर कर दिया। पूर्ण अविचलित महात्मा गांधी का 21 मार्च सन् 1930 को 78 सत्याग्रहियों के साथ ऐतिहासिक डांड़ी मार्च आरम्भ हुआ जो 5 अप्रैल को पूर्ण हुआ। पूरे देश ने गांधीजी का अनुसरण किया। जवाहरलाल को भी नमक कानून तोड़ने पर गिरफ्तारी पर देश में बहुत तीखी प्रतिक्रिया हुई। अब गिरफ्तारी, लाठी चार्ज, गोली कांड हर रोज की सामान्य घटनाएँ हो गईं। अपने प्यारे नेता के विरुद्ध मनमानी करने पर जनता में भीषण आक्रोश व्याप्त हो गया। चारों ओर विदेशी कपड़ों की होली जलाई गई। शराब के अड्डों पर धरने दिए गए। इस आंदोलन की सबसे बड़ी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

विशेषता भारतीय नारियों में एक नई चेतना का संचार था। बड़े से बड़ा त्याग-बलिदान करने के लिए वे संग्राम में आगे आ गई। उधर नेहरू परिवार की स्त्रियाँ भी इस समर-यज्ञ में पूरे जोश से कूद पड़ीं। कई-कई घंटे तक जवाहरलाल जी की माँ, बहनें, पत्नी हर रोज विदेशी वस्त्रों की दुकानों पर धरना दिए, कड़ी धूप में खड़ी रहतीं। कमला यद्यपि नेहरूजी के जेल जाने पर इलाहाबाद शहर और पूरे जिले की कांग्रेस का संगठनात्मक काम संभालकर अपने को उन्होंने पति की बराबरी का राजनीतिक सहयोग सिद्ध कर दिया था। पत्नी की अद्‌भुत शक्ति और लगन देखकर नेहरूजी चकित हो गए। आंदोलन तेजी से देश के कोने-कोने में फैलता जा रहा था। गाँवों से लेकर शहरों तक शांत-अहिंसक सत्याग्रही ब्रिटिश सरकार के दमन के विरुद्ध उमड़े पड़ रहे थे। अहिंसक आन्दोलन की सबसे शानदार मिसाल उत्तरी पश्चिम सीमा प्रांत में देखी जा सकती थी, जहाँ सहरदी गांधी खान अब्दुल गफ्फार खाँ के नेतृत्व में संयत और शांत भाव से अंग्रेजों के जुल्मों का मुकाबला कर रहे थे। सारे देश में लगभग एक लाख सत्याग्रहियों को बंदी बनाकर जेल भेजा गया। नेहरूजी को जेल में तरह-तरह की यंत्रणाएँ दी गईं। जिस बैरक में उन्हें रखा गया, कभी वह 'कुत्ता घर' रहा था। उनके पिता भी बंदी बनाकर कुछ समय पश्चात् वही ले आए गए। कुछ उदारपंथी राष्ट्रीय नेताओं ने समझौते कराने के प्रयास किए, पर वे सब निष्फल रहे। राष्ट्रीय नेता झुकने को तैयार न थे। छह माह की सजा पूरी होने पर जवाहरलाल नेहरू मुक्त कर दिए गए पर आठ दिन बाद ही एक सम्मेलन में किसानों से लगान न चुकाने का आह्वान करने पर फिर पकड़ लिए गए। राजनीतिक बंदिशों पर अमानवीय जुल्म ढाने के विरोध स्वरूप नेहरूजी ने जेल में तीन दिन की भूख हड़ताल की। कमला भी गिरफ्तार कर ली गई। जेल प्रस्थान के समय कमला ने कहा– "आज मुझे असीम प्रसन्नता है और इस बात का गर्व है कि मैं अपने पति के पदचिह्नों पर चल सकी। मुझे आशा है कि आप लोग इस ऊँचे झण्डे को झुकने न देंगे।" जवाहरलाल जी पर राजद्रोह का अभियोग लगाकर 17 माह की सख्त कैद की सजा दी गई। यह उनकी पाँचवीं जेल-यात्रा थी। 14 नवम्बर उनकी वर्षगांठ के उपलक्ष्य में सम्पूर्ण भारत में जवाहर-दिवस मनाया गया। जिस भाषण को आपत्तिजनक ठहराकर उन्हें सजा दी गई थी, जगह-जगह सभाओं में उसे पढ़ा गया। जनता में जबरदस्त उत्साह था। अंग्रेज सरकार ने अनेक स्थानों पर जुलूस-जलसों पर लाठी चार्ज किया। लंदन में इस दौरान प्रथम

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गोलमेज कान्फ्रेंस का नाटक खेला जा रहा था। कांग्रेस के प्रमुख नेता जेलों में बंद थे, ऐसे में किन्हीं आयोजनों की क्या सार्थकता हो सकती थी। गोलमेज कान्फ्रेंस में अंग्रेजी राज्य के समर्थक चंद निहित स्वार्थों के प्रतिनिधि एकत्र हुए थे, वहाँ यही राय उभरी कि अगली बैठक में सम्मिलित होने के लिए कांग्रेस को तैयार किया जाए। इसके फलस्वरूप वरिष्ठ नेतागण गांधीजी, जवाहरलाल नेहरू आदि को जेल से रिहा किया गया। आधि-व्याधि ग्रस्त पं. मोतीलाल जी की दशा इस समय बहुत चिंताजनक थी– "वह एक बूढ़े शेर की तरह जिसका शरीर बुरी तरह जख्मी हो गया हो और जिसकी ताकत शरीर से क़रीब-क़रीब चली गई हो बैठे थे। लेकिन उस हालत में भी उनकी शान तो सिंहो या राजाओं जैसी ही थी।" और कुछ समय बाद ही उस शानदार व्यक्तित्व की इति हो गई। स्वाधीनता संघर्ष में पिता-पुत्र के अप्रतिम योगदान की एक निराली मिसाल विछिन्न हो गई। महात्मा गांधी ने कहा– "मोतीलाल के देशप्रेम का स्रोत पुत्र जवाहरलाल के प्रति उनका अथाह प्रेम था।" व्याप्त राजनीतिक गत्यावरोध को दूर करने के लिए वाइसराय लार्ड इर्विन समझौते के पक्ष में थे। गांधीजी से उनकी लंबी वार्ताएँ चलीं, अन्ततः जो समझौता हुआ, उसमें अनेक महत्त्वपूर्ण विषय अनिर्णित छोड़ दिए गए। राजनीतिक बंदियों की रिहाई की घोषणा हुई न सरदार भगतसिंह की प्राणदण्ड की सजा को निरस्त किया गया। ऐसा समझौता हालांकि नेहरूजी को रुचिकर न था, पर कांग्रेस के अनुशासित सिपाही के रूप में उन्होंने स्वीकार कर लिया। आगामी करांची कांग्रेस ने दूसरी गोलमेज कांन्फ्रेंस में भाग लेने के लिए महात्मा गांधी को अपना एक मात्र प्रतिनिधि अधिकृत किया। करांची कांग्रेस में मौलिक सिद्धान्त और आर्थिक कार्यक्रम का प्रस्ताव नेहरूजी ने प्रस्तुत किया। भारत की सामाजिक और आर्थिक स्थिति पर कांग्रेस की ओर से यह प्रथम घोषणा पत्र था। उत्तर प्रदेश के किसान आंदोलन में नेहरूजी पूरी तरह सक्रिय हो गए। सरकार ने किसानों के सहायतार्थ सुधारों की पेशकश की पर कांग्रेस को उससे संतोष न हुआ। बंगाल, उत्तर पश्चिम सीमा प्रान्त की स्थिति भी दिन पर दिन उग्र होती जा रही थी। क्रांतिकारी आंदोलन गति पकड़ रहा था। नेहरूजी विक्षुब्ध थे। उनकी गतिविधियों को नियंत्रित करने के लिये सरकार ने इलाहाबाद की म्यूनिसिपिल हद में उन्हें रहने को पाबंद कर दिया। लिखने-बोलने पर रोक लगा दी। पर नेहरूजी ने ऐसे अवरोधों की कब परवाह की। जब गांधीजी से मिलने बम्बई जा रहे थे तो उन्हें रास्ते के स्टेशन पर गिरफ्तार कर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लिया गया और वे एक बार फिर नैनी कारागार में जा पहुँचे। उन्हें दो वर्ष की सख्त कैद और पांच सौ रुपये जुर्माने की सजा सुनाई गई। माँ और बहन ने भी सत्याग्रह में भाग लिया। कमला बम्बई में रोग शैया पर पड़ी थीं। उधर दिखावे के लिए शासन सुधार के नाम पर ब्रिटिश सरकार कार्यवाही कर रही थी, किन्तु ये ईमानदार प्रयास न थे। दमनचक्र तेजी से चल ही रहा था। कांग्रेस गैरकानूनी संस्था घोषित कर दी गई थी। राष्ट्रीय सप्ताह के जुलूस में नेहरूजी की रुग्ण मां स्वरूप रानी को बुरी तरह बेतों से पीटा गया, वे बेहोश हो गई। सरकार के हरिजनों को पृथक् करने के षड़यंत्र के विरोध में महात्मा गांधी को अनशन करना पड़ा। गांधीजी ने उनकी प्रतिक्रिया जानने के लिए पत्र लिखा– ''मनस्ताप की इन घड़ियों में तुम हमेशा मेरी अन्दर की आँखों के आगे रहे हो। तुम्हारी राय जानने को मैं व्यग्र हूँ। मैं तुम्हारी राय की कद्र करता हूँ।'' पृथकतावादी नेताओं से आश्वासन मिलने पर गांधीजी ने पांच दिन बाद अनशन समाप्त कर दिया, सविनय अवज्ञा आंदोलन भी कुछ समय के लिए स्थगित हो गया। बार-बार की जेल जीवन की निपट निष्क्रियता से नेहरूजी उद्विग्न थे। देश उन्हें पुकार रहा था, देश को उनकी जरूरत थी। उन्हीं दिनों उनकी माँ स्वरूप रानी गंभीर रूप से रुग्ण हो गई और जवाहरलाल नेहरू को जेल से रिंहा कर दिया गया। बाहर समाजवाद संबंधी लेखों-भाषणों से वे जनता को शिक्षित करते रहे। तभी बिहार में भीषण विनाशकारी और अभूतपूर्व भूचल आ गया। उसने सम्पूर्ण राष्ट्र को मर्माहत कर दिया। पीड़ितों की मदद के लिए नेहरूजी बिहार दौरे पर गए। वहां की जनता प्रायः सशंक और आतंकित रहती थी। बिहार यात्रा से लौटते ही चौबीस घंटे की अवधि में उन्हें फिर गिरफ्तार कर लिया और अलीपुर सेंट्रल जेल भेज दिया। समूचे नेहरू-परिवार ने ब्रिटिश सरकार के हाथों अनगिनत यातनाएँ सही थीं, पर इस बार नेहरू की जेलयात्रा का कमला के तन-मन पर बड़ा प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। उनकी-जीवनी शक्ति दिन पर दिन क्षीण होती जा रही थी। वे एक साहसी, अडिग महिला थी पर नेहरूजी के जेल के लिए प्रस्थान करते समय मूर्छित होकर वे नीचे गिर गयीं। आधिव्याधि जर्जर उनके तेजस्वी जीवन का पटाक्षेप सन्निकट था।

जवाहरलाल नेहरू को सेंट्रल जेल में एक छोटे तंग सैल में रखा गया। कहीं बाहर निकलने की मनाही थी। ऐसे ही क्रूर प्रतिबंधों के शिकंजे में उन्हें एक माह निकालना पड़ा। कलकत्ते की नम अबोहवा नेहरूजी के स्वास्थ्य के प्रतिकूल थी। उनका बजन घटने लगा, तब सरकार ने उनका स्थानान्तरण

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

देहरादून जेल में कर दिया। यहाँ भी रहने के लिए उन्हें मवेशियों का बाड़ा दिया गया। बाहर झांकने की मनाई थी। देहरादून जेल की दीवारों को इस बार ज्यादा ऊंचा उठा दिया गया था। अब हिमालय की वादियों में सुकून खोजती खोजाने वाली उनकी दृष्टि वहीं सीमित हो गई। कुल मिलाकर जेल का वातावरण उन्हें बड़ा दमघोटू लगता था। न बाहर की स्थिति ही आश्वस्तकारी थी। देश में चारों ओर दिशाहीनता-सी व्याप्त थी। बांटों और राज्य करों की अंग्रेज़ी हथकंण्डोंवाली नीति ने देश को संत्रस्त कर रखा था। आवेग उद्वेलनपूर्ण ऐसी मनःस्थिति में नेहरूजी ने आत्मकथा लिखना आरंभ कर दिया ताकि मन पर छाया खयालों का गहराता घटाटोप कुछ हल्का हो सके। उनकी यह अविस्मरणीय कृति कुल आठ माह में पूर्ण हो गई।

कमला का स्वास्थ्य दिन पर दिन गिरता जा रहा था। अगस्त माह में उनकी हालत गंभीर होने पर जवाहरलाल को अस्थायी रूप से रिंहा कर दिया गया लेकिन ग्यारह दिन के बाद ही वे पुनः नैनी जेल के मेहमान बन गए। इस दौरान उन्हें संदेश मिला कि अगर वे आश्वासन दें कि राजनीतिक कार्यवाहियों में भाग नहीं लेंगे तो सरकार उन्हें मुक्त कर सकती है, पर ज़वाहरलाल के लिए तो ऐसा विचार मात्र अकल्पनीय था। मरण शैया पर पड़ी वीरांगना कमला ने भी दृढ़तापूर्वक ऐसा कुछ भी लिखने, करने के लिए मना कर दिया। स्वास्थ्य सुधारार्थ कुछ दिनों बाद कमला को भ्रवाली सेनीटोरियम ले जाया गया और नेहरूजी को निकटवर्ती अल्मोड़ा जेल में स्थानांतरित कर दिया। अवस्था में अपेक्षित सुधार न होने पर कमला उपचारार्थ यूरोप चली गई। नेहरू की सजा पूरी होने से कुछ माह पहले स्थगित कर दी गयी और उन्हें जेल से रिहा कर दिया गया। नेहरू कमला के पास यूरोप चले गए। इसी दौरान कांग्रेस के आगामी सत्र का उन्हें अध्यक्ष मनोनीत किया गया, पर पत्नी की चिन्त्य दशा में छोड़कर वे भारत जाना नहीं चाहते थे। उन्होंने अध्यक्ष पद से त्यागपत्र देने की भी सोची, पर जीवट की धनी कमला ने यह स्वीकार नहीं किया। उनकी जीवन यात्रा वैसे भी अब पूर्ण होने वाली थी। और पति-पुत्री, असंख्य देशवासियों को संतृप्त छोड़कर कुछ दिनों बाद स्विट्जरलैण्ड के सेनीटोरियम में उन्होंने प्राण विसर्जन कर दिए। देश के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में पति की अनुवर्ती होकर जीवनाहुति देने वाली सन्नारी के रूप में उनका विशिष्ट स्थान हमेशा-हमेशा विद्यमान रहेगा। नेहरूजी की मृत्यु पर ऐसा कहा जाता है-उनकी निजी चीजों में सहेजकर रखे हुए कमला के अवशेष भी मिले थे।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

कितनी गहरी छाप छोड़ी थी उन्होंने जवाहरलाल के संवेदनशील मन:पटल पर।

रोम में जवाहरलाल को इटली के तानाशाह मुसौलिनी को मिलने के लिए निमंत्रण मिला किन्तु लोकतांत्रिक विचारधारा के सच्चे अनुयायी नेहरू ने एक फासिस्ट तानाशाह की वह पेशकश स्वीकार कर दी। एक के बाद एक उनके पारिवारिक सूत्र विच्छिन्न होते ज़ा रहे थे। वे अपने को अधिक एकाकी अनुभव करने लगे थे, पर राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय उथल-पुथल और तकाजों के बीच वे कब तक अपने ही द्वन्द्व और उलझनों में ग्रस्त, आत्मकेन्द्रित होकर रह सकते थे। 1935 के एक्ट के अन्तर्गत भारत में जिस संघीय संविधान की व्यवस्था की गयी थीं, उस में चुने हुए प्रतिनिधियों की नाम की स्वायत्ता थी। फिर भी प्रान्तीय धारा सभा के चुनाव लड़ने का कांग्रेस ने निश्चय किया। राष्ट्रव्यापी चुनाव प्रचार का दायित्व पण्डित नेहरू के कंधों पर पड़ा। एक छोर से दूसरे छोर तक देश के पैंसठ हजार मील के दौरे में भारत की कोटि-कोटि जनता को उन्होंने सम्बोधित किया। उनके सम्मोहक व्यक्तित्व और ओजस्वी वाणी का पूरा देश जैसे दीवाना हो गया था। इस तूफानी दौरे में उनके आगे सदियों पुराना अद्‌भुत, पर नए विचार, नए आदर्श ग्रहण करने को तत्पर और आतुर एक जीवंत भारत मानो साक्षात उपस्थित हो गया था। पंजाब-बंगाल को छोड़कर कांग्रेस को अन्य सभी प्रान्तों में विजयश्री प्राप्त हुई। नेहरू के प्रभावशाली नेतृत्व का सिक्का काँग्रेस और देश ने एकमत से स्वीकार कर लिया।

अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज पर इन दिनों युद्ध के बादल मंडरा रहे थे। फासिस्ट ताकतें जोर पकड़ती जा रही थीं। लोकतंत्र के अग्रदूत पण्डित नेहरू के समर्थन का स्वभावत: उनके लिए विशेष महत्त्व था। इसी संदर्भ में पहले मुसोलिन ने पहल की थी। 1937 में नेहरूजी को जर्मनी की नाजी सरकार की ओर से ऐसा ही संदेश मिला। पर हिटलर और नाजियों की फासिस्ट विचारधारा से सैद्धांतिक और बुनियादी मतभेद होने के कारण जवाहरलाल ने आमंत्रण अस्वीकार कर दिया। स्थिति का जायजा लेने के लिए उन्होंने चैकोस्लोवाकिया, ब्रिटेन और स्पेन की यात्राएँ कीं। पूरा यूरोप तनावग्रस्त था; युद्ध का बाँध टूटने को हैं और अंतत: सितम्बर 1939 में द्वितीय विश्व युद्ध आरंभ हो गया। नेहरूजी उस समय जनरल च्यांग काई शेक के निमंत्रण पर चीन गए हुए थे। भारत के तत्कालीन वायसराय लॉर्ड लिनलिथगो ने बिना किसी भारतीय राजनीतिक नेता से परामर्श किए घोषणा कर दी कि मित्र राष्ट्रों के साथ भारत भी युद्ध में शामिल है।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

काँग्रेस कार्यकारिणी ने इस कार्यवाही पर घोर आपत्ति की और युद्ध प्रयासों में सहयोग करने से इनकार कर दिया। 1940 में गांधीजी ने व्यक्ति सत्याग्रह आरम्भ किया। बिनोबा प्रथम और जवाहरलाल नेहरू का दूसरे सत्याग्रही के रूप में चयन हुआ। पर नेहरूजी को पहले ही गिरफ्तार कर लिया गया और चार वर्ष की सख्त कैद की सजा दी गयी। उन्हें अल्मोड़ा जेल में रखा गया। अगले वर्ष 1941 में जब बढ़ती हुई जापानी फौजें बर्मा तक आ पहुँची। चिंतित अंग्रेज सरकार ने युद्ध की तैयारियों में भारतीय जनता का अधिकाधिक सहयोग पाने के उद्देश्य से सर स्टैफर्ड क्रिप्स को भारत भेजा। वार्ता में शामिल होने के लिए नेहरूजी को जेल से मुक्त किया गया। किन्तु कई महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर गंभीर मतभेद होने के कारण सरकार से कोई समझौता न हो सका। कांग्रेस का असहयोग जारी रहा। अगस्त 1942 में काँग्रेस ने अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध 'भारत छोड़ो' आन्दोलन का शुभारंभ किया। सभी राष्ट्रीय नेताओं को बंदी बना लिया गया। महात्मा जी को आगा खाँ महल में रखा गया और जवाहरलाल नेहरू मौलाना आजाद, आसफअली आदि को अहमदनगर जेल पहुँचाया गया। सारे देश में 'करो या मरो' के दृढ़ संकल्प के साथ प्राण हथेली पर लेकर भारतवासी स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। ब्रिटिश दमनचक्र तेजी से चला। जगह-जगह गोली काण्ड हुए। पाशविक अत्याचार ढाए गए। पर राष्ट्रभक्तों ने हँसते-हँसते प्राण न्यौछावर किए, झुके नहीं। साम्राज्यशाही की जड़ एकबारगी बुरी तरह हिल गयी। महात्मा जी ने जेल में अनशन आरम्भ कर दिया। उनकी दिशा मरणासन्न हो गयी। सरकार ने उन्हें मुक्त कर दिया। यूरोप में उधर हिटलर का पराभव हो रहा था, पर पूर्व में जापानी सेना बराबर आगे बढ़ती जा रही थी। उन्हीं दिनों नेताजी सुभाष बोस द्वारा आजाद हिन्द फौज का निर्माण तथा उसकी कार्यवाहियों ने अँग्रेजों को आतंकित कर दिया। ऐसी सामरिक व राजनीतिक स्थिति के संदर्भ में सरकार ने जवाहरलाल व अन्य नेताओं को जेल से रिहा कर दिया। जवाहरलाल अपने सबसे लम्बी एक हजार इकतालीस दिन की जेल-यात्रा की सबसे महत्वपूर्ण और स्थायी उपलब्धि 'डिसकवरी ऑफ इंडिया' (भारत की खोज) नामक पुस्तक लेकर बाहर आए। नेहरूजी ने सबसे पहले सन् 42 के शानदार युगांतरकारी आन्दोलन के लिए देशवासियों को विशेषतः प्राण हथेली पर लेकर भूमिगत कार्य करने वाले बाँके सेनानियों

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

को बधाई दी। इस जबर्दस्त क्रान्ति की सारी जिम्मेदारी उन्होंने स्वयं स्वीकार की। उन्होंने आजाद हिन्द फौज के बंदी सैनिकों को अपना पूरा नैतिक समर्थन दिया और ब्रिटिश राज्य के विरुद्ध लड़ाई करने पर उन सैनिकों की ओर से मुकदमा लड़ने के लिए कई दशकों के बाद फिर वकील का बाना धारण किया।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

देश में व्याप्त राजनीतिक गत्यावरोध समाप्त करने के लिए वायसराय लॉर्ड बैवल ने सभी दलों के नेताओं से बातचीत आरंभ की। ब्रिटिश सरकार की ओर से उन्होंने समझौते के कितने ही प्रस्ताव रखे पर काँग्रेस विदेशी दासता से पूरी तरह मुक्ति के लिए कटिबद्ध थी। उधर मुस्लिमों की ओर से जिन्ना एक पृथक् मुस्लिम राज्य पाकिस्तान से कम कोई भी विकल्प स्वीकार करने को तैयार न थे। 1946 में काँग्रेस ने अंतरिम सरकार के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और जवाहरलाल नेहरू भारत सरकार की कार्यकारी परिषद के उपाध्यक्ष नियुक्त हुए। उन्हें कॉमनवैल्थ व विदेश विभाग सौंपे गए। विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधियों ने भी इसमें हिस्सा लिया, मगर सब तरह की रियायतों की पेशकश करने पर भी मुस्लिम लीग अंतरिम सरकार में सम्मिलित न हुई। साम्प्रदायिक हिंसा और बदले की कार्यवाही की आग देश में तेजी से चारों ओर फैलती जा रही थी। बंगाल-बिहार प्रान्त भीषण तबाही और विनाश के दौर से गुजर रहे थे।

अंतरिम शासन व्यवस्था में स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री की हैसियत से जवाहरलाल नेहरू पूरी मुस्तैदी से कार्य कर रहे थे। वे ब्रिटिश सरकार के कदम-कदम पर हस्तक्षेप और अड़ंगेबाजी के रवैए की तनिक भी परवाह किए बिना निर्भीकता और पूर्ण दक्षता से अपना दायित्व निभा रहे थे। बाद में ब्रिटिश सरकार ने अंतरिम सरकार में शामिल होने के संबंध में मुस्लिम लीग से समझौता कर लिया। पर नेहरूजी को उसकी कई शर्तें स्वीकार न थी। लॉर्ड वैवल के बार-बार दबाव और हस्तक्षेप के कारण वे विरोधस्वरूप त्यागपत्र देने को प्रस्तुत हो गए। लीग अंग्रेजों की शह पर सरकार में आयी थी और अंदर रहकर उसे तोड़ने के नापाक इरादे थे। इसके सदस्यों ने संविधान सभा का भी बहिष्कार किया। राजनीतिक संकट को सुलझाने के वैवल के सारे उपक्रम निरर्थक सिद्ध हो रहे थे, पर इंग्लैण्ड की नवनिर्वाचित मजदूर दल की सरकार शीघ्र कोई-न-कोई समाधानकारी हल निकालने को उत्सुक थी। उन्होंने लॉर्ड माउंटवेटन को नया वायसराय बनाकर भारत भेजा। स्थिति की सारी पेचीदगियों का गहराई

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

से अध्ययन करने के बाद वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे के भारत का विभाजन अब दुर्निवार है। लीग और काँग्रेस के सम्मिलित शासन चलाने का प्रश्न अव्यावहारिक है अत: विचारणीय ही नहीं है। अपनी योजना को पूरा करने के लिए उन्होंने सभी भारतीय नेताओं से वार्ताएँ कीं। महात्मा गांधी अन्त तक अंतर्मन से देश विभाजन के लिए सहमत नहीं थे, पर परिस्थितियाँ विषम थीं। काँग्रेस भारत की स्वाधीनता के मार्ग में तरह-तरह के रोड़े अटकानेवाले, जानबूझकर विलम्ब करने वाले तत्वों से बुरी तरह परेशान हो चुकी थी। ऐसी विषम स्थिति भारत की स्वाधीनता प्राप्ति का लक्ष्य पूर्ण करने के लिए अब वह देशविभाजन के कालकूट को पीने के लिए बाध्य हो गई। अन्तत: असंख्य देशवासियों के त्याग-बलिदान, स्वतंत्रता संघर्ष के महान सेनानियों के कुशल नेतृत्व के फलस्वरूप 15 अगस्त 1947 को ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत को सत्ता हस्तान्तरण का स्वर्णिम दिन आ पहुँचा। आखिर अपने आदर्शों और सपनों का भारत बनाने की चिर-प्रतीक्षित घड़ी एवं अपनी नियति स्वयं संवारने का पावन निर्णायक क्षण, उस शुभ बेला में देशवासियों को दिया गया। राष्ट्रनायक-प्रधानमंत्री का मार्मिक आह्वान युग-युगान्तर तक गूँजता रहेगा–

"बहुत साल हुए, हमने किस्मत के साथ एक सौदा किया था और अब अपना वादा पूरा करने का वक्त आया है– पूरे तौर पर जितना चाहिए उतना तो नहीं, फिर भी काफी हद तक। जब आधी रात के घंटे बजेंगे, जबकि सारी दुनिया सोती होगी, उस वक्त हिन्दुस्तान जागकर नयी जिन्दगी और आजादी हासिल करेगा। एक ऐसा क्षण आता है जोकि इतिहास में कम ही आता है, जबकि हम पुराने को छोड़कर नयी जिन्दगी में कदम रखते हैं जबकि एक युग खत्म होता है जबकि कौम की लंबे अर्से से कुचली आत्मा का उद्धार होता है। यह लाजिमी है कि इस संजीदा लहमें में हम हिन्दुस्तान और उसके लोगों को उससे भी बढ़कर खिदमत करने की प्रतिज्ञा करें।

इतिहास के उदयकाल में भारत ने अपनी अनंत खोज शुरू की। चाहे अच्छा वक्त आया, चाहे बुरा। उसने अपनी इस खोज को आँखों से ओझल नहीं होने दिया, न ही उन उसूलों को भुलाया जिनसे उसे ताकत हासिल हुई है। आज हम बदकिस्मती की एक मियाद पूरी करते हैं और हिन्दुस्तान अपने-आप को फिर से पहचानने लगा है। जिस कामयाबी पर आज हम खुशी मना रहे हैं; यह उनसे भी बड़ी खुशियों और कामयाबियों की महज

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक कदम और.... आगे आने वाले मौकों का एक रास्ता है। क्या हम इतने बहादुर और समझदार हैं कि इस मौके को पकड़ सकें और भविष्य की चुनौती को कबूल कर सकें।

आजादी और ताकत अपने साथ जिम्मेदारी लाती है। वह जिम्मेदारी इस सभा पर है, जो हिन्दुस्तान के सत्ताधारी लोगों की नुमाइन्दगी करने वाली संपूर्ण सत्ताधारी सभा है। आजादी के उदय से पहले हमने मेहनत करने की सारी तकलीफें बर्दाश्त की हैं और हमारे मन उन तकलीफों की याद से भारी हैं। इन में से कुछ तकलीफें अब भी जारी है फिर भी गुजरा वक्त अब खत्म हो गया है और भविष्य हमें बुला रहा है।

यह भविष्य आराम करने या दम लेने के लिए नहीं है बल्कि लगातार जी-तोड़ मेहनत करने के लिए है जिससे हम उन शपथों को, जो हमने बहुत बार ली हैं और उस शपथ को जो हम आज लेंगे, पूरा कर सकें। हिन्दुस्तान की खिदमत का मतलब है उन करोड़ों लोगों की खिदमत, जो तकलीफें उठाते हैं। इसका मतलब गरीबी, अज्ञान, बीमारी और सभी लोगों को समान मौके न मिलने का अंत करना है। हमारी पीढ़ी के सबसे बड़े आदमी की यह ख्वाहिश रही है कि हर आँख का हर आँसू पोंछ दिया जाए। हो सकता है कि यह हमारी ताकत से बाहर हो, लेकिन जब तक आँसू है, दर्द है, हमारा काम खत्म नहीं होता।

इसलिए हमें काम करना है, हमें मेहनत करनी है और सख्त मेहनत करनी है। ताकि हम अपने स्वप्नों को सच्चाई में बदल सकें। ये स्वप्न हिन्दुस्तान के लिए हैं साथ ही ये दुनिया के लिए भी है। क्योंकि आज सभी मुल्क और लोग आपस में एक-दूसरे से इस तरह गूँथे हुए हैं कि कोई भी सबसे अलग होकर रहने की कल्पना नहीं कर सकता। अमन के लिए कहा जाता है कि वह बँटवारे की चीज नहीं है। आजादी भी ऐसी ही हैं, समृद्धि भी ऐसी ही है और इस दुनिया में, जो अब अलग-अलग टुकड़ों में बाँटी नहीं जा सकती, मुसीबत भी ऐसी ही है।

हिन्दुस्तान के लोगों से जिनके हम नुमाइन्दे हैं, हम अपील करते हैं कि वे भरोसे और ईमान के साथ हमारा साथ दें। यह छोटी-मोटी और नुकसानदेह नुक्ताचीनी का वक्त नहीं है। न ही यह बुरी भावना या दूसरों पर इल्जाम लगाने का वक्त है। हमें आजाद हिन्दुस्तान की इस शानदार इमारत को बनाना है, जिसमें उसके सब बच्चे रह सकें।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

6

नेहरूजी का जेल जीवन और जीव-जन्तु प्रेम

जवाहरलाल नेहरू की गिरफ्तारी के बाद गोलमेज कान्फ्रेंस से निराश गांधीजी जहाज से बम्बई में उतरे और उन्हें देश में घटित नई घटनाओं की जानकारी मिली। बंगाल, यू. पी. और सीमा प्रांतीय आर्डिनेंसो के लागू हो जाने पर गांधीजी के कुछ घनिष्ठ साथी गिरफ्तार कर लिए गये थे। शांति की सारी आशाएँ समाप्त होने के बाद भी गांधीजी ने वायसराय लॉर्ड विलिंगडन से मुलाकात करके मध्यम मार्ग स्वीकार किया। जब बात नहीं बनी तो कांग्रेस द्वारा सविनय-भंग का अस्थायी प्रस्ताव पास किया गया।

4 जनवरी, 1932 को सवेरे ही गांधीजी और बल्लभभाई पटेल गिरफ्तार करके बिना मुकदमे चलाये राजबंदी बना लिए गये। कांग्रेस कार्य समिति, प्रांतीय कमेटियाँ, स्थानीय कमेटियाँ तथा कांग्रेस से सहानुभूति रखने वाले या संबंधित संगठन—किसान सभाएँ, युवक संघ, किसान संघ, विद्यार्थी मण्डल, प्रगतिशील राजनैतिक संगठन, राष्ट्रीय विश्वविद्यालय और स्कूल, अस्पताल, पुस्तकालय, स्वदेशी दुकानें आदि गैर कानूनी घोषित कर दिये।

जवाहरलाल नेहरू नैनी जेल में बंद चारदीवारी से बाहर की घटनाओं के विषय में चिंतित रहते थे। उन्होंने अपने-आपको अध्ययन करने, सूत कातने तथा दूसरे अन्य कार्यों में व्यस्त कर लिया था। वे लिखते हैं कि "भविष्य हमारी आँखों से छिपा हुआ था; और अच्छा ही था कि वह छिपा हुआ था। और जहाँ तक हमसे संबंध था वर्तमान ही एक पर्दे से कुछ-कुछ छिपा हुआ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
था। लेकिन हम एक बात जानते थे कि हमारा रास्ता तो आज भी और कल भी, संघर्ष, कष्ट-सहन और बलिदान में से होकर ही जाता है–

कल फिर से आरंभ युद्ध का हो जायेगा
सारा जेन्थस अहो रक्त से रंग जायेगा;
हेक्टर तथा अजेंक्स पुनः होंगे समीप स्थित
हेलन भी खुद दृश्य लिखेंगी हो उच्च स्थित।
तब हम या पर्दे में होंगी या चमकेंगे रण में,
अंधी आशा-निराशाओं में झूलेंगे क्षण-क्षण में;
तब सोचा हमने यह जीवन-बला होगा सारा,
किन्तु न जाना आत्मा का क्या होगा हाल हमारा।

आर्डिनेंसो, सभी प्रकार की आजादी का दमन, अखबारों और छापेखानों पर रोक, बिना मुकदमे चलाए जेलबंदी, जायदाद-सम्पत्ति की जब्ती करने के बाद भी ब्रिटिश अफसर स्वयं को बहुत भले और शांतिप्रिय बता रहे थे और कांग्रेस को बुरी और उसके नेताओं को झगड़ालू बता रहे थे। भारत मंत्री के ऊँचे और प्रतिष्ठित पद पदवाल सैम्युअल होर ने शेखी बघारते हुए कहा, ''हाँ, कुत्ते भौंक रहे हैं मगर हमारा कारवाँ चला जा रहा है। प्रतिक्रिया स्वरूप नेहरूजी ने कहा, "उस वक्त वह (सैम्युअल होर) यह भूल गये थे और कुत्ते बाहर रह गये थे, उनके मुँह बंद कर दिये गये थे।''

कानपुर के हिन्दु-मुस्लिम दंगों का दोष भी कांग्रेस को ही दिया गया जिसमें गणेशशंकर विद्यार्थी जैसे महान व्यक्ति को जान से हाथ धोना पड़ा। कांग्रेस ने दंगों की जो रिपोर्ट छपवाई, उसको भी जब्त कर लिया गया। सच्चाई को दबा देने का कार्य सरकार खुलेआम कर रही थी। आहत जवाहरलाल नेहरू ने अपनी आत्मकथा में उस सम्बन्ध में लिखा, ''इसमें कोई शक भी नहीं कि इस मामले में ही नहीं, दूसरे और मामलों में भी, अंत में जीत सच्चाई की होगी; लेकिन कभी-कभी झूठ बहुत दीर्घजीवी हो जाता है।'' उन्होंने एक कवि ने पद्य का भावानुवाद उद्धृत किया–

''यह असत्य निश्चय ही जग में नष्ट एक दिन होगा,
पर तब तक वह बुरी तरह से क्षत-विक्षत कर देगा।
सत्य महान, उसी की जग में विजय अंत में होगी,
पर उस क्षण तक उसे देखने बैठा कौन रहेगा?''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ब्रिटिश शासकों ने स्पष्ट कर दिया था कि राजभक्तों को आर्डिनेंसों, पाबंदियों आदि से डरने की जरूरत नहीं है, ये सब तो राजद्रोहियों और अराजभक्तों के लिए हैं। इसलिए बहुत-से सरकार-परस्त निर्भय हो गये और देशवासियों के आंदोलनों और शासक वर्ग की ज्यादतियों को समान दृष्टि से देखने लगे। ऐसे राजभक्त क्लो नामक कवि की 'पतिव्रता ग्वालिन' नामक कविता को पूर्ण रूप से सार्थक कर रहे थे–

"भय क्यों हो, सर्वथा मुक्त हूँ मैं तों भय से,
बलात्कार क्यों, राजी हूँ जब स्वयं हृदय से?"

नेहरूजी का मानना था कि सभी से यह आशा नहीं की जा सकती कि वह अगली पंक्ति में रहकर जेल जाये। हरेक की अपनी परिस्थितियाँ और जिम्मेदारियाँ भी होती हैं। लेकिन सच्चाई से मुँह मोड़कर काम न करना बहुत बुरी बात है। जवाहरलाल नेहरू ने ऐसे ही म्युनिसिपैलिटी के मेम्बरों के विषय में लिखा है, "जब म्युनिसिपैलिटी के मेम्बरों से कोई ऐसी बात करने के लिए कही गई, जो राष्ट्रीय हितों के खिलाफ थी, तब उनके लिए यह रास्ता खुला हुआ था कि वे अपनी मेम्बरी से इस्तीफा दे देते। मगर इन लोगों ने मेम्बर बने रहना ही पसंद किया।" नेहरूजी ने टामय मूर की इन पंक्तियों का उद्धरण देकर ऐसे पदलोलुप लोगों पर सटीक व्यंग्य किया है–

"पुष्पासन पाकर मधुमक्खी तज देती गुंजन सुंदर,
त्यों कौंसिल-कुर्सी पाते ही चुप हो जाते हैं मेम्बर।"

नेहरूजी फिर भी ऐसे लोगों की आलोचना को उनके साथ अन्याय ही मानते थे। क्योंकि हो सकता है कि ऐसे व्यक्ति किसी भावी संकट की आशंका से इतने दब गये हों कि ऐसा करने के लिए वे मजबूर हो, "पिछला संसारव्यापी युद्ध कई बार दिखा चुका है, कभी-कभी बड़े बहादुरों के भी छक्के छूट जाते हैं। उससे भी पहले 1912 में 'टाइटैनिक' जहाज सम्बन्धी जो भारी दुर्घटना हुई थी, उसमें ऐसे-ऐसे नामी आदमियों ने, जिनकी बाबत कभी भी खयाल नहीं किया जा सकता कि वे कायर हैं, जहाज के कर्मचारियों को रिश्वत देकर अपनी जान बचाई और दूसरे लोगों को डूबते छोड़ दिया।...कोई नहीं कह सकता कि ऐसा ही संकट आने पर जबकि वृत्तियाँ और संयम को दबा देती हैं तब वह खुद क्या करेगा? इसलिए हमें किसी को दोष नहीं देना चाहिए। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि हमें इस बात पर गौर नहीं देना चाहिए। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि हम इस बात पर गौर न करें कि

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हमने जो कुछ किया वह ठीक नहीं था और भविष्य में इस बात का ख्याल रखें कि कौम की नैया की पतवार ऐसे लोगों के हाथ में न दी जाए, जो ऐसे वक्त पर, जब सबसे ज्यादा धीरज की जरूरत होती है, काँपने लगें और बेकार हो जायें। अपनी इस असफलता को उचित ठहराने की कोशिश करना और उसे ठीक काम बताना तो और भी बुरा है। सचमुच यह तो इस सफलता से भी ज्यादा बड़ा अपराध है।'' मार्शल फोक ने कहा था, ''अंत में जाकर खूनी से खूनी लड़ाई वही जीतता है जो कि कभी घबराता नहीं और हमेशा धीरज धरे रहता है।''

जवाहरलाल नेहरू समय के साथ-साथ जेल के आदी हो गये। अच्छी-बुरी दोनों प्रकार की खबरें उन्हें जेल में मिलती रहती थीं। 6 अप्रैल से 13 अप्रैल तक जो राष्ट्रीय सप्ताह मनाया जाता है उसी के दौरान इलाहाबाद में एक जुलूस में जवाहरलाल की माँ श्रीमती स्वरूप रानी पर भी पुलिस ने लाठियां बरसाईं जिससे उनके सिर पर घाव हो गया और उनके सिर से खून बहने लगा। वे सड़क पर गिर पड़ी और बेहोश हो गईं। एक साप्ताहिक के माध्यम से एक सप्ताह बाद नेहरूजी को यह खबर मिली। अपनी वृद्ध और कमजोर माँ के खून से लथपथ पड़े रहने के समाचार ने नेहरूजी के अहिंसात्मक विचारों को भी डगमगा दिया। कुछ स्वास्थ्य लाभ करने के बाद जब वह बरेली जेल में नेहरूजी से मिलने आईं तब भी उनके सिर पर पट्टी बँधी हुई थी। परंतु उन्हें इस बात का गर्व था कि स्वयंसेवकों तथा स्वयंसेविकाओं के साथ बेंतों और लाठियों की मार खाने के सम्मान से वह वंचित नहीं रहीं।

पहले नैनी जेल फिर बरेली जेल और अंत में देहरादून की ठंडी जेल में नेहरूजी को भेज दिया गया। उनके साथ गोविंदवल्लभ पंत को देहरादून जेल में ही स्थानांतरित कर दिया गया। जेल में जवाहरलाल शारीरिक कसरत और मानसिक कार्य करते और एक कार्यक्रम बनाकर कड़ाई से उसका पालन करते। अपने को ठीक रखने के लिए रोज हजामत बनाते। जब कोई जेल में उनसे मिलने आता तो वह बहु आनंदित होते थे। एक बार उनकी बहन के छोटे-छोटे बच्चे भी जेल में उनसे मिलने आये। उनमें से एक छोटे बच्चे की जवाहरलाल के कंधों पर चढ़ने की आदत थी। जेल में भी जब उस बच्चे ने कंधे पर चढ़ना चाहा तो जवाहर के भावों का बाँध टूट गया।

जेल की कोठरियों को कैदी खुशनुमा और करीने से सजाकर रखने की कोशिश करते थे। एक कैदी ने अपनी कोठरी में शीशे, कंधे आदि को जिस

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ढंग से सजाकर रखा था, तब उस जेल सुपरिंटेंडेंट ने ऐतराज जताया। उसके अनुसार जेल की कोठरी को आकर्षक और विलासपूर्ण नहीं बनाया जा सकता। जबकि विलासिता की चीज़ें थीं–दाँतों का एक ब्रश, एक टूथपेस्ट, फाउण्टेनपेन की स्याही, तेल की शीशी, कंघी आदि।

जवाहरलाल नेहरू ने जेल के एकाकी जीवन की चाहत के विषय में 'मेरी कहानी' पुस्तक में चर्चा की है, ''कभी-कभी जिंदगी की कोमल वस्तुओं के लिए शरीर अकुला उठता, शारीरिक सुख-भोग,आनंदप्रद वातावरण, मित्रों के साथ दिलचस्प बातचीत और बच्चों के साथ खेलने की इच्छा जोर पकड़ उठती थी।"

जवाहरलाल नियमित रूप से जेल में सूत कातते। उनका खास काम तो लिखना और पढ़ना ही रहता था। उस समय के कायदे के मुताबिक तो केवल 'ए' क्लास के और बंगाल में पहले डिवीजन के कैदियों को ही लिखने की सामग्री उपलब्ध कराई जाती थी। अखबार भी सरकार की पसंद का पढ़ने को दिया जाता था। 'बी' तथा 'सी' क्लास के कैदियों को चाहे वे राजनैतिक हों या गैरराजनैतिक लिखने की सामग्री देने की जरूरत ही नहीं समझी जाती थी।

जेल में जवाहरलाल कैदियों को पढ़ाने का काम भी करते थे। जेल में रहते हुए अपनी कोठरी से हुई आत्मीयता के विषय में 'मेरी कहानी' में जवाहरलाल ने लिखा है–

''कोई साढ़े चौदह महीने तक मैं देहरादून जेल की अपनी छोटी-सी कोठरी में रहा और मुझे लगने लगा जैसे मैं उसी का हिस्सा हूँ। उसके प्रत्येक अंश से मैं परिचित हो गया। उसकी सफेद दीवारों और खुरदरी फर्श पर हरेक निशान और गड्ढे ओर उसके शहतीरों के लगे घुन के छेदों से मैं परिचित हो गया था। बाहर के छोटे-से आँगन और उगे छोटे-छोटे गुच्छे और पत्थर के टेढ़े-मेढ़े टुकड़े मेरे पुराने दोस्त-से लगते थे। मैं अपनी कोठरी में अकेला था ऐसी बात नहीं, क्योंकि के पीछे अपने घर बना लिया था जो शाम को अपने शिकार की तलाश में बाहर निकला करती थीं।''

जवाहरलाल नेहरू को देहरादून की वसंत ऋतु बड़ी सुहावनी लगी। पेड़ों पर हरे-हरे अंकुरों और कोंपलों को उझक-उझककर झाँकते हुए आश्चर्यचकित रह जाते थे।

बरसात का भी उन्होंने वहाँ खुलकर आनंद लिया। शरद और शिशिर ऋतुएँ भी जेल में उन्हें रोमांचित करती रही। प्राकृतिक जीवधारियों की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लीलाओं को भी बड़े ध्यान से देखने का अवसर मिला। वे स्वयं बड़ा मनोरंजक वर्णन करते हैं–

''जो-जो जीवधारी या कीड़े-मकोड़े हमारे सामने आते उनको हम ध्यान से देखते थे। अधिक ध्यान जाने पर मैंने देखा कि मेरी कोठरी में और बाहर के छोटे से आँगन में हर तरह के जीव-जंतु रहते हैं। मैंने मन में कहा एक ओर मुझे देखो जिसे अकेलेपन की शिकायत है, और दूसरी ओर उस आँगन को देखो जो खाली और सुनसान मालूम होता है, लेकिन जिसमें जीवन उमड़ा पड़ता है। ये तमाम किस्म के रेंगने वाले, सरकने वाले और उड़ने वाले जीवधारी मेरे काम में जरा भी दखल दिये बिना अपना जीवन बिताते थे, तो मुझे क्या पड़ी थी कि मैं उनके जीवन में बाधा पहुँचाता। लेकिन हाँ, खटमलों, मच्छरों और कुछ-कुछ मक्खियों से मेरी लड़ाई बराबर रहती थी। ततैयों और बर्रों को तो मैं सह लेता था।...हाँ, चमगादड़ों को मैं पसंद नही करता था। लेकिन उन्हें मैं मन मसोसकर पसंद करता था। वे मेरे चेहरे से एक इंच की दूरी से उड़ते और हमेशा मुझे डर मालम होता कि कहीं मुझे झपट्टा न मार दें।

...मैं चींटियों, दीमकों को और दूसरे कीड़ों को घंटों देखता रहता था और छिपकलियों को भी।"

तोतों की प्रणय-लीला का वर्णन एक प्रत्यक्षदर्शी के रूप में उन्होंने कितना जीवंत किया है–

''नैनी में हजारों तोते थे। उनमें से बहुतेरे तो मेरी बैरक की दीवार की दरारों में रहते थे। उनकी प्रणय-लीला आकर्षक वस्तु होती थी। वह देखने वालों को मोहित कर लेती थी। कभी-कभी दो तोतों में एक तोती के लिए जोर की लड़ाई होती। तोती शांति के साथ उनके झगड़े के नतीजे का इंतजार करती और विजेता पर अपनी प्रणयवृष्टि करने के लिए प्रस्तुत रहती थी।

...देहरादून में तरह-तरह के पक्षी थे और उनके कलरव, जोर-जोर से चिचियाने, चहचहाने और टें-टें करने से एक अजीब समाँ बँध जाता था। और सबसे बढ़कर कोयल की दर्दभरी कूक का तो पूछना ही क्या! बारिश में और उसके ठीक पहले पपीहा आता। सचमुच उसका लगातार–'पियू-पियू' रटना सुनकर चकित रह जाना पड़ता था। ...बरेली जेल में बंदरों की आबादी अच्छी-खासी थी। उनकी कूद-फाँद, मुँह बनाना आदि हरकतें देखने लायक होती थीं। बिच्छू हमारी कोठरियों में बहुत आया-जाया करते थे। खासकर तब, जब बिजली जोरों से कड़का करती। ताज्जुब है कि मुझे किसी ने भी नहीं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

काटा, क्योंकि वे अक्सर बेढब जगह मिल जाया करते थे— मेरे बिछौने पर या कोई किताब उठाई तो उस पर भी। मैंने खास तौर पर एक काले और जहरीले से बिच्छू को कुछ दिन तक एक बोतल में रख छोड़ा था और मक्खियाँ वगैरा उसको खिलाया जाता था। फिर मैंने उसे एक डोरे से बाँधकर दीवार पर लटका दिया लेकिन वह किसी तरह भाग निकला।

...तीन-चार साँप भी मेरी कोठरी में या उसके आस-पास निकले थे। हाँ! कनखजूरे से मुझे बहुत नफरत और डर लगता है। कलकत्ते की अलीपुर जेल में कोई आधी रात को मैं सहसा जाग पड़ा। ऐसा जान पड़ा कि कोई चीज मेरे पाँव पर रेंग रही है। मैंने अपनी टार्च दबाई तो क्या देखा कि कनखजूरा बिस्तर पर है। एकाएक और बड़ी तेजी से बिना आगा-पीछा सोचे मैंने बिस्तर से ऐसे जोर की छलाँग मारी कि कोठरी की दीवार से टकराते-टकराते बचा। उस समय मैंने अच्छी तरह से जाने कि रूस के प्रसिद्ध जीवशास्त्री पेवलोव के 'रिप्लेक्सेस' –स्वयं-स्फूर्त क्रियाएँ क्या होती हैं।

देहरादून में एक नया जानवर देखा जो एक गोह और मगर के बीच का का दो फुट लम्बा था। उसके पंजे थे और छिलकेदार चमड़ी। वह भद्दा और बेडौल था और बहुत कुछ जीवित था। बाद में एफ. डब्ल्यू. चैंपियन की 'दि जंगल इन सनलाइट एण्ड शैडो' (धूप-छाँह में जंगल) पढ़ने से मुझे पता लगा कि वह पेंगोलिन था।''

जवाहरलाल नेहरू की करुणा और सेवा की भावना कितनी महान थी? छोटे-से-छोटे जीव के प्रति भी वह कितनी ममता और दया कि भावना रखते थे यह जेल के उनके इस संस्मरण से जीवंत हो उठता है–

''एक जेल-अफसर एक कुतिया लाए थे। बाद में उनका तबादला हो गया, पर उसे वह वहीं छोड़ गये। बेचारी बेघर की होकर इधर-उधर घूमती रही और पुलों और मोरियों में रहती हुई वार्डरों के लिए टुकड़े खाकर अपने दिन काटती रही। वह प्राय: भूखों मरती थी। मैं जेल के बाहर हवालात में रहता था। वह मेरे पास रोटी के लिए आया करती। मैं उसे रोज खाना खिलाने लगा। उसने एक मोरी में बच्चे दिये। कुछ तो और लोग ले गये मगर तीन बच गये और मैं उन्हें खाना देता रहा। उसे देखकर मुझे बड़ी तकलीफ होती थी। मैंने बड़ी चिंता के साथ उसकी सुश्रूषा की और रात को कभी-कभी तो 10-12 बार उठकर मुझे उसको सम्हालना पड़ता था। वह बच गई और मुझे इस बात पर खुशी हुई कि मेरी तीमारदारी काम आ गई।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

...हिन्दुस्तानी आम तौर पर घरों में जानवर नहीं पालते। यह ध्यान देने लायक बात है कि जीव-दया के सिद्धांत के अनुयायी होते हुए भी वे अक्सर उनकी अवहेलना करते हैं। यहाँ तक कि गाय के साथ भी, जो हिन्दुओं को बहुत प्रिय और पूज्य है और जो अक्सर दंगों का कारण बनती है, दया का बर्ताव नहीं होता। मानो पूजा-पाठ और दया-भाव, दोनों का साथ नहीं हो सकता।

भिन्न-भिन्न देश वालों ने भिन्न-भिन्न पशु-पक्षियों को अपनी महत्त्वाकांक्षा या अपने चारित्र्य का प्रतीक बनाया है। उकाब संयुक्त राज्य अमेरिका और जर्मनी का, सिंह और बुलडॉक इंग्लैंड का, लड़ते हुए मुर्गे फ्रांस का और भालू पुराने रूस का प्रतीक है। सवाल यह है कि ये संरक्ष्य पशु-पक्षी राष्ट्रीय चारित्र्य को किस तरफ ले जाएँगे? इनमें से ज्यादातर तो आक्रमणकारी, लड़ाकू और शिकारी जानवर हैं। ऐसी दशा में यह कोई ताज्जुब की बात नहीं है कि जो लोग इन नमूनों को सामने रखकर अपना जीवन-निर्माण करते हैं, वे जान-बुझकर अपना स्वभाव वैसा ही बनाते हैं, आक्रमण रुख अख्तियार करते हैं, दूसरों पर गुर्राते हैं, गरजते हैं और झपट पड़ते हैं और यह भी आश्चर्य की बात नहीं है कि हिन्दू नरम और अहिंसक है, क्योंकि उनका आदर्श पशु है गाय।''

स्वास्थ्य के मामले में जवाहरलाल नेहरू बहुत खुशकिस्मत थे। एक तो जन्म से ही वह हृष्टपुष्ट थे और दूसरे अपने शरीर को बहुत संभालकर रखते थे। उन्हें बीमारी, कमजोरी तथा मोटापे से नफरत थी। कसरत करना, ताजी हवा में घूमना और सादा भोजन करना उनके जीवन के अंग थे। गरिष्ठ और तले हुए पदार्थों से भी वह बचते रहे। यद्यपि अन्य कश्मीरी ब्राह्मणों की तरह जवाहरलाल का परिवार भी मांसाहारी था, इसलिए बचपन में उन्होंने मांसाहार का सेवन किया था। 1920 के असहयोग आंदोलन के बाद उन्होंने मांसाहार बंद कर दिया। बाद में यूरोप जाने पर कुछ मांसाहार किया लेकिन हिंदुस्तान आने पर पूर्ण शाकाहारी हो गये।

जवाहरलाल नेहरू में गजब की स्फूर्ति और जीवन-शक्ति थी। कसरतों में शीर्षासन करने में उन्हें बहुत आनंद की अनुभूति होती थी। जीवन के अंतिम दिनों तक शीर्षासन का क्रम नियमित रूप से जारी रहा। उन्होंने अपने विषय में स्वयं कहा है कि मेरे संयमित जीवन और स्वस्थ प्रकृति का प्रमाण ही है कि मुझे कभी तेज सिर-दर्द नहीं हुआ और न कभी नींद न आने की शिकायत हुई।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जवाहरलाल नेहरू की आँखें भी कमजोर नहीं हुईं यद्यपि जेल की खराब रोशनी में भी आँखों से वह भरपूर काम लेते रहे। वे उन लोगों से बहुत डरे हुए रहते थे जो हमेशा गंभीर मुद्रा बनाये रखते हैं और उनके मुख पर कभी कोई बदलाव दिखाई नहीं देता।

जवाहरलाल नेहरू को जेलों में बदला जाता रहा। लगभग डेढ़ साल बाद दूसरी जेलों से उन्हें बाद में नैनी जेल स्थानांतरित कर दिया गया। उसी समय उनकी माँ की तबीयत अचानक बहुत खराब हो जाने से उन्हें अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा। माँ की गंभीर हालत को देखते हुए कारावास की अवधि समाप्त होने से कुछ पूर्व ही 30 अगस्त, 1933 को उन्हें जेल से रिहा कर दिया गया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

7

विविध आयाम

नेहरू-गांधी तथा समाजवाद

जवाहरलाल नेहरू की जेल यात्राएँ अविस्मरणीय रहीं। जेल में रहकर भी वह देश की आजादी के लिए संघर्षरत रहे। 31 दिसम्बर, 1931 से सितम्बर, 1935 तक जवाहरलाल 1,170 दिन विभिन्न जेलों में कैद रहे। 1932 में कांग्रेस आंदोलन अपने चरम पर था। धीरे-धीरे उसमें कुछ उतार आता गया। नये संविधान में दलित वर्गों के लिए अलग निर्वाचन क्षेत्रों की व्यवस्था के विरोध में गांधीजी द्वारा राजनैतिक प्रश्न को धार्मिक तथा भावनात्मक तरीके से सुलझाने का प्रयास बताया। अनेक अवसरों पर गांधीजी तथा नेहरूजी में मतभेद हुए।

गांधीजी अपने ज्ञान और व्यवहार को अपनाकर चलते थे जबकि नेहरूजी स्पष्टवादिता तथा तार्किकता को महत्त्व देते थे। इसी कारण प्रायः दोनों में टकराव की स्थिति पैदा हो जाती थी। नेहरूजी गरीबी, शोषण, अन्याय तथा विदेशी शासन से मुक्ति चाहने के संदर्भ में गांधीजी को सर्वोपरि मानते थे। उनकी राजनीतिक सूक्ष-बूझ तथा ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ उनके नेतृत्व को अनिवार्य मानते थे। इसी प्रकार गांधीजी भी जवाहरलाल की प्रतिभा, दूर-दृष्टि तथा उत्साह से भलीभाँति परिचित थे तथा उसे राष्ट्र के हित में उपयोग करने की आकांक्षा करते थे। गांधीजी यह भी समझते थे कि जवाहरलाल उनके अंधभक्त नहीं हैं और उनकी हर बात का वह आँख बंद करके समर्थन नहीं करेंगे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

1934 में कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना हुई। जवाहरलाल कभी भी इसके पदाधिकारी या सदस्य नहीं बने लेकिन वह इसके प्रेरणास्रोत्र अवश्य थे। जवाहरलाल के नरेन्ददेव, जयप्रकाश नारायण, राममनोहर लोहिया, अच्युत पटवर्धन आदि सोशलिस्ट पार्टी के नेताओं के साथ आत्मीय सम्बन्ध भी था। मार्च, 1938 में अपने विचार समाजवाद के विषय में स्पष्ट करते हुए उन्होंने लिखा, "मैं निश्चय ही समाजवादी हूँ और मैं समाजवादी सिद्धांत और विधि में विश्वास करता हूं। मैं साम्यवादी नहीं हूँ क्योंकि साम्यवाद को एक पवित्र सिद्धांत मानने की साम्यवादी प्रवृत्ति का विरोधी हूँ। मैं यह पसंद नहीं करता कि कोई मुझे यह बताये कि मुझे क्या सोचना है तथा क्या करना है!''

नेहरूजी का मानना था कि प्रमुख उद्योगों को सरकारी स्वामित्व में ही रखा जाना चाहिए तथा आर्थिक गातिविधियों के नियमन के लिए उपयोग हेतु सरकारी तंत्र की आवश्यकता है। परंतु गांधीजी के विचार नेहरूजी से भिन्न थे। वर्ग-संघर्ष, सम्पत्तिहरण तथा हिंसा की बात उन्हें नहीं सुहाती थी। अपने विरोध का प्रकट करते हुए उन्होंने कहा कि यदि कांग्रेस में कांग्रेस सोशलिस्टों का प्रभाव बढ़ा तो मैं कांग्रेस में नहीं रह सकता। यद्यपि गांधीजी ने कराची सम्मेलन में आर्थिक नीति तथा मौलिक अधिकारों सम्बन्धी प्रस्ताव का सर्मथन किया था और यही कारण था कि 1936 और 1937 में दो बार कांग्रेस अध्यक्ष बने जवाहरलाल ने समाजवादी कार्यक्रम की विस्तृत रूपरेखा पार्टी के सामने प्रस्तुत कीं। देश के भूखे-नंगों के कल्याण की चिंता, शांति और धैर्य के साथ काम करना, नैतिकता को बनाये रखना तथा तर्क पेश करते हुए समझा-बुझाकर काम निकालने की सारी बातें नेहरूजी ने गांधीजी से ही सीखीं।

नेहरूजी और गांधीजी के बीच एक भावनात्मक सम्बन्ध था। नेहरूजी अपने पत्रों में गांधीजी को 'मेरे प्रिय बापू' कहकर सम्बोधित करते थे। गांधीजी नेहरूजी को 'जवाहर' के नाम से ही पुकारते थे। गांधीजी का कांग्रेस में प्रभाव किसी पद कारण न होकर उनके नैतिक अधिकार के कारण था।

समाजवादी विचारधारा के अनुरूप नेहरूजी भारतीय अर्थव्यवस्था को आधुनिक रूप देने के लिए सपने देखने लगे थे। समाजवाद को एक छलाँग में प्राप्त न कर धीरे-धीरे उसकी समाज में पैठ बनाने की बात यह सोचते थे। समाजवाद को समाज की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए आवश्यक मानते थे जिसका परिणाम स्वातंत्र्योत्तर काल की पंचवर्षीय योजनाओं में

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
'मिश्रित अर्थव्यवस्था तथा योजनाबद्ध आर्थिक विकास' के रूप में सामने आया तथा जिसे जनतांत्रिक 'समाजवाद' नाम दिया गया।

भारत और द्वितीय विश्वयुद्ध

सितम्बर, 1939 मे दूसरा विश्वयुद्ध प्रारंभ हो गया। भारत की राजनैतिक स्थिति बहुत जटिल हो गई। द्वितीय विश्वयुद्ध में कांग्रेस ने जवाहरलाल नेहरू की नीति अपनाई। भारतीय हिटलर के विरुद्ध लड़ाई में सहयोग देने के लिए तैयार थे लेकिन जब अपना देश ही गुलाम था तो पोलैंड या चैकोस्लोवाकिया की स्वाधीनता में किस प्रकार योगदान दे सकते थे। विश्व संघर्ष में पूर्ण रूप से योगदान की बात तभी संभव थी जब ब्रिटेन भारत को बराबरी का सहभागी समझता। भारत के नेतृत्व की सरकार ने कोई कदम नहीं उठाया क्योंकि युद्ध के बाद स्वयं ब्रिटिश सरकार भारत को स्वतंत्रता देने के पक्ष में नहीं थी। वह कांगेस तथा अन्य राजैनतिक दलों को प्रभावी भागीदार बनाने में भी संकोच कर रही थी।

दुनिया में तेजी से परिर्वतन हो रहा था। हिटलर ने आस्ट्रिया और इटली ने चैकोस्लोवाकिया को हराकर अपने कब्जे में कर लिया। ब्रिटेन को भी इस युद्ध में भाग लेना पड़ा। पूरा विश्व युद्ध की चपेट में आ चुका था। जर्मनी और इटली ने पूरे यूरोप को युद्ध की आग में झोंक दिया था। भारत पर भी आँच आनी स्वाभाविक थी। एक तो भारत ब्रिटेन के अधीन था तथा दूसरे जापान ने बर्मा पर भी अपना अधिकार कर लिया था। भारत के हजारों युवकों को सेना में भरती कर युद्ध के मोर्चे पर भेज दिया गया। आवश्यक चीजों का अकाल पड़ गया। हर चीज महँगी हो गई। गरीब जनता के भूखों मरने की नौबत आ गई। ऐसे समय कांग्रेस जैसी संघर्षशील पार्टी के लिए मूक दर्शक की तरह हाथ-पर-हाथ धरे बैठना असंभव था।

प्रांतो के कांग्रेस मंत्रिमण्डलों ने त्यागपत्र दे दिये तथा सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारंभ करने के लिए जोर दिया जाने लगा। सांकेतिक विरोधस्वरूप 1940-41 में लगभग 30 हजार प्रमुख कांग्रेस जनों ने गिरफ्तारी दी। 1942 के प्रारंभ में जब जापान द्वारा दक्षिणी-पूर्व एशिया में सब-कुछ हथिया लिया गया, तो पूर्वी भारत की सीमाओं पर युद्ध का खतरा पैदा हो गया। इसे देखकर जवाहरलाल नेहरू तिलमिला उठे क्योंकि गांधीजी विदेशी आक्रमण के विरुद्ध भी केवल अहिंसा से काम लेने पर बल दे रहे थे। गांधीजी के युद्ध विरोधी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
सिद्धांत को नकारते हुए जवाहरलाल नेहरू, अबुल कलाम आजाद तथा सी. राजगोपालाचारी के नेतृत्व में कांग्रेसी नेताओं ने जापान के विरुद्ध देश की सुरक्षा के लिए राष्ट्रीय साधन जुटाने का संकल्प लिया।

क्रिप्स मिशन

युद्ध की गंभीर स्थिति को देखते हुए ब्रिटिश मंत्रिमंडल ने क्रिप्स मिशन को भारत भेजा। सर स्टैफर्ड क्रिप्स ने एक महत्त्वपूर्ण 'घोषणा-पत्र प्रारूप' तैयार किया था जिसमें एक संविधान तैयार करने के भारत के अधिकार को स्वीकारा गया था। कांग्रेस की मूल माँग को स्वीकार करते हुए इसमें कुछ अरुचिकर धाराएँ जोड़ दी गई थीं जिससे मुस्लिम लीग, देशी रियासतों के नरेश तथा ब्रिटेन का टोरी वर्ग खुश हो सके। 'घोषणा-पत्र प्रारूप' की धारा के अनुसार जो प्रांत नये संविधान को स्वीकार नहीं करेंगे, उन्हें अपना संविधान तैयार करने का अधिकार होगा तथा उन्हें भी वही मान्यता प्राप्त होगी जो भारत संघ को प्राप्त होगी जिसका परिणाम यह होता कि देश कई टुकड़ों में बँट जाता और देशी रियासतें, प्रांत और प्रांतों के पृथक समूह बन जाते। फलस्वरूप भारत का राजनीतिक और आर्थिक एकीकृत स्वरूप ही नहीं रहता। गांधीजी ने क्रिप्स के इन सुझावों को ठुकराते हुए क्रिप्स को तुरंत स्वदेश लौट जाने की सलाह दी।

नेहरूजी को भारत को टुकड़ों में बाँटने का यह प्रस्ताव पसंद नहीं आया किंतु वह संविधान के इस मामले को एक ओर रखकर राष्ट्रीय सरकार बनाने के बारे में विचार करने पर राजी हो गये थे। कारण था भारत की उत्तर-पूर्वी सीमा पर जापान के बढ़ते चरण। इस आक्रमण का मुकाबला करने के लिए एक राष्ट्रीय सेना बनाने की योजना नेहरूजी के मस्तिष्क में थी। लेकिन राष्ट्रीय सरकार बनाने पर कोई समझौता नहीं हो सका क्योंकि वायसराय लॉर्ड लिनलिथगो तथा ब्रिटिश प्रधानमंत्री चर्चिल जापान के विरुद्ध रक्षा के लिए कांग्रेस को आगे लाना नहीं चाहते थे। मुस्लिम लीग भी युद्ध का खतरा होने के बावजूद कांग्रेस का विरोध कर रही थी।

अंग्रेजो भारत छोड़ो

क्रिप्स मिशन असफल हो गया। लेकिन गांधीजी को यह बात समझ में आ गई थी कि देश में साम्प्रदायिकता की समस्या का अंत अंग्रेजों के भारत

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

छोड़ने से ही संभव है। हिन्दू और मुसलमानों के बीच में जब तक तीसरा पक्ष अर्थात् अंग्रेज रहेंगे, साम्प्रदायिकता जैसी भीषण समस्या का अंत असंभव है। दूसरे, देश की रक्षा के लिए भारतीयों को कुछ विशेष कर दिखाने की जरूरत है। वरना भारत की स्थिति मलाया और बर्मा जैसी हो सकती है। 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव को इसी आशा और विश्वास को लेकर अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने बम्बई सभा में पास किया। यह ऐतिहासिक दिन था 8 अगस्त, 1942, इसलिए भारत की स्वतंत्रता के लिए इसे एक महत्त्वपूर्ण दिन माना गया।

बम्बई के ग्वालिया टैंक ग्राउंड में रात दस बजे युगांतकारी अधिवेशन में महात्मा गांधी का भारतीय राजनीति को मोड़ देने वाला भाषण चल रहा था जिसमें प्रस्ताव पास किया गया–जिसे 'भारत छोड़ो प्रस्ताव' के नाम से जाना जाता है। गांधीजी ने कहा, "...मैं आजादी तुरंत चाहता हूँ, आज ही रात को, भोर होने से पहले। आप सबको यह समक्ष लेना चाहिए कि आप इसी क्षण से स्वतंत्र हैं और अब इस साम्राज्यवाद की एड़ी के नीचे दबे हुए नहीं हैं। जो मैं बता रहा हूँ यह कोई बनावटी विश्वास की बात नहीं है। यह स्वतंत्रता का वास्तविक सत्य है।

...जब गुलाम अपने को स्वतंत्र प्राणी समझने लगता है तभी से उसका बंधन टूट जाता है। यह मैं छोटा-सा मंत्र आपको दे रहा हूँ। आप इसे अपने हृदय पर अंकित कर लीजिए, जिससे कि आपके प्रत्येक श्वास से यह ध्वनित होता रहे। मंत्र यह है–'हम करेंगे या मरेंगे।' या तो भारत को आजाद करेंगे या इस कोशिश में मर जायेंगे। यह देखने के लिए कि हमारी पराधीनता-शाश्वत हो गई है, हम जीवित नहीं रहेंगे।"

गांधीजी का 'करो या मरो' का नारा अंग्रेजी सरकार के लिए घबराहट का कारण बन गया। ब्रिटिश सरकार ने रातोंरात योजनाएँ बनाईं और 9 अगस्त की सुबह सूरज की किरण फूटने से पूर्व ही कांग्रेस के बड़े-बड़े नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया।

नेहरूजी जो रात को अपनी बहन कृष्णा के घर पर थे, सुबह पाँच बजे पुलिस द्वारा गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तारी से पहले अपने साथियों के साथ उन्होंने अपना प्रिय भजन गाया–

वैष्णव जन तो तेने कहिए,
जे पीर पराई जाने रे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन, राजेन्द्र प्रसाद, सरदार पटेल, गोविंद वल्लभ पंत, श्रीमती सरोजिनी नायडू, मौलाना अबुल कलाम आजाद आदि अनेक बड़े नेताओं को जेलों मे बंदकर दिया गया। पुलिस की इस बर्बर कार्यवाही से सारे देश की जनता में रोष फैल गया।

'अंग्रेजो भारत छोड़ो', 'महात्मा गांधी की जय', 'इंकलाब जिंदाबाद' जैसे नारों से आसमान गूँज उठा। सारे देश में व्यापक प्रदर्शन हुए। इन प्रदर्शनों को कुचला गया। लोगों पर गोलियाँ चलायी गईं। अश्रुगैस का प्रयोग किया गया। लोगों की भीड़ और पुलिस-फौज के बीच जमकर संघर्ष हुआ। सन् 1942 के इस क्रांति में कितनी जानें गयीं तथा 3200 से ज्यादा लोग घायल हुए। लेकिन अनुमान है कि इस घटना-क्रम में लगभग 25,000 लोग मारे गये।

सन् 1857 की महान क्रांति के बाद पहली बार जनता इतनी बड़ी संख्या में अंग्रेजी हुकूमत को चुनौती देने के लिए उठ खड़ी हुई। कमी थी तो सिर्फ इतनी कि जनता की इस ताकत के पास हथियार नहीं थे।

इससे अंग्रेजी प्रशासन के पैर उखड़ गये। सुभाषचंद्र बोस के नेतृत्व में चालीस हजार भारतीय सैनिकों ने अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध का मोर्चा खोल दिया। नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने 'आजाद हिंद फौज' के नाम से इसका गठन सिंगापुर में किया था। यह फौज भी हिन्दुस्तान की आजादी के लिए लड़ाई कर रही थी।

दुर्भाग्य से उसी समय बंगाल में अकाल पड़ने से दस लाख लोग काल के गाल में समा गये।

उधर जिन्ना अलग देश 'पाकिस्तान' की माँग करने लगे।

अब अंग्रेज समझ चुके थे कि भारत में उनकी सत्ता उनके हाथ से खिसकने वाली है। देश में कई स्थानों पर सत्ता उनसे छिन भी गयी थी जिसके लिए उन्हें भारी संघर्ष करना पड़ा।

1945 में विश्वयुद्ध समाप्त हो गया। 15 जून, 1945 को जवाहरलाल नेहरू को रिहा कर दिया गया। नेहरूजी की यह सबसे लम्बी और अंतिम जेल-यात्रा थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए जीवन-भर विदेशी सरकार का विरोध करने के कारण वह लगभग नौ वर्ष जेल में रहे।

1946 के प्रारंभ में एक और घटना घटी। भारतीय वायुसेना के अधिकाँश कर्मचारियों ने भूख हड़ताल कर दी और 18 फरवरी को नौसेना में भी विद्रोह हो जाने से अंग्रेजों के होश उड़ गये।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जवाहरलाल नेहरू ने 1946 में आए कैबिनेट मिशन के साथ बातचीत में और 1947 में लॉर्ड माउण्टबेटन के साथ विचार-विमर्श करने में प्रमुखता से भाग लिया। वार्त्ताओं का मुख्य विषय अंग्रेजों के भारत छोड़ने के बाद मुस्लिम अल्पसंख्यकों की समस्या का ही था। नेहरूजी मुस्लिम लीग के राजनीतिक अलगाव के दो राष्ट्रों के सिद्धांत तथा देश के विभाजन की माँग के सर्वथा खिलाफ थे। नेहरूजी अल्पसंख्यकों को संविधान में अधिकाधिक सुरक्षा देने के पक्षधर तो थे किंतु धर्म को आधुनिक संसार में हितकारी आधार नहीं मानते थे। बहु-धार्मिक, बहु-जातियों वाले बहुभाषाई समाज के संघात्मक ढाँचे में रहकर ही समाधान खोजने को वे सही मानते थे।

अंतरिम सरकार के प्रधानमंत्री

ब्रिटिश सरकार, कांग्रेस तथा मुस्लिम लीग के बीच 1946 में हुई त्रिपक्षीय वार्ता सफल न हो सकी। 2 सितम्बर, 1946 को वायसराय के निमंत्रण पर कांग्रेस पार्टी के नेता के रूप में अंतरिम सरकार बनाई गई। चुनावों में कांग्रेस को भारी बहुमत प्राप्त हुआ था। नेहरूजी भारत के प्रथम प्रधानमंत्री बने। अक्टूबर में मुस्लिम लीग भी सरकार में शामिल हो गई। दुर्भाग्य से दोनों पार्टियाँ मिलकर काम करने मे असमर्थ रहीं। दोनों पार्टियाँ जून, 1947 तक संवैधानिक समस्याओं का हल निकालने में भी सहमत नहीं हुई।

परिणामस्वरूप लॉर्ड माउण्टबेटन के दो अलग-अलग देशों, भारत और पाकिस्तान को सत्ता हस्तांतरण के प्रस्ताव को कांग्रेस और मुस्लिम लीग ने स्वीकार कर लिया। देश के विभाजन के विरुद्ध होते हुए भी देश में हो रही साम्प्रदायिक हिंसा और मुस्लिम लीग के सख्त रवैये से उन्हे 1947 के संकट को हल करने को यही एकमात्र समाधान दिखाई दिया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

8

स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री

14 अगस्त, 1947 की आधी रात के समाप्त होते ही स्वाधीन भारत के प्रथम प्रधानमंत्री के रूप में पं. जवाहरलाल नेहरू ने शपथ ली। प्रधानमंत्री का पद ग्रहण करते समय नेहरूजी लगभग 58 वर्ष के थे और कार्य करने की अदम्य इच्छा और उत्साह से परिपूर्ण थे।

सदियों की गुलामी के बाद आखिर वह ऐतिहासिक क्षण आ ही पहुँचा जब 14 अगस्त, 1947 की समाप्ति और आधी रात को बारह बजते ही 15 अगस्त, 1947 का शुभारंभ हुआ। भारत की आजादी का बिगुल बज उठा। सरकारी इमारतों पर भारत का राष्ट्रीय ध्वज प्यारा तिरंगा फहरा उठा। यूनियन जैक उतार दिया गया। भारत में दिवाली मनाई जा रही थी। सम्पूर्ण भारत एक नये स्वतंत्र जीवन में प्रवेश कर रहा था।

जवाहरलाल ने इस अवसर पर 14 अगस्त, 1947 की संविधान सभा में ऐतिहासिक भाषण दिया–

''बरसों पहले हमने किस्मत से एक बाजी लगाई थी, एक इकरार किया था, अब वह वक्त आ पहुँचा है, जब पूरी तरह से नहीं या जितना चाहिए उतना तो नहीं, फिर भी काफी हद तक हम उस वायदे को पूरा करेंगे। जब आधी रात का गजर बजेगा, जब सारी दुनिया सोयी होगी, हिंदुस्तान नयी जिंदगी और आजादी हासिल करेगा। इतिहास में एक वक्त आता है, जब हम पुरानी जिंदगी को छोड़कर नयी जिंदगी में पैर रखते हैं, जब एक युग का अंत होता है और किसी मुल्क की आत्मा बहुत दिनों तक दबी रहने के बाद बोल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उठती है। इस अहम मौके पर यह मुनासिब है कि हम हिन्दुस्तान और उसकी जनता और उससे भी बढ़कर मानवता की खिदमत में अपने को समर्पित करने का संकल्प करें।

...यह आगे वाले दिन हमारे लिए आराम करने या सुस्ताने के दिन नहीं हैं, बल्कि लगातार काम करने के लिए हैं, जिससे हम उन प्रतिज्ञाओं को, जो हमने इतनी बार की हैं, और उस प्रतिज्ञा को जो आज करने जा रहे हैं, पूरा कर सकें। हिन्दुस्तान की सेवा का मतलब करोड़ों लोगों की सेवा है, जो तकलीफ में हैं। इसका अर्थ है कि तरक्की करने के बराबर-बराबर मौके मिलें। हमारी पीढ़ी के एक सबसे बड़े आदमी की यह ख्वाहिश रही है कि कोई भी दुखी न रहे। हो सकता है कि यह हमारी ताकत के बाहर की बात हो, लेकिन जब तक लोगों की आँखों में आँसू हैं और लोग तकलीफ में हैं, तब तक हमारा मकसद पूरा नहीं होगा।

...हमें आजाद हिन्दुस्तान की इमारत तामीर करनी है, जिसमें उसके बच्चे रह सकें। श्रीमान, आपकी इजाजत से मैं यह प्रस्ताव पेश करता हूँ-

(1) इस अवसर पर आधी रात का आखिरी गजर बजने के बाद संविधान सभा के सभी उपस्थित सदस्य यह शपथ लें-

इस पावन अवसर पर, जबकि हिन्दुस्तान की जनता ने अनेक दुख झेलने और त्याग करने के बाद स्वतंत्रता प्राप्त कर ली है, मैं-हिन्दुस्तान की संविधान सभा का सदस्य, अत्यंत विनयपूर्वक हिन्दुस्तान और उसकी जनता की सेवा के प्रति अपने को इस उद्देश्य से समर्पित करता हूँ, जिससे कि यह प्राचीन देश संसार में अपना उचित स्थान ग्रहण करे और विश्व में शांति स्थापित करने और मानव जाति के कल्याण में पूरी तरह और स्वेच्छापूर्वक अपना योगदान दे सके।

(2) जो सदस्य इस अवसर पर उपस्थित नहीं हैं, वे यह शपथ (ऐसे शाब्दिक परिवर्तनों के साथ जैसाकि सभापति महोदय निश्चित करें) तब लें, जब वे इस सभा के अधिवेशन मे अगली बार उपस्थित हों।''

प्रधानमंत्री नेहरू ने राष्ट्र के नाम संदेश में कहा-

''नियत दिवस आ गया है। यह नियत दिवस जिसे भाग्य ने निश्चित किया था। और आज भारत फिर लम्बी नींद और कोशिशों के बाद जागा है और शक्तिशाली, मुक्त और स्वतंत्र हुआ है।''

करोड़ों किसानों और मजदूरों को भी उन्होंने इन शब्दों में सम्बोधित किया-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"भविष्य हमें बुला रहा है, हम कहाँ जायेंगे और हमारा क्या प्रयत्न होगा? हमारा प्रयत्न होगा साधारण मनुष्य को, भारत के किसानों और मजदूरों को स्वतंत्रता और समान अवसर दिलाना, एक समृद्ध जनसत्तात्मक और प्रगतिशील राष्ट्र का निर्माण करना और ऐसी सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संस्थाओं की रचना करना जिससे कि प्रत्येक स्त्री-पुरुष को न्याय और जीवन की पूर्णता प्राप्त हो सके।"

स्वतंत्र भारत की बागडोर संभालते ही उनकी सरकार को कड़ी चुनौतियों से जूझना पड़ा। साम्प्रदायिक आधार पर देश का बँटवारा तो हो गया किंतु साम्प्रदायिक समस्या का समाधान नहीं हुआ था। परिणामस्वरूप कट्टरवादी उन्माद तथा हैवानियत से भरी रक्तपात की घटनाएँ हुईं। भारी संख्या में शरणार्थियों को भारत और पाकिस्तान की सीमाओं को पार करना पड़ा। एक ओर जहाँ आजादी की खुशियाँ मनाई जा रही थीं वहीं दूसरी ओर सीमाओं पर मारकाट मच रही थी। लोग एक-दूसरे के खून के प्यासे हो रहे थे। लाखों लोग मारे गये, लाखों घायल हुए। कितने ही लोग अपने परिवारों से बिछुड़ गये। शरणार्थियों के झुण्ड के झुण्ड मौत सिर पर लिए दोनों देशों के आर-पार आ-जा रहे थे। दंगे रुकने का नाम नहीं ले रहे थे।

देश में शांति व्यवस्थ बनाये रखने के लिए नेतागण एक स्थान से दूसरे स्थान पर भागे हुए फिर रहे थे। शांति की अपील का कोई असर दिखाई नहीं दे रहा था।

गांधीजी दंगा पीड़ितों और दीन-दुखियों की देखभाल बंगाल में कर रहे थे। भारत विभाजन का उन्हें बहुत दुख था और इसलिए वह आजाद भारत की खुशियाँ भी न मना सके।

नेहरूजी दिल्ली में थे। उन्हें सूचना मिली कि कनॉट प्लेस क्षेत्र में दंगा फैल गया है। वह तुरंत वहाँ पहुँचे तो देखा कि कुछ असामाजिक तत्व एक दुकान को लूट रहे हैं। हजारों की भीड़ तमाशाई बनी हुई थी। उन्हें रोकने का साहस कोई नहीं जुटा पा रहा था।

नेहरूजी के हाथ में प्राय: एक छड़ी रहती थी। उन्होंने आव देखा न ताव, और पिल पड़े दंगाइयों पर। फिर क्या था? प्रधानमंत्री नेहरू को देखते ही दंगाई कुछ ही पलों में नौ दो ग्यारह हो गये। यह था देश का रत्न जवाहर जो बिना अपनी जान की परवाह किए भारत की रक्षा के लिए मैदान में अकेले ही कूद पड़ा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भारत के विभाजन और हिंसा में मारे गए लोगों के दुख का बोझ महात्मा गांधी और नेहरूजी दोनों के मन में था। कई महीने बीत जाने पर भी दंगे रुकने का नाम नहीं ले रहे थे। गांधीजी ने आमरण अनशन की घोषणा कर दी।

कई दिन उपवास करने के बाद उनकी हालात बिगड़ गई। तब नेहरूजी डॉ. राजेन्द्र प्रसाद तथा बड़े-बड़े लगभग 100 नेताओं को लेकर अनशन तुड़वाने की प्रार्थना लेकर उनके पास गये। गांधीजी ने जवाहर की प्रार्थना मान ली और अनशन तोड़ दिया।

राष्ट्रपिता के उपवास तोड़ने पर नेहरूजी ने मुस्कराते हुए गांधीजी से कहा, ''देखिये मैं आज उपवास कर रहा था। अब मुझे समय से पहले ही अपना उपवास तोड़ देना पड़ेगा।''

बापू का प्रेम भी नेहरूजी पर पुत्र के समान था। प्रसन्न होकर गांधीजी ने नेहरूजी के पास ये पंक्तियां लिखकर भिजवाई–

''चिरंजीव जवाहर! उपवास छोड़ो, बहुत वर्ष जिओ और हिंद के जवाहर बने रहो।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

9

बापू का बलिदान

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी सत्य और अहिंसा के पुजारी थे। मन-कर्म-वचन से पूर्ण अहिंसावादी। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' में वह विश्वास करते थे। सारा विश्व ही उनके लिए परिवार के समान था। जाति, धर्म, सम्प्रदाय से ऊपर उठकर वह एक महामानव थे। दया, करुणा, भ्रातृभाव, परोपकार, सेवा आदि सद्गुणों से सुसज्जित इंसान ने भारत की पुण्य धरा पर जन्म लेकर भारतवासियों को गौरवान्वित किया।

भारत का बँटवारा उनके दिल के दो टुकड़े हो जाने पर समान था। ऐसा महसूस करना किसी अन्य महामानव या समान धर्म या किसी बाद के कूपमंडूकतापूर्ण विचारों से घिरे व्यक्ति के लिए संभव नहीं था।

30 जनवरी, 1948 की शाम। समय 5 बजे। बापू दिल्ली में प्रायः बिड़ला हाउस में प्रवास करते थे। वे अपने कक्ष से प्रार्थना सभा-स्थल की ओर कदम बढ़ा रहे थे। उनके दांए-दांए उनकी दो पौत्रियाँ, जिनके कन्धों पर हाथ रखकर जैसे ही सभा-स्थल पर पहुँचे तभी दर्शनार्थी भीड़ को चीरता हुए एक युवक उनके सामने आया। श्रद्धावनत होकर बापू को प्रणाम किया और यकायक पिस्तौल निकालकर उन पर तीन गोलियाँ दाग दीं। बापू का सीना छलनी कर दिया।

बापू 'हे राम' का उच्चारण करते हुए धरती पर गिर पड़े।

चारों ओर हाहाकार मचने से दर्शनार्थी घबरा गये। इस अनहोनी से आतंक छा गया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निर्मम हत्यारे द्वारा गोली मार दिये जाने की खबर पं. जवाहरलाल नेहरू तक पहुँची तो उन्हें एकदम गहरा सदमा लगा। वे किंकर्तव्यविमूढ़ हो गए। किसी प्रकार अपने को सँभालते हुए वह बिड़ला भवन पहुँचे। बापू को चिरनिद्रा में लीन देख देश का जवाहर फफक-फफककर रो पड़ा। पं. मोतीलाल नेहरू के निधन से उनके सिर से पिता का साया उठ गया था, आज फिर से उनका मानस और राजनीतिक पिता उनसे अलविदा कह गया।

गांधीजी की मृत्यु पर जवाहरलाल नेहरू ने अपने संदेश मे कहा–

''मित्रो और साथियो! हमारे जीवन से प्रकाश जाता रहा और सब तरफ अँधेरा छा गया है। मैं नही जानता, मैं आपसे क्या कहूँ। शायद मेरा नेता, जिन्हें हम बापू कहते थे, जो राष्ट्रपिता थे, अब नहीं रहे। शायद मेरा ऐसा कहना गलत है। फिर भी हम उन्हें अब नहीं देख पायेंगे, जैसाकि हम उन्हें बहुत वर्षों से देखते आए थे। उनके पास दौड़कर सलाह लेने या उनसे सांत्वना पाने के लिए हम न जा सकेंगे। यह एक भयानक आघात है, केवल मेरे लिए ही नहीं, बल्कि इस देश के करोड़ों लोगों के लिए भी।''

कुछ पल रुककर उन्होंने फिर कहा–''मैंने कहा कि प्रकाश जाता रहा, क्योंकि वह प्रकाश, जिसने इस देश को आलोकित किया, कोई साधारण प्रकाश नहीं था। जिस प्रकाश ने इस देश को अनेक वर्षों से आलोकित किया है, वह भविष्य में भी अनेक वर्षों तक इस देश में दिखाई देगा और दुनिया इस देखेगी तथा वह यह अनगिनत हृदयों को शांति प्रदान करेगा।''

बापू के बगैर नेहरूजी अकेला रह गए। जवाहर ने अब बापू की भाषा बोलना शुरू कर दीं। शांति और सद्भाव की भाषा। गौतम बुद्ध, महावीर जैन, गुरुनानक, विश्व शांति की भाषा, जिसे बापू बोला करते थे। जिस जवाहर की भाषा सिंह की दहाड़ थी, उत्साहपूर्ण ललकार थी अब उनकी भाषा में विश्वबंधुत्व और सहअस्तित्व की पुकार थी।

साबरमती का संत दुनिया को सत्य और अहिंसा की राह दिखाकर चला गया और जाते-जाते अपनी वादी दे गया अपने प्रिय जवाहर को।

महात्मा ने नेहरूजी के लिए कहा भी था–''वह कहता है कि मेरी भाषा उसकी समझ में नहीं आती। वह यह भी कहता है कि उसकी भाषा मैं नहीं समझता यह सही हो या न हो, किंतु हृदयों की एकता में भाषा बाधक नहीं होती। और मैं जानता हूँ जब मैं चला जाऊँगा, तब वह मेरी ही भाषा बोलेगा।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

10

आधुनिक भारत के निर्माता

15 अगस्त को देश स्वाधीन हुआ हालाँकि भारत को एक पृथक् स्वतंत्र राष्ट्र पाकिस्तान को अलग कर देश के अंग-भंग की भारी कीमत चुकानी पड़ी थी। भारत ने वायसराय माउंट बेटन को प्रथम गवर्नर-जनरल के रूप में स्वीकार किया। स्वाधीन भारत के प्रथम प्रधानमंत्री, जन-जन की आशा-आकांक्षा और राष्ट्र की अस्मिता के प्रतीक पण्डित जवाहरलाल नेहरू के समक्ष इस समय विषम समस्याओं का पारावार लहरा रहा था। सम्प्रदायिक हिंसा ने देश के वातावरण को पहले ही बुरी तरह विषाक्त कर रखा था। पाकिस्तान बनने से वहाँ हिन्दू जनता और भारत की विशाल मुस्लिम आबादी स्वयं को पूरी तरह असुरक्षित अनुभव करने लगी थी। दोनों साम्प्रदायों के असामाजिक तत्वों ने अस्थिर प्रशासन का लाभ उठाकर बड़े पैमाने पर लूटमार, हत्या बलात्कार आदि जघन्य कृत्य कर मानवता के इतिहास में एक काला, शर्मनाक पृष्ठ जोड़ा। ऐसी स्थिति में भारत और पाकिस्तान से दोनों धर्मों के लाखों अनुयायियों की अदला-बदली अनिवार्य हो गई। साम्प्रदायिक धर्मांधता के शिकार, विपत्तिग्रस्त लगभग एक करोड़ विस्थापितों को अपने यहाँ आश्रय और काम देना बड़ा जटिल और विकट कार्य था। फिर मुस्लिम कट्टरपंथी तत्वों से बुरी तरह लुटपिट कर मन में तिक्तता लिए सख्ती बरतने पर ही दिल्ली में हिंसात्मक कार्यवाहियों का वह सबसे घिनौना दौर समाप्त हुआ। पाकिस्तान बनने पर लाखों हिन्दू परिवार अपनी चल-अचल संपत्ति छोड़कर प्राण बचाने भारत आए। ऐसे लाचार और संतप्त पैंसठ लाख से अधिक परिवारों को आवास, रोजगार जुटाने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की समस्या बहुत कठिन थी पर पण्डित नेहरू धैर्य के साथ इन संकटग्रस्त नर-नारियों की करुण कथा को सुनते और घर-बार, काम-व्यापार, चिकित्सा आदि सुविधाएँ उपलब्ध कराने का आश्वासन देते। उन दिनों पण्डितजी के घर पर हर समय विपन्न हजारों शरणार्थियों की भीड़ लगी रहती थी। कुछ को तो निराश्रित देख उन्होंने अपने घर में ही शरण दे दी। माउण्टबेटन के सेक्रेटरी कैम्पवेल जानसन ने नेहरूजी के विषय में उन दिनों लिखा था–"आज सभ्यता और मानवता की चेतना में विश्वास जवाहरलाल को देखकर होता था। साम्प्रदायिकता के व्यापक उन्माद के बीच वे लगभग अकेले खड़े थे। उनके चारों ओर या तो व्यक्तियों के बिछाए हुए षड़यंत्रों के जाल थे अथवा उन्हें घेरकर समूह का पागलपन उमड़ रहा था, किन्तु तब भी उनके मुख से जो भी उद्गार निकलते थे वे दया और उदारता के उद्गार थे, बुद्धि और विवेक के उद्गार थे।" शरणार्थियों को पुनर्स्थापित करने के लिए सरकार द्वारा नई बस्तियाँ, मुआवज़े के रूप में करोड़ों रुपया बाँटा गया। उनके दुःख-दर्द बांटने और वहाँ की व्यवस्था देखने नेहरूजी स्वयं हिन्दू-सिखों के शिविरों में जाते थे। वे सताए हुए मुसीबतजुदा मुसलमानों को भी मुकम्मिल सुरक्षा के लिए आश्वस्त करते थे। भारत देश सचमुच सौभाग्यशाली था कि उसके पास जवाहरलाल जैसे कद का नेता था जिसने हिम्मत, दृढ़ता और सच्ची धर्मनिरपेक्ष भावना से इतनी जटिल शरणार्थी समस्या का निपटारा किया।

अँग्रेज जब भारत से गए, लगभग छह सौ देशी रियासतों को स्व-निर्णय के लिए स्वतंत्र छोड़ गए। लौह पुरुष सरदार पटेल भारत के गृहमंत्री थे। देशी रियासतों का विभाग भी उन्हीं के पास था। देश की अस्थिर स्थिति में देशी नरेशों की महत्त्वाकांक्षाएँ बढ़ गई थीं। वे आए दिन अपने अंतर्राष्ट्रीय और विरोधी तेवर दिखा रहे थे। पर विलक्षण प्रतिभा के धनि सरदार पटेल ने अपनी सूझ-ब्रूझ, नीतिपरायणता और व्यवहार-कुशलता के बल पर अधिकांश राजाओं को भारतीय संघ में अपनी रियासतें विलीन करने को सहमत कर लिया। मुस्लिमबहुल और पाकिस्तान की सीमा के निकट कश्मीर राज्य कोई भी निर्णय शीघ्र नहीं कर पाया। पाकिस्तान तो मौके की ताक में था ही। उसके उकसाने पर हजारों कबीलाइयों ने कश्मीर पर आक्रमण बोल दिया। महाराजा ने भारतीय संघ में मिलने का तत्काल फैसला कर लिया। हवाई जहाज से फौजें उतारकर भारत सरकार ने पाकिस्तानी आक्रमण से कश्मीर की रक्षा की। इस दुर्निवार सैनिक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
कार्यवाही के लिए पण्डित नेहरू ने गांधीजी का आशीर्वाद भी प्राप्त कर लिया था।

उधर हैदराबाद चारों ओर से भारतीय संघ से घिरा हुआ एक हिन्दूबाहुल्य राज्य था। वहाँ निजाम स्वतन्त्र राज्य के सपने देख रहा था। भारत सरकार ने समय पर पुलिस कार्यवाही कर उसे भारतीय संघ में सम्मिलित कर लिया। इसी प्रकार जूनागढ़ का भी विलीनीकरण कर लिया। पण्डित नेहरू की राजनीतिज्ञता और सरदार पटेल की व्यवहार बुद्धि से ही भारतीय देशी रियासतों की जटिल समस्या का समाधान सम्भव हुआ।

पर देश की साम्प्रदायिक अवस्था अभी भी सरकार के लिए बहुत बड़ा सरदर्द बनी हुई थी। प्रशासनिक स्तर पर पण्डित नेहरू इस विकराल दैत्य से जूझ रहे थे। महात्मा गांधी हृदय परिवर्तन और सौहार्द का नैतिक और भावनात्मक संदेश लेकर प्राणान्तक संघर्ष में संलग्न थे। उन्होंने घोषणा की कि जब तक दिल्ली की सड़कों पर सब मुसलमान भाई सहज भाव से नहीं घूमने लगेंगे, सभी सम्प्रदाय के बंदे गले नहीं मिल जाएँगे, तब तक वे अन्न-जल ग्रहण नहीं करेंगे। मर्माहत पण्डित नेहरू ने भी अनशन प्रारंभ कर दिया किन्तु गांधीजी के विशेष आग्रह पर त्याग दिया। स्थिति चिन्तनीय बनी हुई थी। कट्टरपन्थी तत्व प्रतिक्रियावादी असामाजिक शक्तियों को बढ़ावा दे रहे थे। गांधीजी के लिए चिंतित हो अधिक सुरक्षा बल का आग्रह करने पर उन्होंने कहा- ''यदि उन्हें हत्यारों के हाथों मरना है तो बिना क्रोध और बिना भय के उन्हें मरना चाहिए। वे ईश्वर के हाथों में है।'' अन्ततः देश जिस भयावह आशंका से ग्रस्त-सन्त्रस्त था वही होकर रहा। उस सारे विषैले प्रचार और चरित्रहीन की परिणति राष्ट्रपिता बापू की निर्मम हत्या से हुई– सच्ची इन्सानियत का पाठ पढ़ाते हुए एक और मसीहा ने बलि दे दी। दुःसंवाद सुनते ही पण्डित नेहरू बुरी तरह हतप्रभ, स्तम्भित रह गए। चरम वेदना की साकार प्रतिमूर्ति वे शव के पास झुककर बैठ गए। तीव्र मानसिक हलचल और उद्वेलन के बीच संघर्ष काल का वह लम्बा दौर चलचित्र की भांति उनके आगे गुजर गया होगा जब बापू की वरद छाया में बढ़ते हुए उन्होंने प्रबल प्रतापी ब्रिटिश सत्ता का डटकर साहसपूर्वक मुकाबला किया था। उनकी असाधारण विशेषताओं से प्रभावित होकर गांधीजी ने कहा था– ''लोग कहते हैं कि मेरे और जवाहरलाल के बीच तनाव आ गया है और हम लोग एक दूसरे से दूर जा पड़े हैं! हम लोगों को एक दूसरे से दूर करने के लिए मतभेद काफी नहीं है। जब

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

से हम सहकर्मी हुए, मतभेद तभी से रहे हैं और तब भी जो बात मैं वर्षों से कहता आया हूँ उसे आज फिर दोहराना चाहता हूँ कि मेरे उत्तराधिकारी राजाजी नहीं होंगे। उत्तराधिकारी जवाहरलाल होगा। जवाहरलाल कहता है कि मेरी भाषा उसकी समझ में नहीं आती और न मैं उसकी भाषा समझता हूँ। मगर भाषा न मालूम हो तब भी दो दिल मिलते ही हैं और मैं जानता हूँ कि मेरे मरने के बाद जवाहरलाल मेरी भाषा में बात करेगा।''

गांधीजी के सम्पर्क में आने पर उनके सात्विक जीवन और नैतिक आदर्शों का जवाहरलाल नेहरू पर इतना प्रभाव पड़ा कि आमिष भोजन, धूम्रपान आदि का उन्होंने सर्वथा परित्याग कर दिया। भगवद्गीता का नियमित अध्ययन करने लगे और साध्य के साथ-साथ साधन की पवित्रता पर भी उनकी गहरी आस्था हो गयी। उनका वह आध्यात्मिक गुरु आज उनसे विदा हो गया था। भारी मन और रूधी वाणी में राष्ट्र के नाम प्रसारित संदेश में नेहरूजी ने कहा- ''हमारी जिंदगी में जो रोशनी थी, वह बुझ गयी और अब चारों ओर अंधेरा-ही-अंधेरा है। मैं समझ नहीं पाता कि आपसे क्या कहूँ और कैसे कहूँ। हमारे प्यारे नेता, जिन्हें हम बापू कहते थे और जो हमारे राष्ट्रपिता थे, अब नहीं रहे। शायद मेरा ऐसा कहना बिल्कुल सही नहीं है। मगर तब भी हम उन्हें उस रूप में तो नहीं ही देख सकेंगे, जिस रूप में इतने वर्षों से हम उन्हें देखने के आदी रहे हैं। अब सलाह-मशविरे के लिए उनके पास दौड़कर जाने की बात खत्म हो गयी। अब धीरज और ढांढ़स बंधाने को वे मुझे नहीं मिलेंगे। यही चोट भयानक हैं और यह चोट केवल मुझे ही नहीं इस देश के करोड़ों लोगों को लगी है और मैं या कोई और शख्स आपको जो भी सलाह देगा, उससे इस चोट के दर्द में कमी नहीं आएगी।''

जब कीर्तिशेष महात्मा गांधी का शव चिता पर रखा जाने लगा, जवाहरलाल ने एक श्रद्धावान् शिष्य के रूप में उनके पैर का चुम्बन किया और जब उनकी अस्थियां चुनी जा रही थीं, जवाहरलाल ने उन पर पुष्प चढ़ाए और कहा- ''बापूजी ये फूल हैं, जिन्हें आज तो मैं आपकी अस्थियों और भस्म पर चढ़ा रहा हूँ मगर कल से ये पुष्प कहाँ चढ़ाऊँगा ।''

लेकिन जवाहरलाल को तो अभी मिलों चलना था, बहुत से वादे पूरे करने थे। देश में शांति स्थापना सर्वोच्च प्राथमिकता थी। साम्प्रदायिक संस्थाओं पर तुरंत प्रतिबंध लगाया गया। ऐसे तत्वों को निरुत्साहित करने के लिए अनेक कड़े कदम उठाए गए। विभाजन के बाद देश की सारी व्यवस्था सारा तंत्र

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

छिन्न-भिन्न हो गया था। सेवाओं में सब जगह संकीर्ण साम्प्रदायिकता का विष व्याप्त हो गया था। अनेक उच्च पदाधिकारी पाकिस्तान चले गए थे। देश को लोकतंत्रीय शासन देने के लिए प्रशासनिक ढ़ाँचे में सुधार परम आवश्यक था। देश की आर्थिक स्थिति पूरी तरह जर्जर हो गई थी। हर दिन की उथल-पुथल से उद्योग-धन्धे चौपट पड़े थे। देश की खाद्य स्थिति में सुधार कर और उसे आत्मनिर्भर बनाकर करोडों लोगों की भुखमरी, दारुण दीन-हीन अवस्था को ठीक करने के लिए देश को सुनियोजित विकास में ढालना बहुत आवश्यक था। भारत कृषि व्यवस्था पर आधारित देश है। सिंचाई की समुचित व्यवस्था हेतु बड़े-बड़े बांध बनाने जरूरी थे। शिक्षा व्यवस्था को भी नये दायित्व और युग की चुनौतियों के अनुरूप बनाना था। सैन्य संगठन में भी तात्कालिक सुधार एक अनिवार्यता थी। अभी तक पिछड़े पददलित देश के रूप में गिरने जाने वाले देश भारत को विश्व बिरादरी में सम्मानपूर्ण स्थान दिलाना था। सब से बढ़कर नेहरूजी को अपने सपने को साकार रूप देना था। भारत को स्वस्थ, सबल, उन्नत और आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाना था। भारत के सामने चारों ओर विषम कठिनाइयों का जाल बिछा हुआ था, जिससे मुक्ति वांछनीय थी।

पण्डित नेहरू ने अपना सर्वोपरि लक्ष्य भारत का आर्थिक पुनरुत्थान निर्धारित किया, देश का योजनाबद्ध विकास जिसकी पहली शर्त थी। उन्होंने स्वतंत्रता प्राप्ति के पहले ही महसूस किया था कि बिना सुव्यवस्थित योजना के न तो हमारा आर्थिक पुनरुद्धार हो सकता है और न हम प्रगतिशील अभिनव जीवन की कल्पना कर सकते हैं। रूस ने क्रांति के बाद पंचवर्षीय योजनाओं के द्वारा देश और समाज की काया पलट की थी। 1950 में योजना आयोग की स्थापना इसी हेतु की गयी। प्रथम पंचवर्षीय योजना में देश की विषम खाद्य समस्या को हल करने के लिए कृषि पर अधिक ध्यान दिया गया। आधुनिक कृषि यंत्रों से बंजर भूमि को उपजाऊ बनाया गया, अधिक पैदावार के लिए बांध, नहर, नलकूप आदि सिंचाई के नए साधन विकसित किए गए। राष्ट्रव्यापी कृषि विस्तार सेवा की स्थापना की गई। बिजली की सुविधाएँ किसान को प्रदान की गईं। कुटीर उद्योग धन्धों को प्रोत्साहन दिया गया तथा सहकारी आंदोलन में गति लायी गयी। परिणामस्वरूप देश की राष्ट्रीय आय में आशातीत वृद्धि हुई। इसी अवधि में रेल के इंजन, डिब्बों के निर्माण के लिए कारखाने खोले गए। बंगलोर के कारखाने में वायुयान तथा विशाखापट्टनम के कारखाने मे जलपोत आदि का निर्माण आरंभ हुआ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अगली योजनाओं में बुनियादी और भारी उद्योग के विकास पर विशेष बल दिया गया। रासायनिक खाद, इस्पात, बिजली, सीमेंट, कोयला, कपड़ा, चीनी आदि उद्योगों की खूब प्रगति हुई। खाद्यान्न के लिए भारत के अन्य देशों पर निर्भर रहने से नेहरूजी सबसे अधिक चिंतित थे। योजनाओं से जो कृषि क्रांति हुई उसका ही फल था कि देश के अन्न भण्डार भर गये, खाद्यान्न के क्षेत्र में देश पूरी तरह आत्मनिर्भर हो सका। देश की विकास प्रक्रिया में वे निजी क्षेत्र तथा सार्वजनिक क्षेत्र दोनों का समान महत्त्व आंकते थे। दोनों ही क्षेत्रों में उनके समय में पर्याप्त प्रगति हुई।

नेहरूजी ने जनकल्याण और देश के आर्थिक विकास के लिए जो अनेक उपाय किए, उनमें कई बड़े-बड़े बांधों का विशेष उल्लेखनीय स्थान है– इनमें भाखड़ा नांगल, दामोदर घाटी योजना, हिन्द परियोजना, चम्बल घाटी परियोजना, हीराकुण्ड परियोजना सम्मिलित हैं। इन बृहदाकार परियोजनाओं से कोटि-कोटि तृषित मानव तथा बंजर धरती की प्यास बुझी और सम्पन्नता की प्रतीक फसलें लहलहाने लगीं। बढ़ती आबादी तथा खेतों के लिए जरूरतमंद किसानों को बिजली मिली। देश समृद्धि और खुशहाली के मार्ग पर तेजी से चल पड़ा। देशवासियों के जीवन स्तर को ऊँचा उठाने वाले बांधों, कल-कारखानों, विद्युत केन्द्रों को नेहरूजी देश के नए तीर्थों के नाम से पुकारते थे। नेहरूजी ने देश को आर्थिक दृष्टि से मजबूत करने का जो अभियान चलाया उसके अन्तर्गत कितने ही बड़े-बड़े औद्योगिक प्रतिष्ठान स्थापित किए गए। हिन्दुस्तान स्टील लिमिटेड, सिंदरी कारखाना, हिन्दुस्तान मशीन टूल्स कारखाना, अखबारी कागज, पेन्सिल, एयरक्राफ्ट आदि के संस्थान विशेष महत्त्वपूर्ण हैं। बहुत दिनों से चली आ रही देश की आवश्यकता की इनसे पूर्ति हुई। विदेशी मुद्रा बचाने में भी देश को बहुत मदद मिली।

स्वाधीन भारत को पण्डित नेहरू की विशिष्ट देनों में उनके द्वारा निर्धारित और संचालित विदेश नीति का विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान है। स्वतंत्र होने के चार दशक बाद भी भारत ने पण्डित नेहरू द्वारा निर्दिष्ट मार्ग का परित्याग नहीं किया है न कभी उस पर किसी भी स्तर पर पुनर्विचार हुआ है। नैतिक और व्यावहारिक दोनों दृष्टियों से देश के हित में नेहरू द्वारा प्रतिपादित नीति ही सर्वोत्तम विकल्प है। अध्ययनकाल से विदेशी गतिविधियों में पण्डितजी की गहरी अभिरुचि थी। विश्व शक्तियों की साम्राज्यवादी लिप्सा के वे आजीवन कड़े आलोचक रहे। भारत की विदेश नीति को अपनी मान्यता और आदर्शों के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुरूप ढालने के लिए प्रधानमंत्री बनाने पर उन्होंने विदेश विभाग अपने पास ही रखा। द्वितीय विश्व युद्धोत्तर काल में विदेश नीति का निर्धारण और संचालन बहुत सूझबूझ और राजनीतिज्ञता का काम था। दुनिया दो गुटों में बंट गयी थी। हर गुट नव स्वाधीनता प्राप्त देशों को अपनी ओर खींचना चाहता था। पराधीन जनता के स्वातंत्र्य संघर्ष के सेनानी होने के नाते पूँजीवादी साम्राज्यवादी ताकतों के मनसूबों को वे खूब समझते थे। इन शोषित-पीड़ित देशों और जातियों के वे हमेशा पक्के हिमायती रहे। अंतरिम सरकार के प्रधानमंत्री की हैसियत से विदेश नीति की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए राष्ट्र के नाम एक संदेश में नेहरूजी ने घोषणा की थी– ''हम यथासंभव शक्ति गुटों से अलग रहने की कोशिश करेंगे। इसी कारण पहले दो विश्वयुद्ध हो चुके हैं और जो पुनः एक बड़ी तबाही की ओर दुनिया को ले जा सकते हैं। हमारा विश्वास है कि शांति और स्वतंत्रता अविभाज्य है।... पराधीन देशों और उपनिवेशों की स्वतंत्रता में हमें दिलचस्पी हैं। हम जातिवाद की नाजी विचारधारा के गहरे विरोधी है।... आज की दुनिया प्रतिद्वन्द्विता और घृणा तथा आंतरिक संघर्षों के बावजूद अधिक सहयोग और विश्व संघ के निर्माण की ओर बढ़ रही है। इस 'एक विश्व' के लिए स्वतंत्र भारत प्रयास करेगा। वहाँ ऐसी दुनिया के लिए स्वतंत्र लोगों का स्वतंत्र संगठन होगा और कोई एक वर्ग या समूह दूसरे का शोषण नहीं करेगा।'' मानव गरिमा और प्रतिष्ठा की रक्षा करने वाली अपनी इसी विदेश नीति के अनुरूप उन्होंने पंचशील, सहअस्तित्व, निःशस्त्रीकरण आदि रचनात्मक सिद्धान्तों पर जीवनपर्यन्त बल दिया।

स्वाधीन भारत की आवश्यकता के अनुरूप सेनाओं का पुनर्गठन, उन्हें आधुनिक शस्त्रास्त्र मुहैया कराना, सामरिक सामग्री के कारखाने देश में ही खड़े करना, विशेष कीर्तिमान स्थापित करने वाले देश के जाँबाज प्रहरियों को अलंकृत करना आदि सभी महत्त्वपूर्ण प्रशासनिक निर्णय नेहरूजी ने लिये। देश के त्वरित वैज्ञानिक विकास के लिए अपने शासन काल में उन्होंने कई राष्ट्रीय वैज्ञानिक प्रयोगशालाएँ स्थापित कीं। अनेक ताप बिजलघरों का निर्माण हुआ। देश की उभरती प्रतिभा और मनीषा को तकनीकी क्षेत्र में अपनी निपुणता और विशेषज्ञता को प्रदर्शित करने का अवसर मिला। जनकल्याणकारी कार्यों में अणुशक्ति का उपयोग करने के लिए एक आयोग की स्थापना की गयी। इस कार्यक्रम से गहरा लगाव होने के कारण प्रधानमंत्रित्व काल में अणुशक्ति विभाग सदैव नेहरूजी ने अपने पास रखा। पण्डित नेहरू के मतानुसार युग की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आवश्यकता के अनुरूप ऐसी शिक्षा-दीक्षा सरकार की बहुत बड़ी जिम्मेदारी थी जिससे आजाद भारत में बालकों का विकास इस ढंग से हो कि वे वयस्क होने पर खुले दिमाग के दायित्वपूर्ण नागरिक बन सकें। इसी उद्‌देश्य से पण्डित नेहरू भारत की शिक्षा पद्धति में परिवर्तन पर बहुत बल दिया करते थे। उनका विशेष आग्रह रूढ़िवादी और परंपराबद्ध चिन्तन के स्थान पर प्रगतिशील वैज्ञानिक चिन्तन को अपनाने पर था। देश की शिक्षा व्यवस्था में अपेक्षित सुधार-संशोधन करने की दृष्टि से उन्होंने शिक्षा विशेषज्ञों के कई आयोग गठित किए। नेहरूजी की मान्यता थी– "शिक्षा का उद्‌देश्य मनुष्य के मन को मुक्त करना है न कि उसे बाँधे हुए चौखटों में बंद करना।" भारत को वे जमाने की चुनौतियों को झेलने में सक्षम-प्रबुद्ध राष्ट्र बनाना चाहते थे। जिसके लिए है सही ढंग की शिक्षा उसका बहुत बड़ा माध्यम है। कलात्मक अभिरुचि और साहित्य चेतना का भारत में सही ढंग से विकास प्रसार हो सके, इसके लिए पण्डित नेहरू के सुझाव पर कई राष्ट्रीय अकादमियों की स्थापना की गयी। सर्वप्रथम सन् 1954 में साहित्य अकादमी की स्थापना हुई। यह साहित्य क्षेत्र की सिद्धहस्त प्रतिभाओं को पुरस्कृत सम्मानित कर उन्हें प्रोत्साहन देती है। देश की संविधान स्वीकृत सब भाषाएँ इसके कार्यक्षेत्र के अन्तर्गत आती है। ललित कलाओं के संरक्षण तथा समुचित विकास के लिए ललित कला अकादमी की स्थापना भी की गयी। चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला एवं अन्य कला रूपों के क्षेत्र में यह विशेष अध्ययन तथा अनुसंधान को बढ़ावा देती है।

पण्डित जवाहरलाल नेहरू का उल्लेखनीय और स्थायी योगदान, जिससे देश की लोकतंत्रीय व्यवस्था की नींव गहरी और मजबूत बनाना, भारत के लिए एक गणतंत्रात्मक संविधान का निर्माण करना है। इस संविधान के अंतर्गत विश्व के सबसे बड़े जनतंत्रीय देश के चुनाव सफलतापूर्वक सम्पन्न कराना उनकी एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि मानी जायगी। सचमुच यह बड़ा ऐतिहासिक प्रयोग था। पूरी दुनिया की आँखें इसकी ओर लगी हुई थीं। इतनी बड़ी संख्या में किसी देश की आम जनता ने अपने प्रतिनिधि चुनने के लिए कभी मतदान में भाग नहीं लिया। सन् 1952 के चुनाव में कुल सत्रह करोड़ तीस लाख मतदाता थे जबकि 1937 में मात्र तीन करोड़ लोगों को ही मताधिकार प्राप्त था। अपने जीवन काल में पण्डितजी ने तीन आम चुनाव सफलतापूर्वक सम्पन्न कराकर देश को जनतंत्रीय शासन व्यवस्था की सुदृढ़ मिति पर स्थापित कर दिया। जीवन मिशन के रूप में उन्होंने अपने सिद्धान्त, उच्च आदर्श और महत्त्वकांक्षाओं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के अनुरूप स्वाधीन भारत का नवनिर्माण करने का अथक प्रयास किया। मानवमात्र का कल्याण उनके जीवन का मूलमंत्र था और अपने इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए वे देश के एक छोर से दूसरे छोर तक जन आह्वान करते घूमते रहते थे। प्रत्येक प्रदेश के विकास में, वहाँ के रीति-रिवाज, सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण में उनकी गहरी दिलचस्पी थी। 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस समारोह में आगत विभिन्न प्रदेशों की मण्डलियों के बीच पण्डितजी उन्हीं की वेशभूषा में सहज भाव से आमोद-प्रमोद आयोजनों में सम्मिलित हुआ करते थे। देहली में उनके निवास स्थान पर प्रातःकाल देश के कोने-कोने से आए हुए सैकड़ों नर-नारी उनसे भेंट कर अपनी शिकायतें, तकलीफें सुनाते थे। उनके निवारण के लिए वे तत्क्षण हिदायतें देते थे। ऐसी ही अगणित सेवाओं और उपलब्धियों का सम्मान करते हुए देश ने 1955 में उन्हें 'भारत रत्न' की सर्वोच्च उपाधि से अलंकृत किया। पर पण्डित नेहरू का व्यक्तित्व-कृतित्व तो इन सम्मानों से कहीं ऊपर था।

पण्डित नेहरू तन-मन से पूर्ण निरोग, एक आत्मानुशासित व्यक्ति थे। उनके जीवन में बेशुमार हलचलें और उतार-चढ़ाव आए। कभी जेल में कभी बाहर, कुछ दिन के लिए भारत में फिर विदेशी दौरों में, अनेक स्वजनों का बिछोह हुआ तरह-तरह की अन्य आपत्तियाँ भी आईं, पर गीता के कर्मयोगी की तरह अविचलित, धैर्यपूर्वक वे अपने कठिन दायित्वों का निर्वाह करते रहे। सदैव स्वस्थ और संतुलित बने रहने के लिए वे योगासानों का नियमित अभ्यास करते थे। फिर भारत की विशाल जनता का उन्होंने अटूट प्यार पाया था। मैत्री-सहयोग का पैगाम लेकन वे विश्वभर में दिन-रात अलग जगाते फिरते थे। इन सब से उन्हें स्वभावतः जबर्दस्त सुकून और ताकत मिलती रही होगी। पर दुनिया की बिरादरी और अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों में नवोदित साम्यवादी, राष्ट्र चीन को प्रवेश दिलाने वाले जवाहरलाल नेहरू को जीवन का सबसे बड़ा धक्का तब लगा, जब कुछ ही समय पहले 'हिन्दी-चीनी भाई-भाई' का का तुमुल उद्घोष करने वाले चीन ने सीमा-विवाद की आड़ लेकर छलपूर्वक सन् 1962 में भारत पर आक्रमण कर दिया। मूल्यों के लिए जीनेवाले भावनाशील पण्डितजी के लिए यह बड़ा कठोर मनस्तापकारी क्षण था। संकट की इस नाजुक घड़ी में पूरे राष्ट्र ने एक मत से उनका साथ दिया। युद्ध में उत्पन्न जटिलताओं और अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों वश चीनी सेना पीछे अवश्य हट गई पर लंबे समय के लिए कड़ुवाहट छोड़ गई। इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना को 'वेश

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बदले वरदान' के रूप में ग्रहण करने का पण्डितजी ने देशवासियों से आग्रह किया। देश को प्रमोद से झकझोरने के लिए ही कदाचित् यह हादसा हुआ था। देश और देशवासियों को भविष्य के लिए सावधान करते हुए औद्योगिक-सामरिक दृष्टि से स्वयं को सुदृढ़ करने पर उन्होंने विशेष बल दिया। पर सब देशी-विदेशी दबावों के बावजूद भारत की गुटनिरपेक्ष नीति में उनकी आस्था तनिक भी डाँवाडोल नहीं हुई।

अपने कर्मशील जीवन में पं. नेहरू ने व्यक्ति, समाज, राष्ट्र की बुनियादी सोच और कार्यशैली का स्तर ऊँचा उठाने के लिए काफी कुछ किया था, पर अभी बहुत करना शेष था। भारत को उत्कर्ष के उत्तुंग शिखर पर पहुँचाने की अनगिनत योजनाएँ उनके दिल-दिमाग को सदैव अधीर करती रहती थीं। समय उतना था नहीं। फिर भी अंतिम क्षण तक पूरी तरह भरा-पूरा और कार्य-संकुल जीवन जीने की उनमें प्रबल वांछा थी। नेहरूजी की अंतिम बिदाई-बेला से पूर्व विश्राम के लिए ख़ुश्चेव ने उन्हें रूस यात्रा के लिए आमंत्रित किया था, पर कर्म साधक वीर जवाहरलाल को विश्रांति कहाँ। कभी कोई बाँध राष्ट्र को अर्पित कर रहे हैं, कभी नवनिर्मित प्रदेश का उद्घाटन कर रहे हैं, कभी साम्प्रदायिक सौहार्द के लिए राष्ट्र के नाम संदेश प्रसारित करा रहे हैं, तो कभी प्रेस कान्फ्रेंन्स, टी. वी. इंटरव्यू आदि में शिरकत कर रहे हैं। पर आखिर यह सब कब तक। शरीर का भी अपना एक धर्म होता है। देहरादून में तीन दिन विश्राम कर 26 मई 1964 को पण्डित नेहरू देहली लौटे थे। उस रात भी सोने से पूर्व कई घंटे तक प्रशासनिक कार्य निपटाते रहे। उन्होंने प्रातः कुछ बेचैनी अनुभव की। एक पुस्तक पढ़ने लगे पर अब महाप्रयाण की घड़ी आ गई थी। 27 मई को राष्ट्र को सर्वतोभावने समर्पित राष्ट्र का वह लाड़ला सपूत करोड़ों स्नेहीजन और अनुयाइयों को बिलखता-मर्माहत छोड़ दिव्य लोक की यात्रा के लिए प्रस्थान कर गया। नहीं, भारत की शानदार विरासत का वह एक अटूट-अविभाज्य हिस्सा बन गए। देश और इतिहास सदैव उन्हें याद करता रहेगा। उन्होंने उम्र की अंतिम पड़ाव में एक बार कहा था, "जो कुछ भी मेरा जीवन शेष है, उसमें मैं अपनी पूरी बची ताकत और क्षमता के साथ भारत के पुनः निर्माण लगा रहूँगा। मैं इस काम को पूरे जोर से तब करते रहना चाहता हूँ, जब तक कि मैं खत्म नहीं हो जाता हूँ और खत्म हो जाने वाली चीजों को ढेर में नहीं फेंक दिया जाता।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

11

युगपुरुष जवाहरलाल नेहरू

"मैं केवल प्रधानमंत्री नहीं हूँ उससे कुछ ज्यादा हूँ। मैं आदमी हूँ, इन्सान हूँ। अक्सर मैं थोड़ी-सी रोशनी पाने के लिए मन-ही-मन संघर्ष किया करता हूँ। मेरी बेचैनी का सबब ये हैं कि मैं समझना चाहता हूँ कि इन्सान को दरअसल होना कैसा चाहिए। मेरी बेचैनी का सबब ये हैं कि मैं सत्य की एक झलक पाना चाहता हूँ और उस सत्य तक पहुँचने का रास्ता पाना चाहता हूँ।"

संयुक्त राष्ट्र के अधिवेशन को संबोधित करते हुए पण्डित नेहरू ने इन शब्दों में जीवन दर्शन की रूपरेखा प्रस्तुत की थी। स्पष्ट लक्षित होता है कि यह किसी राष्ट्र के कुटिल प्रशासक की पाखण्ड प्रवंचनामयी गर्वोक्ति नहीं है वरन् उदात्त, जीवन मूल्यों के प्रति समर्पित, संवेदनशील, युग के महान् राजनीतिज्ञ के अंदर की अकुलाहट है, उसके पारदर्शी मन के सहज उद्‌गार है। जवाहरलाल को विधाता ने प्रियदर्शन, अत्यंत सम्मोहक और प्रभावशाली व्यक्ति का धनी बनाया था। जीवनीकार माइकेल ब्रीचर नेहरूजी के असाधारण व्यक्तित्त्व को रेखाओं में समेटते हुए लिखते हैं– "बोलती हुई-सी आँखें, कभी विचारों से बोझिल या किसी उलझन से सनी हुई, कभी प्रसन्न और आत्मतुष्ट और कभी किसी निश्चय से दृढ़ और तेजयुक्त, उठी और भरी हुई गाल की हड्डियाँ, जो नेहरूजी के दो गुणों का संकेत करती हैं– उनके दृढ़ स्वभाव का और उनकी बौद्धिक जिज्ञासा का, चौड़ा मुँह और रसिकों के से भरे-भरे और जो क्रोध करने पर अक्सर अशोभन रीति से खुल पड़ते हैं। धन्वाकार

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ठुड्डी और लंबी तथा सुकुमार उंगलियाँ उनकी मुस्कान में वशीकरण है और कभी-कभी तो उसके सामने कुछ भी नहीं चलती। उनका चेहरा अण्डाकार है और बगल से देखने पर प्राचीन यूनानियों का-सा, वस्तुतः नेहरू वर्तमान शताब्दी के उन राष्ट्रनायकों में से हैं, जिनकी फोटो बहुत अच्छी आती है। उनके अंदर एक विचित्र आकर्षण शक्ति है, जिसका प्रभाव व्यक्ति और समूह पर समान रूप से पड़ता है। लंबे कद का लाभ उनको नहीं मिला। उनका कद पाँच फीट आठ इंच है, फिर भी उनकी सीधी रीढ़ और संतुलित मुद्रा, उनमें उस शक्ति और यौवन सुलभ सक्रियता का आभास देती है, जिनके लिए- उचित ही है- वे प्रसिद्ध रहे हैं। बढ़ती उम्र के साथ समय की रेखाएँ उनके चेहरे पर पड़ने लगी हैं, पर आज भी उनमें असाधारण कशिश है।...।''

जिन निकटवर्तियों ने एक साथ ही क्रोधावेग में ऊर्जस्वित जवाहर, किसी की व्यथा कथा से द्रवित विगलित जवाहर और विनोद-विलास के क्षणों में उल्लसित-उन्मुक्त जवाहर को देखा है, वे उनकी सहजता, हृदय की विशालता और व्यक्तित्व की विलक्षणता का सही आकलन कर सकते हैं।

पं. जवाहरलाल नेहरू का व्यक्तित्व महान् इतिहास पुरुषों की तरह बहुआयामी था। अतीत में खोकर बिखरे सांस्कृतिक सूत्रों को एक समष्टिगत अर्थ देने वाले, तो कभी अधुनातन वैज्ञानिक विचार दृष्टि को कार्य-व्यवहार में साकार करने वाले, कभी नन्हे बच्चों की किलकारी के बीच संसार की सारी चिन्ता और तकाजों को भुला-बिसरा एक शरारती बालक का रूप धारण करने वाले, तो कभी गंभीरतम समस्याओं से जूझते विश्व रंगमंच के खिलाड़ी की कुशल भूमिका अदा करने वाले- ये सब उनके विविध रंगरूप थे, जिन्होंने उन्हें अनायास लोक मन में अधिष्ठित देव बना दिया था। किसी धर्म विशेष के प्रति आस्था भाव न रखते हुए भी गंगा के प्रति श्रद्धा भाव संजोए, गीता उपनिषद् के तत्व चिंतन को जीवन में अवतरित करने वाले नेहरू ने एक बार अपने लिए स्वीकार किया था- ''पूरब-पश्चिम का एक अजीब गठजोड़, जो हर जगह अजनबी, जिसका घर कहीं भी नहीं।''

वे प्रदेशों, भाषाओं, सम्प्रदायों और मुल्कों की कृत्रिम चारदीवारियों का समूल ढहाना चाहते थे ताकि दुनिया के सब इंसान राग-द्वेष, ऊँच-नीच, जाति, रंग के भेद-भाव भुलाकर एक बेहतर समाज, एक कमनीय, रमणीय संसार की रचना कर सकें। जीवन का मर्म बताते हुए उन्होंने कहा- ''मनुष्य की सबसे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रिय संपत्ति जीवन है। उसे जीने के लिए यह मिलती है किन्तु एक बार मिल जाने पर उसे इस तरह रहना चाहिए कि उस पर भीरुता-तुच्छता का कलंक न लग सके और न वर्षों तक वह बिना उद्‌देश्य की यंत्रणाएँ सहता रहे। वह मरते समय कह सके मैंने अपना सारा जीवन और सारी शक्ति विश्व के कल्याण अर्थात् मानव समाज के उद्धार में लगा दी।''

पण्डितजी विश्व दृष्टि सम्पन्न बिरले राजनीतिज्ञों में से थे। उनकी चित्तवृत्ति आरंभ से ही सदाशय थी। उनका दिल-दिमाग किसी मत, विचारधारा, सम्प्रदाय अथवा परंपरा के शिकंजे को स्वीकार करने में विद्रोह कर उठता था। उनकी सोच आधुनिक थी। पर वे भारतीयता और भारत की पुरातन सांस्कृतिक धरोहर के भी कायल थे- विशेष रूप से उसकी सब धर्मों, विचारों, जीवन पद्धतियों को आत्मसात् कर लेने की संश्लिष्ट प्रवृत्ति के। उन्होंने इसे सामासिक संस्कृति के रूप में व्याख्यायित किया था। कितने गहरे डूबकर वे भारतीय संस्कृति के इन कालजयी तत्वों को गिन चुनकर लाए थे- ''घोर अध:पतन और दरिद्र होते हुए भी हिन्दुस्तान में काफी शालीनता और महानता है। और हालांकि वह पुरानी परंपरा और मौजूदा मुसीबतों से काफी दबा हुआ है, उसकी पलकें थकान से कुछ भारी मालूम होती हैं, फिर भी अंदर से निखरती हुई सौंदर्य-क्रांति उसके शरीर पर चमकती है। उसके अणु-परमाणु में अद्‌भुत विचारों, स्वच्छन्द कल्पनाओं और उत्कृष्ट मनोभावों और रास्ते में उसने बहुत ज्ञान और अनुभव संचित किया है, दूसरे देशवासियों से देन-लेन किया है, उन्हें अपने बड़े कुटुम्ब में मिला लिया है। उत्थान और पतन समृद्धि और ह्रास के दिन देखे हैं, बड़ी-बड़ी जिल्लते उठाई हैं, महान् दु:ख झेले हैं और कई अद्‌भुत दृश्य देखे हैं, लेकिन अपनी इस सारी लंबी यात्रा में उसने अपनी अति प्राचीन संस्कृति को नहीं छोड़ा है। उससे उसने बल और जीवन शक्ति प्राप्त की है और दूसरे देश के लोगों को उसका स्वाद भी चखाया है। घड़ी के काँटें की तरह वह कभी ऊपर गया और कभी नीचे आया है। अपने साहसिक विचारों से स्वर्ग और ईश्वर तक पहुँचने की उसने हिम्मत की है, उसके रहस्य खोलकर प्रकट किए हैं और उसे नरक कुण्ड में गिरने का भी कटु अनुभव हुआ है। दु:खदायी अन्धविश्वासों और पतनकारी रस्म-रिवाजों के बावजूद, जोकि उसमें घुस आए हैं, और जिन्होंने उसे नीचे गिरा दिया है, उसने उस आदर्श को अपने हृदय से कभी नहीं भुलाया जो कुछ ज्ञानी संतानों ने इतिहास

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
के उषाकाल में उसके लिए उपनिषदों में सचित कर दिया था। उसके ऋषियों की कुशाग्र बुद्धि सदा खोज में लीन रहती थी, नवीनता को पाने की कोशिश करती थी और सत्य के शोध में व्याकुल रहती थी। वह जड़ सूत्रों को पकड़कर नहीं बैठी रही और न लुप्त प्राय, विधि-विधानों, ध्येय-वचनों और निरर्थक कर्म-काण्डों में ही डूबी रही। न तो उन्होनें इस लोक में खुद अपने लिए कष्टों से छुटकारा चाहा, न उस लोक में स्वर्ग की इच्छा की। बल्कि उन्होंने ज्ञान और प्रकाश माँगा– मुझे असत् से सत् की ओर ले जा, मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले जा, मुझे मृत्यु से अमरता की ओर ले जा। अपनी सबसे प्रसिद्ध प्रार्थना गायत्री मंत्र में जिसका लाखों लोग आज भी नित्य जप करते हैं, ज्ञान और प्रकाश के लिए ही प्रार्थना की गई है।''

अपनी इस महान् जीवनदायिनी थाती और स्रोत से विच्छिन्न न होते हुए, भौतिक शक्ति से आत्मिक शक्ति की श्रेष्ठता निभ्रन्ति स्वर में स्वीकार करते हुए, इंसान और इंसानियत ही संसार का सर्वोपरि रहस्य है, इस जीवन सत्य से क्षण मात्र के लिए विरत न होते हुए भी उनकी हार्दिक कामना थी कि दुनिया का समुन्नत राष्ट्र बनने की तरक्की की तेज दौड़ में कहीं भारत पिछलग्गू न रह जाए इसके लिए उसे अपने बंद नजरिए में परिवर्तन अवश्य करना चाहिए–

"... हर युग का एक धर्म होता है। कभी-कभी एक युग का धर्म दूसरे युग में पूरे तौर से ठीक चस्पा नहीं होता। युग बदलता है तो धर्म भी थोड़ा बदल जाता है या धर्म का रूप कुछ बदल जाता है। नए युग में चाहे धर्म वहीं हो मगर उस पर अमल करने का तरीका जरूर बदल जाता है। इसलिए आजकल जो हमारा युग है उसके अपने बड़े सवाल हैं। उसमें हमें देखना है कि हमारा कर्तव्य क्या है, क्योंकि हमारा भारत उन देशों में नहीं हो सकता जो दुनिया की रफ्तार से अलग रहे क्योंकि एक तो वह इतना बड़ा है- हमारा देश इतना बड़ा है, जिसमें दुनिया के लोगों का एक सातवाँ हिस्सा रहता है। साथ ही भारत एक ऊपरी देश नहीं है। भारत की जड़ें बहुत पुरानी हैं। हजारों बरस की हैं। हजारों बरसों की है। हजारों बरसों से कुछ नहीं होता, किसी मुल्क के हजारों बरस भी जहालत में नहीं गुजरे हैं– कुछ वक्त भले ही गुजरा हो। काफी ऊँची बातें भारत के दिमाग ने निकाली हैं। हमारी पुरानी संस्कृति आज भी हमारी मदद करती है। लेकिन तभी, जब हम उसे आजकल के विज्ञान से मिलाए और

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
विज्ञान तथा आध्यात्मिकता में समन्वय करें। विज्ञान आजकल हमारी शक्ति बढ़ाता जाता है। विज्ञान से इंसान की शक्ति इतनी हो गई है कि विज्ञान से वह सारी पृथ्वी को उड़ा दे– हाइड्रोजन बम वगैरह से। लेकिन मानसिक शक्ति और आध्यात्मिक शक्ति अभी मनुष्य में नहीं आई कि उसको– प्राकृतिक शक्ति को– काबू में रखे। यह भारत का संदेश है और हमें इस पर चलकर दिखाना है।''

आधुनिक तकनीकी ज्ञान-विज्ञान का पूरा उपयोग कर भारत प्रगति कर सकेगा, वे पूर्णतः आश्वस्त थे। भारत के भविष्य में उनकी अडिग आस्था थी, पर मानवोचित् सद्‌गुणों की महंगी कीमत चुकाना उन्हें स्वीकार्य न था। मौलाना आजाद स्मृति भाषण माला में वार्ता देते हुए उन्होंने जो कुछ कहा, वह मानो स्वाधीन भारत का घोषणा पत्र था– ''कल का भारत वही होगा, जिसे आज हम अपने श्रम से बनाएँगे। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं कि भारत औद्योगिक तथ दूसरी बातों में तरक्की करेगा। वह विज्ञान और टेक्नोलाजी में भी आगे बढ़ेगा, हमारी जनता का स्तर ऊँचा होगा, शिक्षा का फैलाव होगा, स्वास्थ्य-दशा में सुधार होगा और कला तथा संस्कृति से लोगों का जीवन समृद्ध होगा। हमने इस तीर्थ-यात्रा चाहे जितनी लंबी हो, हम अपनी मंजिल तक अवश्य पहुँचेंगे। परन्तु मुझे केवल भौतिक उन्नति की ही चिन्ता नहीं है वरन् अपने देशवासियों में गुणों और गहराई की भी है। औद्योगिक प्रक्रिया से शक्ति प्राप्त कर लेने के बाद क्या वे व्यक्ति संपत्ति और आरामदायक जिंदगी की खोज में स्वयं को खो देंगे। यह एक दुःखद घटना होगी, क्योंकि यह बात उन आदर्शों के विरुद्ध होगी जिन पर भारत अतीत में खड़ा रहा और वर्तमान में गांधीजी ने जिनका प्रसार किया। शक्ति आवश्यक है, पर विवेक भी अनिवार्य है। विवेक के साथ ही शक्ति एक अच्छी चीज है। आज हम सब अधिकारों और लाभों की बात करते हैं, परन्तु प्राचीन धर्म ने हमें कर्तव्य और दायित्व की शिक्षा दी थी। कर्तव्य पूरा करने पर ही अधिकार प्राप्त होता है। क्या हम विज्ञान और टैक्नोलाजी की प्रवृत्ति को मन और आत्मा से मिला सकते हैं। हमें विज्ञान के प्रति आस्था रखनी होगी, क्योंकि वह आज जीवन के मूलभूत तथ्यों का प्रतिनिधित्व करता है। हमें इससे भी ज्यादा आस्था उन अनिवार्य सिद्धान्तों पर टिकानी होगी जिन पर अतीत में भारत खड़ा रहा। अतः हमें औद्योगिक प्रगति की अपनी राह को पूरी शक्ति और प्रतिभा से बनाना है और इसके साथ ही

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह याद रखना कि बिना विवेक और सहिष्णुता के प्राप्त होने वाली भौतिक संपदा धूल और राख में बदल जाएगी। हम यह भी भूल सकते कि शान्ति के निर्माता ही वरदायी होते हैं।'' राष्ट्रवासियों में मानवीय सद्गुणों और शालीनता का लोप होने पर बड़ी-से-बड़ी भौतिक उपलब्धि को वे निरर्थक और राष्ट्र के स्वास्थ्य के लिए नुकसानदेह समझते थे। भारत की राष्ट्रीय विदेश नीति के प्रमुख संयोजक तत्व विश्व शांति, पंचशील और सहस्तित्व संबंधी उनकी विचारधारा भी एक प्रकार से इसी नैतिक अवधारणा का विस्तार थी। गौतम बुद्ध और ओशो के देश में नेहरू में वही उद्घोष एक बार फिर निनादित हो गया– ''हमें इस निष्कर्ष पर दृढ़ता से पहुँच जाना चाहिए कि आज युद्ध को पूरी तरह अस्वीकार किया जाए क्योंकि उससे न तो विजय निश्चित होती है और न विजय का सद्परिणाम ही। युद्ध के कगार पर जाना और युद्धखोरों की तरह व्यवहार करना बुद्धिमतापूर्ण नहीं कहा जा सकता।''

पंचशील की स्थापना यों तो ढाई हजार वर्षों से भी पहले मानव मुक्ति तथा कल्याण के उद्देश्य से गौतम बुद्ध ने की थी। किन्तु इस युग में उसे सार्थकता वास्तव में शांति के अग्रदूत पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने प्रदान की। पंचशील के जयघोष का श्रेय उसके जनक भारत को ही मिलता था। सन् 1954 में तिब्बत के प्रश्न पर भारत और चीन के मध्य जो अनाक्रमण संधि हुई उसमें पाँच सिद्धान्तों को आधार बनाकर भारत के प्रधानमंत्री नेहरू तथा चीन के प्रधान-मन्त्री चाउ एन लाई ने हस्ताक्षर किए। अब पंचशील अपने नए रूप में सँवरकर संसार के समक्ष आया। ये सिद्धान्त हैं–

(1) कोई देश किसी देश पर आक्रमण नहीं करेगा।

(2) कोई देश किसी देश के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगा।

(3) सभी देश परस्पर समानता के आधार पर एक-दूसरे का हितसाधन करेंगे।

(4) सभी देश एक-दूसरे की सत्ता एवं सीमा के प्रति सम्मान का भाव रखेंगे।

(5) शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व की नीति अपनायी जाएगी।

पंचशील की अवधारणा पर मत व्यक्त करते हुए पण्डित नेहरू ने कहा– ''पंचशील का अर्थ यह है कि प्रगति के रास्ते अथवा दृष्टि जुदा-जुदा होते

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हुए भी अन्ततः उद्देश्य समान हो सकता है। सत्य किसी एक देश या विशिष्ट जनता से बँधा नहीं है। प्रत्येक देश और जनता को अपना रास्ता खुद भूलों और प्रयोगों के जरिए बनाना पड़ता है, तभी वे विकास कर सकते हैं।''

लड़ाई, भूख, दासता और नाइंसाफी से त्रस्त दुनिया को निजात दिलाने के लिए जेल अथवा जेल के बाहर पंडितजी सदैव जद्दोजहद करते रहे थे। एक तरह से उनका पूरा जीवन ही सब प्रकार के शोषण के खिलाफ खुला जिहाद था। संसार के किसी कोने में छोटे असहाय राष्ट्र पर आक्रमण हुआ, अपनी खास विचारधारा से किसी मुल्क ने दूसरे मुल्क अथवा जाति को परास्त करना चाहा अथवा डरा-धमकाकर लाभ उठाने के लिए बड़े राष्ट्र ने धौंस पट्टी पर छोटे राष्ट्र को दबाना चाहा, ऐसे जुल्मों के विरोध में प्रतिरोध का पहला स्वर प्रायः सदैव पण्डित नेहरू का हुआ करता था। शोषित और अन्याय पीड़ित राष्ट्रों के प्रबल पक्षधर होने के नाते ही आजादी से पूर्व मार्च 1947 में उन्होंने एशियन संबंध का अधिवेशन भारत में आयोजित किया। अंतर्राष्ट्रीय सौहार्द के लिए ही 1964 में पंचशील की घोषणाा की। 1955 में उपनिवेशवाद के शिकार अफ्रेशियाई देशों में एकता औश्र संगठन स्थापित करने के लिए बाण्डुग में सम्मेलन आयोजित हुआ जिसके सब कुछ– नियामक, प्रणेता, आत्मा पण्डित नेहरू ही थे। संसार में गुटनिरपेक्षता के प्रतीक के रूप में नेहरू, नासिर और टीटो की त्रयी इसी सम्मेलन में उभरी थी पर ये विधि की विडम्बना ही कही जाएगी कि अपनी संस्कृति और परंपरा के अनुरूप निराश्रित दलाईलामा को शरण देने पर चीन ने भारत से संबंध बिगाड़ लिए। पर भारत द्वारा प्रतिपादित तटस्थता की नीति विश्व समुदाय में अधिक गहराई से जड़ पकड़ती गई और आज तो तृतीय विश्व के रूप में अनेक देशों का एक अलग समुच्चय तेजी से उभरकर हमारे सामने आ गया है जिसकी आवाज दुनिया की बिरादरी में एक खास असर रखती है। उसका प्रमुख श्रेय पण्डित नेहरू की व्यावहारिक और नैतिक राजनैतिक बुद्धिमत्ता को है।

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने कभी जवाहरलाल को भारत के ऋतुराज की संज्ञा प्रदान की थी। वह बसंत, जिसके आगम से चारों दिशाएँ, परिवेश नूतन उल्लास से खिल उठे, मंदिर गंध से अग-जग महक उठे, निर्जीव निष्प्राण को अनुप्राणित कर दे, शक्ति-ऊर्जा का संचार कर दे। क्या यही अनुभूतियाँ प्रत्येक जन और पूरे देश में विलोड़न नहीं करती थी पण्डितजी से सान्निध्य

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

काल में। केवल [illegible] ही नहीं, पूरा विशालकाय भारत उनके दरस-परस के लिए आतुर-उत्फुल्ल अपलक-पाँवड़े बिछाए उमड़ पड़ता था। क्या करिश्मा था उनका किसी नगर, प्रदेश अथवा अंचल में नेहरूजी के प्रवेश के समाचार से बिजली की-सी लहर दौड़ जाती थी। कृष्ण की मुरली के वशीकरण की तरह उनकी आवाज के जादू से अभिभूत, मुग्ध आबाल वृद्ध लक्ष-लक्ष नर-नारी घंटों उनकी प्रतीक्षा में शीत ताप की परवाह किए बिना डटे रहते थे। यह उन्हीं के जीवट का प्रभाव था कि देश के पहले आम चुनाव में तैंतालीस दिनों में उन्होंने कार, ट्रेन, वायुयान सब साधनों से तीस हजार मील की दूरी तय कर करीबन तीन करोड़ भारतवासियों को देश की कायापलट करने का पुरजोश पैगाम दिया था। जिस नेता ने अपना तन-मन-धन तरुणाई, गार्हस्थ्य, सुख-सुविधापूर्ण जीवन सर्वस्व देश के लिए अर्पित किया हो, उसके लिए भारत की जनता अपना अमित दुलार कैसे न लुटाती? पण्डित नेहरू को भी, इसका अहसास था। उन्हें भी अपने देशवासियों से बेहद प्यार था, लगाव था। उनकी भलाई के लिए जीवन के समापन क्षण तक, रक्त की अन्तिम बूँद तक वे काम करने को सन्नद्ध थे- "अब मुझमें एक ही इच्छा शेष है और वह यह है कि आने वाले वर्षों में और अपने शेष जीवन में मैं स्वयं को अपनी पूरी ताकत के साथ भारत के निर्माण के कार्य में झोक दूँ। मैं यह कार्य उस समय तक ज्यादा से ज्यादा करना चाहता हूँ जब तक कि मैं पूरी तरह थककर शिथिल न पड़ जाऊँ। मुझे इस बात में रुचि नहीं कि आप या और कोई दूसरा मेरे चले जाने के बाद मेरे विषय में क्या सोचेगा। मेरे लिए यही काफी है कि मैंने भारत के लिए स्वयं को झोंका, सारी शक्ति लगाई।... मुझे इस बात की परवाह नहीं है कि मर जाने के बाद मेरी प्रतिष्ठा का क्या होगा? परंतु यदि कुछ लोग मेरे विषय में सोचना चाहें, तो मैं उनसे यह सुनना चाहूँगा वह व्यक्ति था, जिसने अपने संपूर्ण दिल और दिमाग से भारत को और भारतीय जनता को प्यार किया और प्रत्युत्तर में वे उसके प्रति इतने उदार थे कि उन्होंने खुले हाथ और खुले दिल उस पर अपना प्यार लुटाया।"

जन नेता कैसा हो, उसकी छवि क्या हो, उससे क्या-क्या अपेक्षाएँ हैं, पर नेहरूजी का कहना था- भारत जैसे विशाल विविधता के देश में नेतृत्व की कसौटी पर खरा उतरने के लिए उसे तलवार की सान पर चलना है। फिर भारत की आजादी की, लड़ाई तो नैतिक मूल्यों के सहारे लड़ी गई थी। तेंदुलकर की गांधी वाड.मय की भूमिका में पण्डित नेहरू का चिन्तन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस संदर्भ में द्रष्टव्य है– ''अगर वह नेता है तो उसे जनता का नेतृत्व करना चाहिए, जनता का पिछलग्गू बनना नहीं। अगर वह अपनी ही बुद्धि के अनुसार अकेले कार्य करता है तो वह उन्हीं लोगों से कट जाएगा, जिनका नेतृत्व करने का वह प्रयत्न कर रहा है। यदि वह दूसरों की समझबूझ के स्तर पर उतर आता है तो अपने-आप को नीचे गिराता है। अपने आदर्शों के प्रति झूठा साबित होता है और असत्य के साथ समझौता करता है। एक बार ऐसे समझौते शुरू हो गए तो उनका अंत होना कठिन होता है, आदमी फिर फिसलता ही चला जाता है। तब उसे करना क्या चाहिए? उसे दूसरे को भी वही सत्य देखने के योग्य बना देना चाहिए, जो वह स्वयं देख रहा है।''

पण्डित नेहरू भारत, दुनिया वरन् संपूर्ण मानवता को अभाव, अन्याय, अत्याचार-मुक्त, सुखोसमृद्ध देखना चाहते थे। 1928 में मद्रास कांग्रेस में उन्होंने घोषणा की थी– ''... इतिहास का यह फैसला है कि हमारे प्राचीन देश को अपनी आजादी के संघर्ष से और अपनी आजादी के बाद सभी देशों की संघर्षरत जनता का मार्गदर्शक बनाना है, उस कोटिसंख्यक जनता का जो अपनी उस युगों पुरानी नींद से जाग रही हैं, जिसे साम्राज्यवाद ने अपने उत्पीड़न की अफीम खिलाकर भुला दिया था।'' समाजवाद का रास्ता भी इसीलिए उन्होंने चुना था। समाजवादी दर्शन के गहन अध्येता और रूस की क्रांति के घोर प्रशंसक होते हुए भी वे विचारों की कट्टरता-रेजीमैंटेशन– किसी बात को जबरन थोपने के विरुद्ध थे। हिंसा, रक्तचाप, जोर-जबरदस्ती वाले शासन के वे सख्त खिलाफ थे। वे एक और संसार की फासिस्ट ताकतों का विरोध करते रहे दूसरी ओर हिंसा, दमन, विचारों की असहिष्णुता पर आधारित साम्यवादी शासन व्यवस्था की घोर भर्त्सना करने वाले के रूप में प्रख्यात थे। गांधीवादी विचार दर्शन ने उनके चिन्तन को अधिक गहराई से सँवारा था, उसे एक खास शक्ल प्रदान की थी, जो उनके लेखों और उद्‌गारों से अक्सर लक्षित होती हैं। भय को गांधीजी की तरह वे आदमी को सबसे बड़ी कमजोरी और उसका गंभीर दूषण मानते थे– ''मेरे खयाल से सारी बुराई की जड़ डर है। इससे लड़ाई और हिंसा का जन्म होता है। हिंसा और झूठ ईस की प्रतिक्रियायें हैं। हमारे पुराने ग्रंथों में कहा गया है कि सबसे बड़ा दान अभय दान है। जो आदमी निर्भय हैं, उसके विचार और काम भी शुद्ध होते हैं। हम देखते हैं कि आज सारे संसार पर भय छाया है और सबसे बड़े और बलवान राष्ट्र भी भय से ग्रस्त

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हैं। धन और सम्पत्ति भय से छुटकारा दिलाने के बजाय उसे और बढ़ाते हैं। महापुरुषों और संतों को छोड़कर कोई भी आदमी भय से बिलकुल मुक्त नहीं हो सकता, परंतु हमें कोशिश यही करनी चाहिए। गांधीजी ने भारत को सबसे बड़ा वरदान यही दिया कि उन्होंने लोगों के मन से भय को भगाया। ''यही बहादुरी और निर्भीकता का संदेश प्रियदर्शिनी इंदिरा की तेरहवीं वर्षगांठ पर सेन्ट्रल जेल नैनी से नेहरू ने उसके नाम भेजा था– ''कभी-कभी हमें यह दुविधा हो सकती हैं कि इस समय हमें क्या करना चाहिए। सही क्या है और गलत क्या है। यह तय करना आसान काम नहीं होता। इसलिए जब कभी तुम्हें शक हो तो ऐसे समय के लिए मैं एक छोटी-सी कसौटी तुम्हें बताता हूँ। शायद इससे तुम्हें मदद मिलेगी। वह यह है कि कोई काम खुफिया तौर पर न करो। कोई काम ऐसा न करो जिसे तुम्हें दूसरो से छिपाने की इच्छा हो क्योंकि छिपाने की इच्छा का मतलब यह होता है कि तुम डरती हो और डरना बुरी बात है, तुम्हारी शान के खिलाफ है। तुम बहादुर बनो और बाकी चीजें तुम्हारे पास अपने-आप ही आती जाएँगी। अग़र तुम बहादुर हो तो डरोगी नहीं और कभी ऐसा काम न करोगी जिसके लिए दूसरों के सामने तुम्हें शर्म मालूम हो। तुम्हें मालूम है कि हमारी आजादी के आंदोलन में जो बापूजी की रहनुमाई में चल रहा है, गुप्त तरीकों या लुकछिपकर काम करने के लिए कोई स्थान नहीं है। हमें तो कोई चीज छिपानी ही नहीं है। जो कुछ हम कहते हैं या करते हैं, उससे हम डरते नहीं। हम तो उजाले में और दिन-दहाड़े काम करते हैं। इसी तरह अपनी निजी जिंदगी में भी हमें सूरज को अपना दोस्त बनाना चाहिए, और रोशनी में काम करना चाहिए। एकांत तो अलबत्ता हमें चाहिए और वह स्वाभाविक है। लेकिन एकांत और चीज है और रोशनी दूसरी चीज। इसीलिए प्यारी बेटी अगर तुम इस कसौटी को सामने रखकर काम करती रहोगी तो प्रकाश की संतान होकर बढ़ोगी और चाहे जो घटनाएँ तुम्हारे सामने आएँ तुम निर्भय होकर शांत रहोगी और तुम्हारे चेहरे पर शिकन तक न आएगी। मेरी यह कामना यह है कि तुम बड़ी होकर भारत की सेवा के लिए एक बहादुर सिपाही बनो।''

मन-वचन-कर्म से देशोत्थान के लिए पूर्णतः प्रतिबद्ध पण्डित नेहरू अपने शेष जीवन का एक-एक क्षण और शकित का जर्रा-जर्रा इस महान यज्ञ में होम कर देना चाहते थे। आजाद हिन्द का पश्चिम हरदम बुलंद रहे उसकी शान बरकरार रहे इसके लिए आजादी की मशल को वे अदम्य साहस और

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
प्रबल इच्छा शक्ति वाले नौजवानों के हाथों में सुपुर्द करना चाहते थे। ज्ञान से हमने हिन्दुस्तान को आजाद किया। शान से हमें आगे बढ़ाना है, शान से हमें यह जो हिन्दुस्तान की आजादी की मशाल है, उसको लेकर चलना है और जब हमारे हाथ कमज़ोर हो जाएँ तो औरों को देना है ताकि नौजवान हाथ उसको उठाएँ और हम अपना काम पूरा करके चाहें खाक में मिल जाएं।

जोखिम और खतरों के बीच उनका सामना करते हुए जिओ। उन्होंने स्वयं ऐसा ही दुस्साहसपूर्ण जीवन वरण किया था। 'न दैन्यं न पलायन' अर्जुन की ये प्रतिज्ञा उनके जीवन का भी ध्रुव सत्य था। कहते हैं संजय गांधी ने जोखिम के साथ जीने की प्रेरणा अपने नाना जवाहरलाल से ही ग्रहण की थी। देशवासियों को उनका आहवान और सद्परामर्श था– "लोग बहुधा कर्म से बचते हैं, क्योंकि उन्हें परिणामों का भय होता है और कर्म का अर्थ है– जोखिम और खतरा। विपत्ति दूर से भयंकर लगती है। लेकिन यदि आप उसे निकट से देखें तो वह इतनी अप्रिय नहीं रहती। और बहुधा एक आनंदवर्धक सहचरी सिद्ध होती है– जीवन के उत्साह और उल्लास को बढ़ाने वाली।" वे जेम्स केलर की कहानी इसी सदंर्भ में सुनाते थे– "भयानक तूफान चला, नौका डगमग करने लगी। एक युवक रस्सी के सहारे उपर जा पहुँचा। उसने धैर्य से पाल को मजबूती से बाँधा और रस्सी के सहारे नीचे उतरने लगा कि उसकी दृष्टि हुंकारते भयानक समुद्र पर पड़ी, जिसकी उतुंग लहरें नाव को निगल जाना चाहती थी। समुद्र की भयंकर गर्जना से उसके हाथ पांव फूल गये। लगा कि साहस ने उसका साथ छोड़ दिया। वह चिल्लाया– बचाओ, मैं गिर रहा हूँ। नीचे वृद्ध मांझी खड़ा था, उसने कहा– नीचे मत देख लड़के अपनी आँखें ऊपर ही रख। युवक मांझी सरलता से नीचे उतर आया। जीवन में उच्च स्तर पर पहुँचने के बाद अगर आप अपनी ऊँचाई से कभी घबरा उठे तो पूरे आत्मविश्वास और दृढ़ संकल्प के साथ अपनी आंखें सामने की ओर ही रखें। जिस गहर से निकलकर आप ऊपर चढ़े हैं, मुड़कर उसकी ओर देखना बुद्धिमानी नहीं कहा जा सकता।

उनकी मान्यता थी कि खतरों से कतराने की पलायन करने की दुष्प्रवृत्ति और कमजोरी के कारण ही भारत इन परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ा है। उनका कथन था– "मुल्क तब उठते हैं जब उनके अंदर ताजगी होती है– दिल की ताजगी और जिस्म की ताजगी– दम होता है। वे खतरे का सामना करते हैं। हम लोग गिर गए तो यहाँ अंग्रेज आए, पुर्तगाली आए, फ्रेंच आये, डच आये

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
और भी कौन-कौन आया। हम उनको बुरा-भला कहते हैं कि उन्होंने हमारे ऊपर हुकूमत की ज्यादती की, लेकिन दूसरी तस्वीर उसकी यह भी है कि ये लोग हजारों मील पार करके, खतरे का सामना करके यहाँ आये। कितने ही समुद्र में डूबकर मर गये। यह एक हिम्मत का काम था। हमारे यहाँ से कौन उस जमाने में हिन्दुस्तान से बाहर जाता था। कोई नहीं। हिन्दुस्तान तो बड़ा मुल्क है। हिन्दुस्तान के अंदर भी एक गाँव जाने में परदेश हो जाता था। इस जात-पाँत ने हमें बाँध रखा जिससे हम आपस में न मिल सके। यह जमाना हिन्दुस्तान में आया और तब वह गिर गया।'' देश और देशवासियों की उदासीनता और निष्क्रियता को झकझोरने के लिए पुरुषार्थ और कर्मशीलता की साक्षात् प्रतिमूर्ति जवाहरलाल ने 'आराम हराम है' का नारा दिया। गुलामी की लंबी त्रसदी के बाद एक सभ्य, सुसस्कृत और समुन्नत नया हिन्दुस्तान बनाने के लिए, एक प्रबुद्ध गतिशील समाज की पुनर्रचना के लिए, समूचे हिन्दुस्तान के नक्शे को पलटने के लिए वे अधीर थे। देश के नवनिर्माण की यह छटपटाहट नेहरूजी में लक्षित होती है। महात्मा गांधी की हर आँख के हर आँसू पोंछने की जीवन साध को पूरा करने के लिए वे कृतसंकल्प थे। तरक्की के नए साधनों का पूरा लाभ वे गाँव-गाँव तक पहुँचाना चाहते थे– ''मैं हिन्दुस्तान के एक सिरे से दूसरे सिर तक बनने वाले नए-नए कारखानों, नयी-नयी चीजों और बिजली तथा हमारे खेतों की सिंचाई करने के लिए बनाई जा रही बड़ी-बड़ी बहुद्देशीय योजनाओं को देखता हूँ। गाँव में तेजी से फैली हुई सामुदायिक विकास और दूसरी राष्ट्रीय विस्तार सेवा योजनाओं को भी देखता हूँ। यह हमारे देश की सबसे बड़ी घटना है। देहाती भारत का रंग-रूप सैकड़ों कारखानों के बनने से नहीं बदलेगा। वह बदलेगा इन सामुदायिक विकास योजनाओं से। गाँव भारत की आत्मा है, हजारों सालों से भारत की बुनियाद हैं और इनमें महान् क्रांति हो रही है। जैसे-जैसे मैं इस विकास कार्यक्रम को देखता हूँ, हिन्दुस्तान का भविष्य उज्जवल नजर आता है–मेरे सामने बदलते हुए हिन्दुस्तान देखकर नहीं, ज़िनको हम बना रहे हैं बल्कि उनके फलस्वरूप नया जीवन पाने वाले लाखों बच्चों, पुरुषों और स्त्रियों का खयाल करके।''

नेहरूजी जीवन-व्यवहार में सब प्रकार की तंगदिली, संकीर्णता के खिलाफ थे– व्यक्ति की, विचारों की, नजरिए की। वे परमहंस कोटि के एक मुक्त मानव थे– धर्म, मत, सम्प्रदायों की तंग चौहदी के सर्वथा परे। और फिर उन्होंने अतीत से, इतिहास से सबक लिया था। भारतीय संस्कृति

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
की उदारता, विशालता और जीवनी शक्ति के उन्हें तवारीखों में दर्शन हुए थे। इसीलिए स्वाधीन भारत के संविधान में धर्मनिरपेक्षता को राज्य का मूलाधार घोषित किया गया, केवल कानून के पुर्जेमात्र के रूप में नहीं वरन् एक निष्ठागत सच्चाई के रूप में। नेहरूजी जीवन-भर उसे अमली जामा पहनाने के लिए संघर्षरत रहे। संकीर्ण साम्प्रदायिकता से उन्होंने हमेशा डटकर मोर्चा लिया। देश के अल्पसंख्यक उनमें अपना मसीहा, सच्चा हमदर्द देखते थे। साम्प्रदायिक संगठनों के वे बहुत कड़े आलोचक थे– कुछ पुराने शासक, राजसता से वंचित, अत्यंत धनसंपन्न जागीरदार, बड़े जमींदार और कुछ बड़े पूँजीपति इन साम्प्रदायिक संगठनों का समर्थन करते हैं और जोर-शोर से हिंदू राज्य, सिख राज्य और पुरातन हिंदू संस्कृति की बात करते हैं। पुरातन संस्कृति के इस बाने में वे अपनी संकीर्णता, असहिष्णुता और प्रतिक्रिया छिपाते हैं। ये साम्प्रदायिक संगठन, विचारधारा और तकनीक में अनिवार्यत: फासोस्टवादी हैं।''

देश को स्वातंत्र्योत्तर स्थिति के संदर्भ में भाषा के सवाल पर चाहे उन्हें अपनी राय ने किंचित् संशोधन करने को बाध्य होना पड़ा हो, एक राष्ट्रीय नेता के रूप में वे राष्ट्र के जन-जीवन में घुली-मिली और घनिष्ठ रूप से जुड़ी हिन्दी की उपेक्षा नहीं कर सकते थे। देश में उसकी महत्ता और लोकप्रियता को वे भली प्रकार पहचानते थे– ''भाषा का सवाल सिर्फ दक्षिण भारत का ही नहीं, वह सारे भारत का भी सवाल है। हमारी बड़ी-बड़ी दस-बारह भाषाएँ हैं, जिन्हें हम दो परिवारों में विभाजित कर सकते हैं– संस्कृत की लड़कियाँ और दक्षिण भारत की भाषाएँ जैसे तमिल, तेलूगु आदि। ये दोनों परिवार एक-दूसरे से बहुत फर्क रखने पर भी काफी संबंध भी रखते हैं। हमारी नीति है कि कोई भाषा दबाई नहीं जाए। न उनके खिलाफ हमारी भाषा खड़ी की जाए। मेरा दृढ़ मत है कि कोई भी शख्स अपनी मातृभाषा के द्वारा तरक्की कर सकता है। हमारा ध्येय पुरानी भाषाओं को जोरों से चलाना है और उन्हीं के द्वारा शिक्षा आदि भी चलानी चाहिए। लेकिन देश-भर को बांधने के लिए भारत के भिन्न भिन्न हिस्से एक दूसरे से संबंधित रहें, इसके लिए हिन्दी की जरूरत है।'' हिन्दी की व्यवस्थित शिक्षा-दीक्षा प्राप्त न कर सकने की कमी का उन्हें अहसास था। वे इसे ईमानदारी से महसूस भी करते थे। बहुत वर्षों पहले उन्होंने बेटी इंदिरा को पत्र में लिखा था– ''दासता ने हमारे दिमागों को इतना जकड़ लिया है, हम अंग्रेजी लिखना-बोलना भी गौरव की बात समझते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(पण्डितजी ने यह पत्र भी अंग्रेजी में लिखा था) पर इंदिरा तुम भी हँसोगी, मैं कैसा धोखेबाज आदमी हूँ। जिस भाषा के खिलाफ तुम्हें यह लिख रहा हूँ, उसी में अपना पत्र भी तुम्हें भेज रहा हूँ। लेकिन मेरी अपनी दुर्बलता का कारण मेरी सारी शिक्षा-दीक्षा ऐसे वातावरण में होना है, जो हिन्दी से बहुत दूर थी। अब मैं अनुभव करता हूँ कि मुझे जल्दी ही हिन्दी सीख लेनी चाहिए।''

ऐसे बहुआयामी, गतिशील, उपलब्धिपूर्ण राजनीतिक जीवन से परे हमें एक दूसरे ही जवाहरलाल के दर्शन उनके लेखों, विचारों और कृतियों के माध्यम से होते हैं– जो भावुक हैं, संवेदनशल हैं, प्रकृति प्रेमी हैं, कला मर्मज्ञ हैं, नैसर्गिक सुषमा का छक्कर पान करने वाला है। जिसे पक्षियों, दौड़ते झरनों, वृक्षों, तथा पर्वत शृंखलाओं से बेहद लगाव है। संघर्षमय जीवन की कठोरता, कर्कशता ने जिसकी सहज मृदुलता और भाव प्रवणता को सीख नहीं लिया है। वह एक नेक ईमानदार इंसान है जो अपने ऊपर हंस सकता है अपनी कमजोरियों और गलतियों का जिसे बखूबी अहसास है, अपनी मुख़ालफत भी कर सकता है और कड़ी आलोचना भी। उसे आशंका है कि अपार लोकप्रियता और असीम अधिकार कहीं उसे तानाशाह न बना दें। मेरी कहानी, विश्व इतिहास की झलक, भारत की खोज जैसी पण्डित नेहरू की सभी कृतियाँ, ऐसे अनेक आत्मपरक आत्मालोचन के प्रसंगों से भरी पड़ी हैं, जो इस महान विभूति की उदारता और महानता की साक्षी हैं। उनकी जीवन से भरपूर प्यार था, उसके निषेधात्मक पहलू के वे हरगिज कायल नहीं थे। ''मैंने जीवन से प्यार किया है और यह आज भी मुझे आकर्षित करता है। और अपने ढंग से मैं उसकी अनुभूति का प्रयत्न करता हूँ, यद्यपि कई अदृश्य बाधाएँ मेरे चारों ओर खड़ी हो गई हैं। लेकिन जीने की यह अभिलाषा मुझे बाध्य करता है कि मैं जीवन से खेलूँ। उसके किनारों से झाँककर देखूँ। कभी उसका दास बनकर न रहूँ।''

अपनी इन कालजयी कृतियों के कारण आज पण्डितजी विश्व के प्रमुख लेखकों में गणनीय हैं। महान देश के महान सपूत की अथवा विश्व के प्रमुख राजनीति को प्रखर आभा काल-प्रवाह के साथ कभी मंद भी पड़ जाए पर एक भावप्रवण लेखक के रूप में जवाहरलाल नेहरू विश्व के सारस्वत समाज में सम्मान के साथ सदैव प्रतिष्ठित रहेंगे। नेहरूजी की रचनाओं में उनकी विद्वता, सहृदयता, दार्शनिक वृत्ति, बौद्धिक दृष्टिकोण, कलापिग्रता, सौंदर्योपासना, पर्यावरण और प्रकृति-प्रेमी का स्वरूप तथा सबसे बढ़कर एक सदाशय, महाप्राण व्यक्तित्व के दर्शन होते हैं। अपने काव्य प्रेम के संबंध में 'मेरी कहानी' में एक

CC-0 Agamnigam Digital Rreservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्थान पर वे लिखते हैं– ''मैंने कविता के प्रति अभिरुचि विकसित की, जो मेरे जीवन में अपने अनेक परिवर्तनों के बावजूद अंत तक बनी रही।'' एक अन्य लेखक के शब्दों में उनका समग्र मूल्यांकन एक कवि के रूप में ही समीचीन है- ''नेहरूजी एक प्रकार से कवि थे– राजनीति, दर्शन, व्यवहार एवं दैनिक जीवन में अपने आचरण से कवि। कभी आँधी की तरह अन्याय से टकराते थे और कभी दीपक की ज्योति की भाँति कोटि-कोटि लोगों की आशाओं और आकांक्षाओं में चुपचाप गहरे उतर जाते थे।'' प्रसिद्ध पत्रकार जॉन गुन्धर के शब्दों में- ''आधे दर्जन जीवित व्यक्ति ही नेहरूजी की इंग्लिश का मुकाबला कर सकते हैं।'' उनकी आत्मकथा रूसो, जॉन स्टुअर्ट मिल सेंट आगस्टाइन आदि मनीषियों की विश्व की सर्वोत्तम आत्मकथाओं की कतार में सहज ही विशिष्ट स्थान पाने की अधिकारी है। सुधी समीक्षकों ने मेरी कहानी को हमारे सार्वजनिक नेताओं में सर्वाधिक संवेदनशील, जन की पीड़ाओं, कष्टों और हार्दिक वेदना का निर्भीक वृत्तान्त कहा। पण्डित नेहरू के ऐसे ही भावुक मन की झांकी मेरी कहानी के एक स्थान पर द्रष्टव्य है– ''अपन विचारों में डूबा हुआ अकेला बैठा-बैठा मैं एक के बाद एक कितनी ऋतुओं को विस्मृत की गोद में विलीन होते हुए देखता रहा। मैंने चंद्रमा की कितनी ही घटती-बढ़ती कलाएँ देखी हैं। सितारों के झुरमुटों को अपने विधान के अनुसार आकाश में विचरते देखा है। मेरे जीवन के कितने बीते हुए कल यहाँ दफन हैं और कभी अतीत के इन मुर्दा क्षणों के प्रेत मेरे सामने आते हैं, पुरानी यादों को जगा देते हैं और मेरे कान में पूछते हैं– क्या यह जीवन जीने योग्य था।''

पुत्री इंदिरा के नाम लिखे गए पत्रों के संकलन 'विश्व इतिहास की झलक' से उनेक विश्वभर की सभ्यता-संस्कृतियों का विशद ज्ञान परिलक्षित होता है और एक चिन्तक जीवनमर्मी का रूप उभरकर सामने आता है- ''जीवन के अनेक रूप हैं। उसके रास्ते में दलदल भी है। लेकिन बड़े-बड़े सागर, पर्वत, हिमशिखर और ग्लेशियर भी तो है। उसमें तारों भरी सुहानी रातें और सगे-संबंधियों और मित्रों का प्यार भी तो है। एक ही ध्येय के लिए संघर्ष करने वाले साथियों का भाईचारा भी तो है। उसमें संगीत, पुस्तकें और विचारों का वह अनंत साम्राज्य भी तो है।

अगर हम चाहें तो नीचे की घाटियों में, कोहरे की घुटन में रह सकते हैं, जिसमें शरीर को किसी खतरे का सामना नहीं करना पड़ता था अगर हम चाहें तो ऊंचे पहाड़ों पर चढ़ सकते हैं, जहां हमारे लिए और हमारे साथियों के लिए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
खतरा रहता है लेकिन दूर-दूर तक मनोरम दृश्य का आनंद ले सकते हैं और सूर्योदय का स्वागत कर सकते हैं।''

उनकी कृति 'भारत की खोज' भारत की आत्मा, उसकी मनीषा का संधान करने का एक मौलिक प्रयास है। पण्डितजी का ज्यादातर लेखन कार्य की चाहरदीवारी में संपन्न हुआ था जहां उनकी कल्पना मन, चिन्तन आदि को मुक्त विचरण करने का खूब अवकाश था– उसे बंदी बनाने की किसमें जुर्रत थी। प्रसिद्ध लेखिका पर्ल बक ने नेहरूजी के साहित्यिक व्यक्तित्व, कृतित्व से प्रभावित हो कहा था– ''हमारा युग कुछ और शांत होता तो जवाहरलाल नेहरू एक श्रेष्ठ सर्जक साहित्यकार के रूप में हमारे सामने आते। चूँकि उनकी शैली विशिष्ट है और कल्पना सदा जीवित तथा वेगपूर्ण।''

विश्व के राजनीतिक क्षितिज पर लगभग चार दशक तक अपनी अमित कांति बिखेरनेवाले युगपुरुष जवाहरलाल नेहरू अपनी प्रगतिशील नीति, अग्रगामी, विचारधारा, ओजपूर्ण वाणी, प्रभावोत्पादक लेखनी और संवेदनशील, व्यक्तित्व से, संघर्ष और संक्रमण की कठिन बेला में कोटि-कोटि शोषित अभावग्रस्त जनता की नियति को संवारने के लिए आखरी क्षण तक प्रयत्नरत रहे। अपनी विदाई बेला से पूर्व वे देश और देशवासियों के लिए कितना कुछ कर जाना चाहते थे। बड़ी लंबी दूरी तय कर ली थी, पर अंतिम लक्ष्य तो अभी भी मीलों दूर था। देश को वे उस मुकाम पर पहुँचाना चाहते थे जो उनके सपनों में न जाने कब से झूल रहा था, जो उनके समूचे जीवन, धर्म कर्म का इष्ट था, मंजिलें-मकसूद था। उनकी मान्यता थी आजादी तो मात्र एक अवसर है, जरिया है, ''आज हम जिस सफलता का आनंद मना रहे हैं, वह केवल एक सीढ़ी है, एक अवसर है, उस बृहत्तर कृतित्व और विजय का जो हमारे सामने है। उस अवसर को ग्रहण करने का, भविष्य की चुनौती को स्वीकार करने का साहस और विवेक क्या हममें है?" वस्तुतः उनका भारत गुरुदेव की कवि कल्पना और विराट दृष्टि का भारत था–

''जहाँ मन भयमुक्त है और मस्तक–
स्वाभिमान से उन्नत,
जहाँ ज्ञान अबाध है,
जहाँ विश्व अलग मकानों की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025 Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सँकरी दीवारों से
टुकड़ों में खंड-खंड नहीं हुआ है,
जहाँ सत्य के अन्तस्तल से शब्द झरते हैं
जहाँ प्रयत्न रत अथक हाथ-
पूर्णता की ओर बढ़ रहे हैं
जहाँ विवेक की धारा निष्क्रियता के सूखे
रेगिस्तान की धूल में भटकी नहीं हैं,
मन जहाँ तेरे द्वारा अग्रसर होता है-
प्रशस्त चिन्तन और भरपूर कर्म के लिए
हे मेरे परम पिता, उस दिव्यलोक में
मेरा देश नेत्रोन्मेष करे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

12

नेहरूजी की 'वसीयत'

मुझे मेरे देश की जनता ने, मेरे हिन्दुस्तानी भाइयों और बहनों ने इतना प्रेम और इतनी मुहब्बत दी है कि मैं चाहे जितना कुछ करूं, वह उसके एक छोटे-से हिस्से का भी बदला नहीं हो सकती, सच तो यह है कि प्रेम इतनी कीमती चीज है कि इसके बदले कुछ देना मुमकिन नहीं। इस दुनिया में बहुत लोग हुए जिनको अच्छा समझकर बड़ा मानकर, उनका आदर किया गया, पूजा गया, लेकिन भारत के लोगों ने, छोटे और बड़े, अमीर और गरीब सब तबकों के बहनों और भाइयों ने मुझे इतना ज्यादा प्यार दिया है कि जिसका ध्यान करना मेरे लिए मुश्किल है और जिससे मैं दब जाता हूं। यूँ मैं आशा करता हूँ कि मैं अपने जीवन के बाकी बरसों में अपने देशवासियों की सेवा करता रहूँगा और उनके प्रेम के योग्य साबित होऊँगा।

बेशुमार दोस्तों और साथियों का मेरे ऊपर और भी ज्यादा अहसान है। हम बड़े-बड़े कामों में एक-दूसरे के साथ रहे, शरीफ रहे, मिलजुलकर काम किया, यह तो होता है कि जब बड़े काम किए जाते हैं, उनमें कामयाबी भी होती है, नाकामयाबी भी होती है, मगर हम सब शरीफ रहे, कामयाबी की खुशी में भी और नाकामयाबी के दुख में भी।

मैं चाहता हूँ और सच्चे दिल से चाहता हूँ कि मेरे मरने के बाद कोई धार्मिक रस्म अदा न की जाय। मैं ऐसी बातों को मानता नहीं हूँ और सिर्फ रस्म समझकर उनमें बँध जाना, धोखे में पड़ना मानता हूँ। मेरी इच्छा है कि जब मैं मर जाऊँ तो मेरा दाहसंस्कार कर दिया जाए। अगर विदेशी में मरूँ तो मेरे शरीर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
को वहीं जला दिया जाए और मेरी अस्थियाँ इलाहाबाद भेज दी जायें। उनमें से मुट्ठी भर गंगा में डाल दी जाएं और उनके बड़े हिस्से के साथ क्या किया जायें, मैं आगे बता रहा हूँ, उसका कुछ भी हिस्सा किसी हालत में बचाकर न रखा जाए।

गंगा में अस्थियों का कुछ हिस्सा डलवाने की इच्छा के पीछे, जहाँ तक मेरा ताल्लुक है कोई धार्मिक खयाल नहीं है। इसके बारे में मेरी कोई धार्मिक भावना नहीं है। मुझे बचपन से गंगा और यमुना से लगाव रहा है और जैसे-जैसे मैं बड़ा हुआ, यह लगाव बढ़ता रहा। मैंने मौसमों के बदलने के साथ-साथ इनमें बदलते हुए रंग और रूप को देखा है और कई बार मुझे याद आयी उस इतिहास की, उन परम्पराओं की, पौराणिक गाथाओं की, उन गीतों और कहानियों की जोकी कई युगों से उनके साथ जुड़ गई हैं और उनके बहते हुए पानी में घुलमिल गयी हैं।

गंगा तो विशेषकर भारत की नदी है, जनता की प्रिय है जिससे लिपटी हुई है भारत की जातीय स्मृतियाँ, उसकी आशाएँ और उसके भय, उसके विजयगान, उसकी वियज और पराजय। गंगा तो भारत की प्राचीन सभ्यता का प्रतीक रही है, निशानी रही है, सदा बदलती, सदा बहती फिर वही गंगा की गंगा। वह मुझे याद दिलाती है हिमालय की, बर्फ से ढँकी चोटियों की और गहरी घाटियों की, जिनसे मुझे मुहब्बत रही हैं, उनके नीचे उपजाऊ और दूर-दूर तक फैले मैदानों की, जहाँ काम करने में मेरी जिंदगी गुजरी है। मैंने सुबह की रोशनी में गांगा को मुस्कराते, उछलते-कूदते देखा है और देखा है शाम के साये में उदास, काली-सी चादर ओढ़े हुए, भेदभरी जाड़ों में सियरी-सी आहिस्ते बहती सुन्दर धाराएँ और बरसात में दौड़ती हुई समुद्र की तरह चौड़ा सीना लिए और संसार को बरबाद करने की शक्ति लिए हुए, यही गंगा मेरे लिए निशानी है भारत की, प्राचीनता की, यादगार की, जो बहती आई है वर्तमान तक और बहती चली जा रही है भविष्य के महासागर की ओर।

भले ही मैंने पुरानी परम्पराओं, रीति और रस्मों को छोड़ दिया हो, और मैं चाहता हूँ कि हिन्दुस्तान इन सब जंजीरों को तोड़ दें, जिनमें वह जकड़ा है। जो उसको आगे बढ़ने से रोकती हैं और देश में रहने वालों में फूट डालती हैं, जो बेशुमार लोगों को दबाए रखती हैं और जो शरीर और आत्मा के विकास को। चाहे यह सब मैं चाहता हूँ फिर भी मैं यह नहीं चाहता कि मैं अपने को इन पुरानी बातों से बिल्कुल अलग कर लूँ। मुझे फख्र है इस शानदार उत्तराधिकार का, इस विरासत का जो हमारी रही

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है और हमारी है और मुझे यह भी अच्छी तरह से मालूम है कि मैं भी हम सबों की तरह इस जंजीर की एक कड़ी हूँ, जोकि कभी नहीं और कहीं टूटी है और जिसका सिलसिला हिन्दुस्तान के अतीत के इतिहास में प्रारंभ से चला आता है। यह सिलसिला मैं कभी नहीं तोड़ सकता, क्योंकि मैं उसकी बेहद्‌ कद्र करता हूँ और इससे मुझे प्रेरणा, हिम्मत और हौसला मिलता है। मेरी इस आकांक्षा की पुष्टि के लिए और भारत की संस्कृति की श्रद्धांजलि भेंट करने के लिए मैं यह दरख्वास्त करता हूँ कि मेरी भस्म की एक मुट्‌ठी इलाहाबाद के पास गंगा में डाल दी जाए, जिससे कि वह इस महासागर में पहुँचे जो हिन्दुस्तान को घेरे हुए हैं।

मेरी भस्म के बाकी हिस्से का क्या किया जाए? मैं चाहता हूँ कि इसे हवाई जहाज में ऊँचाई पर ले जाकर बिखेर दिया जाए, उन खेतों पर जहाँ भारत के किसान मेहतन करते हैं, ताकि वह भारत की मिट्‌टी में मिल जाए।

–जवाहरलाल नेहरू

(नेहरू की राष्ट्र को सौंपी गई आखिरी वसीयत, जो उन्होंने 21 जून 1954 को लिखी थी और जिसको उनके निधन के बाद 3 जून 1964 को प्रसारित किया गया।)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

13

जवाहरलाल और धर्म

नेहरूजी ने अनुभव किया कि वे मानसिक दृष्टिकोण से गांधीजी से दूर होते जा रहे हैं। हालाँकि बापू के प्रति उनकी असीम श्रद्धा और आसक्ति थी। उनके अनुसार गांधीजी का आग्रह पवित्रता और बलिदान पर आधाति होते हुए भी दूसरों को विचार करने के लिए बढ़ावा देने वाला नहीं था। लोग चाहते थे कि गांधीजी चमत्कार करते हुए सभी समस्याओं से निजात दिला दें, अस्पृश्यता को खत्म कर दें और बाकी लोगों को कुछ न करना पड़े। नेहरूजी को यह सब स्वीकार नहीं था। इसलिए अपने अंतरंग साथियों के साथ भी उनकी मन:स्थिति मेल नहीं खा रही थी, जिसके कारण वह बहुत दुखी हुए। जवाहरलाल नेहरू का मानना था लोगों को रूढ़िगत परम्पराओं, विचारों, आशाओं और इच्छाओं ने पकड़ रखा है।

आइये जानते हैं हिन्दुस्तान, व्यक्तियों, धर्म आदि के विषय में उनके विचारों को उन्हीं के शब्दों में जो उन्होंने 'मेरी कहानी' (एन ऑटोबायोग्राफी) में व्यक्त किये हैं–

''हिन्दुस्तान सब बातों से ज्यादा, धार्मिक देश समझा जाता है और हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख तथा दूसरे-दूसरे लोग अपने-अपने मतों पर अभियान रखते हैं और एक-दूसरे का सिर फोड़कर उनके सच्चाई का सबूत देते हैं। हिंदुस्तान में और दूसरे देशों में मजहब के और कम-से-कम मौजूदा रूप से संगठित मजहब के दृश्य ने मुझे भयभीत कर दिया है। मैंने कई बार उसकी निंदा की है और उसको जड़-मूल से मिटा देने की इच्छा की है। मुझे तो हमेशा यही

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मालूम हुआ कि अंधविश्वास और प्रगतिविरोध, जड़ (प्रमाण रहित) सिद्धांत और कट्टरपन, अंधश्रद्धा और शोषण नीति और स्थापित स्वार्थों के संरक्षण का ही नाम 'धर्म' है। मगर यह भी मुझे अच्छी तरह मालूम है कि धर्म में और भी कुछ है, उसमें कुछ ऐसी चीज भी है, जो मनुष्यों की गहरी आंतरिक आकांक्षा भी पूरी करती है। नहीं तो इसकी इतनी जबरदस्त शक्ति बनना, जैसाकि बना हुआ है, कैसे संभव था। और उससे अनगिनत पीड़ित आत्माओं की सुख और शांति कैसे मिल सकती थी? क्या वह शांति केवल अंधविश्वास को शरण देने और शंकाओं पर पर्दा डालने वाली थी? क्या वह ऐसी ही शांति थी जैसे खुले समुद्र के तूफानों से बचकर किसी बंदरगाह में मिलती है या उससे कुछ ज्यादा थी? कुछ बातों में तो सचमुच इससे कुछ ज्यादा ही थी।

लेकिन इसका भूतकाल कैसा भी रहा हो, आजकल का संगठित धर्म तो ज्यादातर खाली खोल ही रह गया है, जिसके अंदर कोई तथ्य और तत्व नहीं है। कैथोलिक सम्प्रदाय के श्री जी. के. चेस्टरन ने इसकी (स्वयं अपने विशेष धर्म की नहीं, मगर दूसरों के धर्म की) उपमा भूगर्भ में पाये जाने वाले किसी ऐसे जानवर या प्राणी के पाषाणखचित ढाँचे से दी है जिसके अंदर से उसका अपना जीवन-तत्व तो पूरी तरह से निकल चुका है, लेकिन ऊपरी पंजर इसलिए रह गया है कि उसके अंदर कोई बिल्कुल दूसरी ही चीज भरा दी गई थी। और अगर किसी धर्म में कोई महत्त्वपूर्ण चीज रह भी गई है तो, उस पर दूसरी अन्य हानिकारक चीजों का लेप चढ़ गया है।

एक रोमन कैथोलिक मित्र ने जेल में मेरे पास कैथोलिक मत पर कई पुस्तकें और धार्मिक पत्र भेज दिये थो और मैंने उन्हें बड़ी दिलचस्पी से पढ़ा था। उन्हें पढ़ने पर मझे मालूम हुआ कि लोगों पर उसका कितना बड़ा प्रभाव है। इस्लाम और प्रचलित हिंदू धर्म की तरह ही उससे भी संदेह और मानसिक द्वंद्व से राहत मिल जाती है। और भावी जीवन के बारे में एक आश्वासन मिल जाता है, जिससे इस जीवन की कसर पूरी हो जाती है।

मगर, मेरी समझ में इस तरह की सुरक्षा चाहना मेरी लिए तो असंभव है। मैं खुले समुद्र को भी ज्यादा चाहता हूँ जिसमें चाहे कितनी आँधियाँ और तूफान हों। मुझे परलोक या मृत्यु के बाद क्या होता है, इसके बारे में कोई दिलचस्पी नहीं है। इस जीवन की समस्याएँ ही मेरे दिमाग को व्यस्त करने के लिए काफी मालूम होती हैं। मुझे तो चीनियों की परम्परा से चली आई जीवन-दृष्टि, जो कि मूल में नैतिक है, लेकिन फिर भी अधार्मिकता या नास्तिकता का रंग लिए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हुए है, पसंद आती है, हालाँकि जिस तरह वह व्यवहार में लाई जा रही है, वह मुझे पसंद नहीं है। मुझे तो 'ताओ' यानी जिस मार्ग पर चलना चाहिए और जीवन की जो पद्धति होनी चाहिए, उसमें रुचि है। मैं चाहता हूँ कि जीवन को समझा जाए, उसका त्याग नहीं बल्कि उसको अंगीकार किया जाए, उसके अनुसार चला जाए और उन्नत बनाया जाए। मगर आम धार्मिक दृष्टिकोण इस लोक से नाता नहीं रखता। मुझे वह स्पष्ट विचार का दुश्मन मालूम होता है क्योंकि वह सिर्फ कुछ स्थिर और न बदलने वाले मतों और सिद्धांतों को बिना चूँ-चपड़ लिए स्वीकार कर लेने पर ही नहीं, बल्कि भावुकता ओर मनोवेग पर भी आधारित है। मैं जिन्हें आध्यात्मिकता और आत्मा सम्बन्धी बातें समझता हूँ, उनसे वह बहुत दूर है, और वह जान-बूझकर या अनजाने में इस डर से, शायद वास्तविकता पूर्व-निश्चित से मेल न खाए, वास्तविकता से भी आँखों बंद कर लेता है। वह स्वार्थपरकता और अहंकार से पूर्ण है और अक्सर स्वार्थी और अवसरवादी लोगों को अपने से अनुचित फायदा उठाने देता है।

इसका अर्थ यह नहीं कि धर्मभीरु व्यक्ति अक्सर ऊँचे-से-ऊँचे नैतिक और आध्यात्मिक कोटि के लोग नही हुए हैं, या अभी भी नहीं हैं। लेकिन इसका अर्थ यह जरूर है कि अगर नैतिकता और आध्यात्मिकता को दूसरे लोक के पैमाने से न नापकर इसी लोक के पैमाने से नापना हो तो धार्मिक दृष्टिकोण अवश्य ही राष्ट्रों की नैतिक और आध्यात्मिक प्रगति में सहायता नहीं देता, बल्कि अड़चन तक डालता है। आम तौर पर धर्म ईश्वर या परम तत्व की असामाजिक या व्यक्तिगत खोज का विषय बन जाता है, और धर्मभीरु व्यक्ति समाज की भलाई की अपेक्षा अपनी मुक्ति की ज्यादा फिक्र करने लगता है। रहस्यवादी अपने अहंकार से छुटकारा पाने की कोशिश करता है और इस कोशिश में अक्सर अहंकार की ही बीमारी उसके पीछे लग जाती है। नैतिक पैमानों का सम्बन्ध समाज के आवश्यकता से नहीं रहता, बल्कि पाप के अत्यन्त गूढ़ आध्यात्मिक सिद्धांतों पर वे आधारित रहते हैं और संगठित धर्म तो हमेशा स्थापित स्वार्थ ही बन जाता है, और इस तरह लाजिमी तौर पर वह परिवर्तन और प्रगति के लिए एक विरोधी (प्रतिगामी) शक्ति होता है।

यह सभी जानते हैं कि शब्द तो अर्थ-बोध कराने के बहुत ही अपूर्ण साधन हैं और उनके कई तरह से अर्थ लगाये जाते हैं। किसी भी भाषा में 'धर्म' शब्द के (या दूसरी भाषाओं के इसी अर्थ वाले शब्दों के) जितने भिन्न-भिन्न

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अर्थ लोग लगाते हैं, उतने शायद ही किसी दूसरे शब्द के अर्थ लगाये जाते हों। मजहब शब्द को सुनने या पढ़ने से शायद किन्हीं भी दो मनुष्यों के मन में एक ही से विचार या कल्पनाएँ पैदा नहीं होंगी। इन विचारों या कल्पनाओं में, कर्मकांडों और रस्म-रिवाजों के, धर्मग्रंथों के, मनुष्यों के एक समुदाय विशेष के, कुछ निश्चित सिद्धांतों और नीति-नियमों, श्रद्धा, भक्ति, भय, घृणा, दया, बलिदान, तपस्या, भोज, प्रार्थना, पुराने इतिहास, शादी, गमी, परलोक, दंगों और सिर-फटौवल इत्यादि अनेक बातों के विचार और भाव शामिल हैं। इन असंख्य प्रकार की कल्पनाओं और अर्थों के कारण दिमाग में जबरदस्त गड़बड़ी तो पैदा हो ही जायेगी, लेकिन हमेशा एक तेज भावुकता भी उमड़ पड़ेगी, जिससे अलिप्त और अनासक्त रूप से विचार करना नामुमकिन हो जायेगा। जब धर्म शब्द का ठीक और निश्चित अर्थ (अगर कभी था तो) बिलकुल नहीं रहा है, और अक्सर बिलकुल ही भिन्न-भिन्न अर्थों में उसका प्रयोग होता है, तब तो वह सिर्फ गड़बड़ी ही उत्पन्न करता है और उससे वाद-विवाद और तर्क का कभी अंत ही नहीं हो सकता। बहुत अच्छा यह हो कि इस शब्द का प्रयोग ही बिलकुल बंद कर दिया जाए और उसके स्थान पर ज्यादा सीमित अर्थ वाले शब्द इस्तेमाल किये जाये जैसे ईश्वर-विज्ञान, दर्शन-विज्ञान, आचार-शास्त्र, नीति-शास्त्र, आत्मवाद, आध्यात्मिक शास्त्र, कर्तव्य, लोकाचार आदि-आदि। यों तो ये शब्द भी काफी अस्पस्ट हैं, लेकिन ये 'धर्म' की अपेक्षा बहुत परिमित अर्थ रखते हैं। इससे बड़ा लाभ होगा, क्योंकि अभी तक इन शब्दों के साथ उतनी भावुकता नहीं जुड़ पाई है जितनी कि धर्म के साथ जुड़ चुकी है।

तो 'धर्म' चीज क्या है? शायद वह है क्यक्ति की आंतरिक उन्नति, एक खास दिशा में जो अच्छी समझी जाती है, उसकी चेतना का विकास। वह दिशा कौन-सी होनी चाहिए, यह भी एक बहस की ही बात होगी। लेकिन जहाँ तक मैं समझता हूँ, धर्म इसी भीतरी परिर्वतन पर जोर देता है। और बाहरी परिवर्तन को इस भीतरी विकास का ही एक अंग या रूप-मात्र मानता है। इसमें शक नहीं हो सकता कि इस आंतरकि उन्नति का बाहरी हालत पर जबरदस्त असर पड़ता है। मगर, इसके साथ ही यह भी साफ है कि बाहरी हालात का आंतरिक प्रगति पर भी भारी असर पड़ता है। दोनों का एक-दूसरे पर प्रभाव पड़ता है और प्रतिक्रिया भी होती रहती है।

...गांधीजी ने कहीं लिखा है-''कोई भी आदमी धर्म के बिना जीवित नहीं रह सकता। कुछ ऐसे लोग हैं जो अपनी बुद्धि के घमंड में कहते हैं कि हमारा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं है। मगर यह ऐसी बात हुई कि कोई आदमी साँस तो लेता हो, लेकिन कहता हो कि मेरे नाक नहीं है।" एक दूसरी जगह कहते हैं–"सत्य के प्रति मेरी आस्था ने मुझे राजनीति के मैदान में ला खींचा है। और मैं बिना किसी हिचकिचाहट के, लेकिन पूरी नम्रता से कोई नाता नहीं है, यह समझते ही नहीं कि 'धर्म' का क्या अर्थ है?' यदि वह यों कहते कि वे लोग जो जीवन और राजनीति में से 'धर्म' को दूसरा ही आशय समझते हैं, तो शायद यह अधिक सही होता। एक ही शब्द को भिन्न-भिन्न अर्थों में इस तरह प्रयोग करने से एक-दूसरे को समझना और भी मुश्किल हो जाता है।"

धर्म की एक बहुत ही आधुनिक परिभाषा, जिससे कि वह धर्मभीरु व्यक्ति सहमत न होंगे, प्रोफेसर जॉन डेवी ने की है। उनकी राय में, "धर्म वह चीज है जो लोक-जीवन के खण्ड-खण्ड और परिवर्तनशील दृश्यों को समझने की शुद्ध दृष्टि देता है।''

रोम्याँ रोलाँ ने भी धर्म का ऐसा अर्थ निकाला है, जिससे शायद संगठित मजहब के कट्टर लोग भयभीत हो जायेंगे। 'रामकृष्ण परमहंस' के जीवन-चरित्र में वह लिखते हैं–

"...बहुत-से व्यक्ति ऐसे हैं, जो सभी तरह के धार्मिक विश्वासों से दूर हैं या उनका खयाल है कि वे दूर हैं, लेकिन वास्तव में उनमें एक अति-बौद्धिक चेतना व्याप्त रहती है, जिसे वे समाजवाद, साम्यवाद, मानवहितवाद, राष्ट्रवाद या बुद्धिवाद भी कहते हैं। विचार का लक्ष्य क्या है, इसकी अपेक्षा विचार किस कोटि का है यह देखकर हम निर्णय कर सकते हैं कि वह धर्म-प्रसू है या नहीं। अगर यह विचार हर तरह की कठिनाई सहकर एकनिष्ठ लगन और हर तरह के बलिदान की तैयारी के साथ, सत्य की खोज की तरफ निर्भयतापूर्वक ले जाता है, तो मैं उसे धर्म ही कहूँगा क्योंकि धर्म के अन्दर यह विश्वास शामिल है कि मानवीय पुरुषार्थ का ध्येय मौजूदा समाज के जीवन से ऊँचा, बल्कि सारे मानव-समाज के जीवन से भी ऊँचा है। नास्तिकता भी, जब वह सर्वांशतः सच्ची बलवती प्रकृतियों से निकलती है, और जब वह निर्बलता की नहीं, बल्कि शक्ति की एक मूर्त रूप होती है, तो वह भी धार्मिक आत्मा की महान सेना के प्रयाण में शामिल हो जाती है।

मैं नहीं कह सकता कि मैं रोम्याँ रोलाँ की इन शर्तों को पूरा करता ही हूँ, लेकिन इन शर्तों पर तो इन महान सेना का एक तुच्छ सैनिक बनने को मैं तैयार हूँ।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

14

साम्प्रदायिकता और नेहरूजी की प्रतिक्रिया

जवाहरलाल नेहरू की छोटी बहन कृष्णा की जब शादी हुई तभी विट्ठलभाई पटेल की मृत्यु की दुखद सूचना उन्हें मिली। विट्ठलभाई पटेल हिन्दुस्तान की आजादी की लड़ाई के एिक निर्भीक और महान योद्धा थे। एक कुशल सांसद और असेम्बली के प्रेसीडेंट के रूप में भी उन्होंने खूब ख्याति प्राप्त की थी। आजादी की लड़ाई के बीच में ही बुजुर्ग और योग्य नेताओं का चले जाना निराशा और चिंता का विषय था।

पं. जवाहरलाल नेहरू ने हिन्दू विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के सामने साम्प्रदायिकता की जोरदार निंदा की, उसके सभापति यूनिवर्सिटी के वाइस-चांसलर पण्डित मदनमोहन मालवीय थे। विशेषकर तो हिन्दू महासभा के कामकाज की उन्होंने खूब आलोचना की। जवाहरलाल नेहरू सम्प्रदायी लोगों को चाहे वे हिन्दू हों या मुसलमान, उनकी सुधार-विरोधी हरकतों के कारण, आजादी की राह में देरी तथा सामाजिक रूप से अव्यवहारिक मानते थे। उन्होंने अपने रोष को व्यक्त करते हुए हिन्दू-मुस्लिम साम्प्रदायिकता पर एक तर्कपूर्ण लेख लिखा जिसमें बताया गया कि दोनों ओर की साम्प्रदायिकता सच्ची साम्प्रदायिकता नहीं है; बल्कि साम्प्रदायिक आवरण में ढकी हुई सामाजिक और राजनैतिक संकीर्णता है।

नेहरूजी यह समझते थे कि साम्प्रदायिक नेता हिन्दुस्तान और इंग्लैंड के प्रतिक्रियावादी तत्वों से मिलतकर सार्वजनिक क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहते हैं,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation;Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
असल में तो वे सामाजिक सार्वजनिक क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहते हैं, असल में तो वे सामाजिक और राजनैतिक प्रगति के विरोधी हैं, उनका जनसाधारण के हितों से कोई सम्बन्ध नहीं है।

1857 के गदर से लेकर अंग्रेजी सरकार की मूल नीति यही रही कि हिन्दू-मुसलमान एक न रहें और आपस में लड़ते रहें जिससे उनका शासन निर्बाध गति से चलता रहे। शुरुआत में अंग्रेजों के वार मुसलमानों पर अधिक होते थे क्योंकि उनसे पहले भारते में मुसलमानों का साम्राज्य था। दूसरे मुसलमानों को वे लड़ाकू और खतरनाक समझते थे, साथ ही उनकी तालीम भी अच्छी नहीं थी। जबकि हिन्दुओं ने अंग्रेजी भाषा और सरकारी नौकरियों को तत्परता से अपना लिया जिससे अंग्रेजों को वे सुलभ प्रतीत हुए।

बाद में अंग्रेजों ने मुसलमानों की पीठ ठोकने के लिए मुसलमानों की एक बड़ी हस्ती सर सैयद अहमद खाँ से मदद ली। सर सैयद अहमद खाँ शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ी हुई मुस्लिम जाति के कारण बहुत दुखी थे। उन्हें यह भी तकलीफ थी कि अंग्रेजी शासन की कृपा मुसलमानों को नहीं मिलती। अंग्रेजों के वह बहुत बड़े प्रशंसक थे और यूरोप की यात्रा ने तो उन्हें अंग्रेजों का मुरीद का बना दिया। सन् 1869 में वह इंग्लैंड गये, वहाँ के आकर्षण और चमक-दमक से प्रभावित होकर अपने घर जो पत्र लिखा, उससे अंग्रेजों का प्रभाव उनके विचारों पर देखा जा सकता है–''हिंदुस्तानियों को जानवर के समान हलका, नीच और घृणित समझते हैं इसके लिए उनको माफ नहीं किया जा सकता, फिर भी मेरा खयाल है कि वे इस तरह का बर्ताव इसलिए करते हैं कि उन्होंने जो राय हमारे बारे में कायम की है वह ज्यादा गलत नहीं है। मैं अंग्रेजों की झूठी तारीफ नहीं कर रहा हूँ, यदि मैं सचमुच यह कहूँ कि हिंदुस्तान के लोग चाहे वे ऊँचे हों या नीचे, बड़े व्यापारी हों या छोटे दुकानदार, पढ़े-लिखे हों या अनपढ़, अंग्रेजों की तालीम, तमीज और ईमानदारी के मुकाबले में ऐसे हैं जैसे किसी काबिल और खूबसूरत आदमी के मुकाबले में एक गंदा उनके पास इसकी वजह है।...जो कुछ मैं देख रहा हूँ और रोजमर्रा देख रहा हूँ वह एक हिंदुस्तानी के समझ के बिल्कुल बाहर की बात है... परलोक की, इस लोक की सारी सुंदर वस्तुएँ, जो इंसान में होनी चाहिए, खुदा ने यूरोप को, खास कर इंग्लैंड को बख्श दी हैं।'

वास्तविकता तो यह है कि कोई भी व्यक्ति अंग्रेजों की और यूरोप की इससे अधिक प्रशंसा नहीं कर सकता। सर सैयद अहमद खाँ ने सन् 1887 के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
दिसम्बर में कांग्रेस के लखनऊ में आयोजित सालाना जलसे में कांग्रेस की नरम माँगों की भी आलोचना करते हुए कहा था, "अगर सरकार अफगानिस्तान से लड़े या बर्मा को जीते, तो उसकी नीति की आलोचना करना हमारा काम नहीं है। सरकार ने कानून बनाने के लिए कौंसिल बना रखी है। उस कौंसिल के लिए वह सभी प्रांतों से उन अधिकारियों को चुनती है जो राज-काज और जनता की हालात से बहुत अच्छी तरह वाकिफ हैं, और कुछ रईसों को भी चुनती है जो समाज में अपने ऊँचे रुतबे की वजह से असेम्बली में बैठने के काबिल हैं। कुछ लोग पूछ सकते हैं कि उनका चुनाव इसलिए क्यों किया जाए कि वे रुतबे वाले हैं, काबीलियत का खयाल क्यों न रखा जाये?...मैं आपसे पूछता हूँ, क्या आपके मालदार घराने के लोग यह पसंद करेंगे कि छोटी जाति और ओछे खानदान के लोग, चाहे वे बी. ए. और एम. ए. ही क्यों न हों और जरूरी योग्यता रखते हों, उन पर हुकूमत करे और उनकी जानमाल से सम्बन्ध रखने वाले कानून बनाने की ताकत रखे? कभी नहीं। वायसराय ऐसा कभी नहीं कह सकता कि सिवाय ऊँचे खानदान के आदमी के किसी और को अपना साथी कबूल करे, या उसके साथ भाईचारे का बर्ताव रखे या उसे ऐसी दावतों में निमंत्रण दे जिनमें उसे इंग्लैंड के अमीर-उमरा (ड्यूक और अर्ल) के साथ दस्तरख्वान पर बैठना पड़ता हो। क्या हम कह सकते हैं कि कानून के लिए जो तरीके सरकार ने अख्तियार किये हैं, लोगों की मर्जी का खयाल रखे बिना ही किये गये? क्या हम कह सकते हैं कि कानून बनाने में हमारा कुछ भी हाथ नहीं है? बेशक हम ऐसा नहीं कह सकते।"

नेहरूजी का कहना है कि "ये शब्द उस व्यक्ति के हैं जो भारत में 'लोकसत्तात्मक इस्लाम' का नेता और प्रतिनिधि था"...सर सैयद के प्रभावशाली और जोरदार व्यक्तित्व का मुसलमानों पर बहुत असर पड़ा और अलीगढ़ कॉलिज उनकी उम्मीदों और ख्वाहिशों का एक प्रत्यक्ष नमूना साबित हुआ।...अलीगढ़ कॉलिज ने बड़ा अच्छा काम किया और उसने एक बड़ी तादाद में अच्छे काबिल आदमी तैयार करके समझदार मुसलमानों का सारा रुख ही बदल दिया। लेकिन जिसे साँचे में वह ढाला गथा था उससे वह निकल न सका—उसके ऊपर जमींदारों का असर बना ही रहा और उसके एक औसत विद्यार्थी का उद्देश्य सिर्फ सरकारी नौकरी ही रहा। साहस के साथ जीवन संग्राम में उतरने या किसी ऊँचे लक्ष्य को पाने का प्रयत्न करने की इच्छा उसमें नहीं थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तभी आगा खाँ, जो एक अत्यन्त धनवान राजा और एक वर्ग के धार्मिक गुरु थे, मुसलमानों के नेता के रूप मे प्रकट हुए। ब्रिटिश राजसत्ता से अत्यंत निकटता का भाव रखने के कारण अंग्रेजों के वह खास आदमी बन गये थे। उनका अधिकतर समय यूरोप मे ही बीतता था। उनके द्वारा मुसलमानों का नेतृत्व करने का सीधा-सा अर्थ था कि मुस्लिम जमींदार और मध्यम वर्ग के लोग सरकार के पक्षधर बन गये।

सर वेलेंटाइन शिरोल ने आगा खाँ को उस समय के वायसराय लॉर्ड मिंटो को दिए गए सुझाव के विषय में लिखा कि ''बंग-भंग से पैदा होने वाली राजनैतिक स्थिति के बारे में मुसलमानों की क्या राय है, ताकि जल्दबाजी में हिन्दुओं को कहीं ऐसी राजनैतिक सुविधाएँ न दे दी जायें जो हिन्दू बहुमत ब्रिटिश राज की दृढ़त्ज्ञ और मुस्लिम अल्पमत के हितों के लिए, जिसकी राजभक्ति में किसी को संदेह नहीं हो सकता था, समान रूप से खतारनाक था।''

बाद में धीरे-धीरे मुसलमानों के नये-नये नेता पैदा होने लगे जिससे आगा खाँ का महत्त्व भी कम होता गया। नये नेताओं में अली बंधु हुए। वह हिन्दू और मुस्लिम संस्कृति को समझने की कोशिश करते रहे, परंतु असफल रहे।

वह स्वयं लिखते हैं, ''मैं देखता हूँ कि उत्तरी हिंदुस्तान में ऐसे मध्यमवर्गीय मुसलमान और हिंदुओं की एक नगण्य-सी संख्या है जिन पर फारसी भाषा और परम्पराओं की छाप पड़ी हुई है। और अगर सर्व-साधारण जनता के रहन-सहन को देखा जाए तो 'मुस्लिम संस्कृति' के स्पष्ट चिह्न नजरे आते हैं कि एक खास तरह का पायजामा,न ज्यादा लम्बा न ज्यादा छोटा, दाढ़ी बढ़ाया जाना और मूँछों को बनाने का एक खास तरीका, और एक खास तरह का टोंटीदार लोटा। इस तरह से हिंदुओं के भी इसी ढंग के रस्मोरिवाज हैं। धोती पहनना, चोटी रखना और एक भिन्न प्रकार का लोटा रखना... मुसलमानों के शिक्षित वर्ग में दाढ़ी के लिए बहुत कम प्रेम रह गया है, हालाँकि अलीगढ़ में लाल रंग की तुर्की टोपी अब भी पसंद की जाती है। ...मुझे यह कहना पड़ता है कि उन हिंदुओं और मुसलमानों को देखकर मुझे बड़ी दया आती है, जो हमेशा पुराने जमाने का रोना रोया करते हैं और उन चीजों को पकड़ने की कोशिश करते हैं जो उनके हाथ से खिसकती जा रही हैं।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

15

नेहरूजी और लिपि

लिपि के सम्बन्ध में भी नेहरूजी कुछ सुधार चाहते थे। बहन कृष्णा की शादी में जो निमंत्रण-पत्र छपवाया गया उसका काफी विरोध हुआ। वह स्वयं 'मेरी कहानी' में लिखते हैं, ''विवाह के लिए जो छोटा-सा निमंत्रण-पत्र हमने भेजा था वह लैटिन अक्षरों व हिंदुस्तानी भाषा में छपवाया गया था। वह एक बिलकुल नई बात थी। अब तक इस तरह के निमंत्रण-पत्र आम तौर पर देवनागरी या फारसी लीपि में ही लिखे जाते थे। फौज या ईसाई मिशन वालों को छोड़कर कहीं भी हिन्दुस्तानी भाषा लैटिन अक्षरों में नहीं लिखी जाती थी। मैंने इस लिपि का इस्तेमाल केवल यह देखने के लिए किया था कि इसका मुख्तलिफ किस्म के लोगों पर क्या असर होता है। इसे कुछ ने पसंद किया कुछ ने नहीं। ज्यादा संख्या नापसंद करने वालों की ही थी। बहुत कम लोगों के पास यह निमंत्रण भेजा गया था, और अगर ज्यादा लोगों के पास भेजा जाता तो इसका असर और भी ज्यादा खिलाफ होता। गांधीजी ने भी इसे पसंद नहीं किया।

...मेरी समझ में लिपि सुधार की दृष्टि से जो अगला कदम होना चाहिए, वह है संस्कृत भाषा से उत्पन्न चारों सहोदराओं-हिन्दी, बंगला, मराठी, गुजराती भाषाओं के लिए एक-सी लिपि बनाना। इन चारों भाषाओं की लिपियों का उद्‌गम एक ही है और इनमे एक-दूसरे से भिन्नता भी विशेष नहीं है और इसलिए इन सबके किए एक ही लिपि ढूँढ़ निकालने में कोई खास दिक्कत न होनी चाहिए। इससे ये चारों भाषाएँ एक-दूसरे के नजदीक आ जायेंगी।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भाषा के प्रशन पर अंग्रेजों के विषय में नेहरूजी ने लिखा है, ''हमारे अंग्रेजी शासकों ने हमारे देश के बारे में जो दंतकथाएँ संसार-भर में फैला रखी हैं, उनमें से एक यह भी है कि हिंदुस्तान में कई सौ भाषाएं बोली जाती हैं। इस सब भाषाओं को 'बर्नाक्युलर' के नाम से पुकारते हैं, जिसका अर्थ है–गुलामों की भाषा (लैटिन में 'बर्ना' का अर्थ घर से पैदा हुआ गुलाम है।) हममें से बहुतों ने बिना समझे-बुझे इस नामकरण को स्वीकार कर लिया है।...अंग्रेज इस बात से बिलकुल अपरिचित मालूम पड़ते हैं कि हिन्दुस्तानी और दूसरी भाषाओं का साहित्य बहुत ऊँचा और बहुत विस्तृत है।

...हिंदुस्तान की मुख्य भाषाएं हैं–हिन्दुस्तानी (हिन्दी और उर्दू जिसकी दो किस्मे हैं), बंगला, गुजराती, मराठी, तमिल, तेलुगू, मलयालम और कन्नड़। इनमें अगर असमी, उड़िया, सिंधी, पश्तो और पंजाबी को भी शामिल कर लिया जाए, तो सिवा कुछ पहाड़ी और जंगली हिस्सों को छोड़कर सारे देश की भाषाएँ इनमें आ जाती है। इनमें से भारतीय हिस्सों को छोड़कर सारे देश की भाषाएँ इनमें आ जाती है। इनमें से भारतीय आर्य-भाषाएँ जो उत्तर-मध्य और पश्चिम भारत में प्रचलित हैं, आपस में बहुत काफी मिलती-जुलती हैं और दक्षिणी भाषाएं भिन्न होते हुए भी संस्कृत से काफी प्रभावित हुई हैं और उनमें संस्कृत के शब्दों की बहुतायत है।... मुझे इसमें कुछ भी शक नहीं है कि हिंदुस्तानी ही भारतवर्ष की राष्ट्रभाषा बनेगी। दरअसल रोजमर्रा के काम-काज के लिए वह एक बड़ी हद तक आज भी राष्ट्रभाषा-सी बनी हुई है।''

अंग्रेजी भाषा के विषय में अपना मत स्पष्ट करते हुए नेहरूजी कहते हैं, ''कुछ लोगों का खयाल है कि बहुत करके अंग्रेजी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो जायेगी, लेकिन ऊँचे दरजे के गिने-चुने पढ़े-लिखों को छोड़कर साधारण जनता इसे अपनायेगी, यह धारणा मुझे एक असंभव कल्पना के समान दिखाई देती है। औद्योगिक, वैज्ञानिक और व्यापारिक कामों में, विशेषकर अन्तर्राष्ट्रीय व्यवहारों में, अंग्रेजी ज्यादा काम में आने लगे। हममें से बहुतों के लिए विदेशी भाषाओं का सीखना व जानना बहुत जरूरी है, ताकि संसार के विचारों और प्रगतियों से हमारी जानकारी होती रहे, और इस बात को ध्यान में रखते हुए मैं तो पसंद करूँगा कि हमारी यूनिवर्सिटियों में अंग्रेजी के अलावा फ्रेंच, जर्मन, रशियन, स्पेनिश और इटालियन भाषाएँ सीखने के लिए विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया जाए।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

16

नेहरूजी की विदेश नीति

अंतरिम सरकार के गठन के बाद 7 सितम्बर, 1946 को आकाशवाणी से अपने प्रथम प्रसारण में नेहरूजी ने विदेशी मामलों के सम्बन्ध में अपने विचार रखते हुए कहा कि जहाँ तक संभव होगा वे महाशक्तियों की गुटबाजियों से दूर रहना पसंद करेंगे। इसी गुटबाजी के कारण विश्वयुद्ध हुए और एक नया विश्वयुद्ध विनाश की ओर ले जा सकता है। नेहरूजी उपनिवेशवाद तथा युद्ध से हमेशा घृणा करते रहे। उनकी विदेश नीति के दो महत्त्वपूर्ण मानदंड थे–एक तो अधीन देशों को स्वतंत्रता दिलाना। दूसरे, विश्व के सभी राष्ट्रों के बीच शांति और सहयोग बढ़ाना।

उन्होंने महसूस किया कि ब्रिटेन की विदेश नीति की अधिकांश मान्यताएँ स्वतंत्र भारत के लिए सही नहीं हैं। ब्रिटिश सरकार ने ब्रिटेन के अतिरिक्त अन्य किसी देश से संबंध रखने के लिए देश को कभी प्रोत्साहित नहीं किया, यहाँ तक कि अमरीका, रूस तथा चीन जैसे देशों के द्वार।

अगस्त 1947 से स्वतंत्र भारत के साउथ ब्लाक में बैठते ही नेहरूजी ने विदेश नीति को पश्चिमी पूँजीवाद तथा सोवियत साम्यवाद से हटकर नई दिशा दी।

स्वाधीनता आंदोलन के समय जेल में रहते हुए उन्होंने विश्व की समस्याओं का गहराई से अध्ययन करके अपनी राय बनाई। नेहरूजी युद्ध और सैन्य शक्ति के विरोधी थे और परमाणु बम को मानव जाति के लिए अत्यन्त खतरनाक मानते थे। परमाणु बम को उन्होंने 'मृत्यु के व्यापारी' की संज्ञा प्रदान

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की। वे इंग्लैंड और राष्ट्रमंडल के देशों में परस्पर मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों के पक्षधर थे।

इंडोनशिया जैसे अन्य एशियाई देशों से पूर्ण सम्बन्धों के विषय में उन्होंने कहा–

"सोवियत संघ एशिया में हमारा पड़ोसी देश है, हमारे दोनों देशों के कई कार्य एक जैसे है जिन्हें मिलकर आपसी सहयोग से पूरा करना है।"

चीन के सम्बन्ध में उन्होंने कहा–

"यह महान देश है जिसका अतीत भी महान रहा है, हमारा पड़ोसी देश युगों से हमारा मित्र रहा है और यह मैत्री सम्बन्ध और भी मजबूत होंगे।"

नेहरूजी की विदेश नीति के प्रमुख बिंदु थे–रंगभेद तथा उपनिवेशवाद का विरोध, बिना गुटबाजी के समानता के स्तर पर अमरीका, सोवियत संघ तथा चीन के साथ सहयोग, ब्रिटेन के साथ पुराने संघर्ष की समाप्ति तथा मैत्रीपूर्ण व्यवहार।

दूसरे विश्वयुद्ध के बाद अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति अव्यवस्थित और संदेहास्पद बन गई थी। देश के स्वतंत्र होने पर विभिन्न देशों के व्यक्तियों द्वारा नेहरूजी के प्रति अजीब टिप्पणियाँ थीं। अमरीका के अधिकांश निवासी यह विश्वास करते थे कि स्वतंत्र भारत अमरीका का साथी होगा क्योंकि नेहरूजी प्रजातंत्र के पक्षधर हैं। संयुक्त राष्ट्रसंघ में अमरीकी प्रतिनिधिमंडल के सदस्य जान फोस्टर डलस ने जनवरी 1947 में कहा, "अंतरिम सरकार के माध्यम से भारत में सोवियत–साम्यवाल का प्रभाव बढ़ रहा है।" संयुक्त राष्ट्रसंघ में नेहरूजी को सोवियत संघ का एजेन्ट तक कह दिया गया था। ट्रूमैन–प्रशासन के सचिव डीन एचसन ने 1949 में नेहरूजी से बातचीत के बाद कहा, "आज तक जिन लोगों से मेरा वास्ता पड़ा है नेहरू उन सबमें से जटिल व्यक्ति हैं।"

भारत अमरीका की हाँ–में–हाँ नहीं मिला रहा था उधर सोवियत संघ समझ रहा था कि भारत राजनीतिक और आर्थिक दृष्टि से पश्चिमी साम्राज्यवाद का साथी है। सोवियत संघ ने तो नेहरूजी को स्वतंत्र भारत का नेता ही स्वीकार नहीं किया था। वहाँ के अखबारों में उनका नाम तक प्रकाशित नहीं होता था। यहाँ तक कि ब्रिटेन द्वारा 1947 में भारत को सत्ता जाने की खबर भी रूस के समाचार–पत्रों में नहीं छपी थी। राष्ट्रमंडल की सदस्यता के कारण भारत को गलत समझने की भूल का ही यह परिणाम था। चीन माओत्से–तुंग के अधीन था। कम्युनिस्ट चीन का व्यवहार भी प्रारंभ में भारत तथा नेहरूजी के प्रति सहिष्णुता का नहीं था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सोवियत संघ और चीन के असहयोगपूर्ण रवैये के बावजूद नेहरूजी ने अपनी सूझ–बूझ से भारत को पश्चिमी गुट से अलग रखा। यद्यपि मंत्रिमंडल और सैन्य अधिकारियों तथा असैनिक उच्च अधिकारियों में से बहुत से लोग इस बात से आश्वस्त थे कि अमरीका के साथ गठबंधन रखकर ही भारत राष्ट्रीय सुरक्षा तथा आर्थिक प्रगति को बनाये रख सकता है। एक तरह से यह सत्य भी था कि स्वतंत्र होने कुछ वर्षों बाद तक भारतीय सेनाएँ उपकरणों, शस्त्रों और तकनीकी प्रशिक्षण के लिए ब्रिटेन पर भी आश्रित थीं। यहाँ तक कि सेना के वरिष्ठतम अधिकारी भी अंग्रेज थे।

इन सबके बावजूद नेहरूजी भारत के लिए एक स्वतंत्र विदेश नीति अपना सके तो यह विश्व के विषय में उनकी गहन जानकारी ही थी। नेहरूजी यह जानते थे कि भारत बहुत बड़ी विश्व शक्ति नहीं है, लेकिन इस संसार का एक विशाल देश है जो किसी का पिछलग्गू नही होना चाहिए। अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में मौलिक मत को महत्त्वपूर्ण मानते थे। भारत की अपनी गढ़ी हुई नीतियों को आधार बनाकर उन्होंने स्वतंत्र निर्णय लिये। नेहरूजी ने किसी सिद्धांतवादी अथवा सैनिक गुट में सम्मिलित न होकर गुटनिरपेक्षता के सिद्धांत को मूलमंत्र बनाया और यह नीति आज भी भारतीय विदेश नीति का मूल आधार है।

नेहरूजी भारत को राष्ट्रमंडल का सदस्य बनाने के पक्ष में नहीं थे किंतु 1947 में औपनिवेशिक दर्जा प्राप्त करने के लिए तैयार हो गये। राष्ट्रमंडल में रहने के कारण संक्रमण काल की इस बेला में भारत को कई लाभ हुए। ब्रिटेन के टोरी सदस्यों का भारत के प्रति रुख नरम हो गया, पाकिस्तान के साथ सम्बन्ध सुधरने में सहायता मिली। अंग्रेज सैन्य अधिकारी भारत के वफादार बने रहे और देशी रियासतों के असंतोष को खत्म करने तथा भारत में विलय करने में आसानी हुई।

भारत के राष्ट्रमंडल मे सम्मिलित हो जाने से ब्रिटेन के उपनिवेशों को स्वतंत्रता दिलाने में भारत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सका। नेहरूजी द्वारा राष्ट्रमंडल की संरचना में महत्त्वपूर्ण परिर्वतन करने और अधिक उपयोगी बनने के कारण उन्हें नए राष्ट्रमंडल का वास्तविक निर्माता बताया गया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

17

भारत और अमरीका सम्बन्ध

अमरीका के साथ भारत के सम्बन्धों में समय-समय पर उतार-चढ़ाव होता रहा। 11 अक्टूबर, 1949 को नेहरूजी पहली बार अमरीका की यात्रा पर गये। उस समय देश साम्यवाद विरोधी विचारों के जाल में फँसा हुआ था। वहाँ उन्होंने विभिन्न राष्ट्रों के बीच शांति और सहयोग पर आधारित सम्बन्धों के विषय में अपने विचार व्यक्त किये।

उन्होंने भाषण देते हुए कहा, ''आपकी महान सफलताओं से कुछ सीखने के लिए मैं आपके देश में आया हूँ। और इसलिए भी आया हूँ कि आपके प्रति अपने देश की शुभकामनाएँ प्रकट करूँ। मेरी यात्रा दोनों देशों की जनता को एक-दूसरे को समझने में सहायक हो सकती है और उन्हें मित्रता के ऐसे सुदृढ़ बंधन में बाँध सकती है, जो अप्रत्यक्ष होते हैं, लेकिन जो शारीरिक बंधनों से अधिक मजबूत होते हैं और अलग-अलग प्रकार के देशों को एक सूत्र में बाँध देते हैं...।''

नेहरूजी की अमेरिका यात्रा के समय वहाँ के प्रसिद्ध समाचार-पत्र न्यूयार्क टाइम्स ने लिखा-

''किसी व्यक्ति की लोकप्रियता यदि इस बात से आँकी जाये कि उसके देशवासी उसे स्वेच्छा से कितना सहयोग देते हैं, तो अमेरिका की जनता पहली बार दुनिया के सबसे लोकप्रिय व्यक्ति के दर्शन करेगी।''

न्यूयार्क में नागरिक अभिनंदन के समय नेहरूजी के विषय में वहाँ के मेयर ने प्रशंसा भरे शब्दों में कहा-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"आज वह व्यक्ति हमारे सामने है, जिसने बिना बल प्रयोग के स्वतंत्रता प्राप्त करने की शिक्षा दी है। वह व्यक्ति हमारे सामने है, जो इस दुनिया में उस शाश्वत सत्य का प्रतिनिधित्व करता है, जिससे शांति प्राप्त हो सकती है–न केवल भारत को बल्कि दुनिया के समस्त राष्ट्रों को। ऐसे महान व्यक्ति का स्वागत करते हुए मुझे अत्याधिक प्रसन्नता हो रही है।"

नेहरूजी दूसरी बार सन् 1956 में अमरीका की यात्रा पर गये। उस समय पाकिस्तान का सैनिक सहायता दिये जाने के कारण भारत और अमरीका के सम्बन्धों में तनाव आ गया था।

तीसरी और अंतिम बार वे 1961 में अमरीका गये, तब कैनेडी अमरीका के राष्ट्रपति थे। उस समय तक भारत और अमरीका के सम्बन्धों में कुछ सुधार हो गया था। राष्ट्रपिता कैनेडी व्यक्तिगत रूप से नेहरूजी के बहुत प्रशंसक थे। 1962 में भारत-अमेरिकी मैत्री अपनी चरम सीमा तक मधुर हो गयी थी लेकिन कुछ समय बाद तनाव की स्थिति उत्पन्न हो गई। नेहरूजी इस बात से रुष्ट रहते थे कि अमरीका एशिया की भावनाओं की कद्र न कर एशिया में ही अपने समर्थक देशों का गुट बनाने में सक्रिय हो गया था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

18

सोवियत संघ से सम्बन्ध

जवाहरलाल नेहरू के प्रयासों के कारण विश्व की दूसरी महान शक्ति सोवियत संघ के साथ भारत के सम्बन्धों में आश्चर्यजनक सुधार हुआ। भारत के स्वतंत्र होने के प्रारंभिक दिनों में उसने भारत के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण नहीं अपनाया था लेकिन नेहरूजी निराश नहीं हुए। भारत के स्वाधीनता आंदोलन के वरिष्ठ नेताओं में नेहरूजी को ही एकमात्र भरोसा था कि युद्ध के पश्चात विश्व में सोवियत संघ की महत्त्वपूर्ण भूमिका होगी तथा एक दिन भारत और सोवियत संघ के बीच में भी अच्छे सम्बन्धों की स्थापना होगी।

नेहरूजी के लगातार प्रयास से 1951 में भारत-सोवियत सांस्कृतिक समाज की स्थापना हुई। यहाँ तक कि 1952 में संयुक्त राष्ट्र में सोवियत प्रतिनिधिमंडल ने अपने देश की लम्बी चुप्पी तोड़ते हुए कश्मीर के मामले पर भारत के दृष्टिोण का जोरदार समर्थन किया। इसके बाद कुछ माह बाद भारत के राजदूत सर्वपल्ली राधाकृष्णनन की पहली बार मास्को में स्टालिन से भेंट हुई।

स्टालिन की मृत्यु के बाद भारत और सोवियत संघ के बीच नये सम्बन्धों की शुरुआत हुई।

7 जून, सन् 1955 को नेहरूजी अपनी पुत्री इंदिरा प्रियदर्शिनी के साथ सोवियत संघ की यात्रा पर गये। रूस के तत्कालीन प्रधानमंत्री बुलगानिन ने नेहरूजी की भव्य स्वागत किया। उस समय हवाई अड्डे पर बुलगानिन का पूरा मंत्रिमंडल, राजदूत, उच्च अधिकारीगण, रूस के गणमान्य व्यक्ति तथा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

देशी-विदेशी पत्रकार नेहरूजी के स्वागत के लिए उपस्थित थे। नेहरूजी पहली बार विदेशी धरती पर हिंदी में बोले-

"यहाँ सोवियत संघ में आने की मेरी इच्छा पहले से ही रही है। इस प्रसिद्ध और ऐतिहासिक नगर में मैं बहुत पहले आना चाहता था। मेरी इच्छा आज पूरी हुई है। मैं अपने को एक यात्री समझता हूँ और आपकी सरकार तथा जनता के लिए महान शुभेच्छाएँ लिए हुए एक यात्री के रूप में ही यहाँ आया हूं। मैं आपके विषय में और अधिक जानकारी प्राप्त करने यहाँ आया हूँ। और मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरे आने से हमारे संबंध और भी दृढ़ होंगे। इस हार्दिक और मैत्रीपूर्ण स्वागत के लिए मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।"

साम्राज्यवाद तथा समाजवाद के लिए युद्ध निश्चित है और हिंसक क्रान्ति के बिना समाजवाद नहीं आ सकता, इन दोनों सिद्धांतों को अस्वीकार कर देने से दोनों देशों के संबंधों मे प्रगाढ़ता आई। सोवियत संघ की नई नीतियाँ विश्व की व्यवस्था से मेल खाती थीं जिनके लिए नेहरूजी पिछले कई वर्षों से प्रयासरत थे। दोनों देशों के बीच आर्थिक, व्यापारिक सहयोग में वृद्धि हुई।

1962 तक प्रधानमंत्री नेहरू एक वरष्ठि राजनेता के रूप में विश्व में सम्मान पा चुके थे।

रूस से अपनी यात्रा से लौटते समय नेहरूजी ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा-

"हम इस महान देश की जनता के प्रति भारतीय जनता का अभिवादन एवम् शुभेच्छाएँ प्रकट करने आए थे। अब हम अपने देश और अपनी जनता के प्रति आपके प्रेम और सद्‌भावों से लदे हुए घर वापिस जा रहे हैं।"

1955 से भारत-सोवियत सम्बन्धों मे लगातार सुधार होता रहा। इसी के फलस्वरूप सोवियत संघ ने कश्मीर और गोवा जैसे मसलों पर भारत का पक्ष लिया।

18 नवंबर, सन् 1955 को सोवियत संघ रूस के दोनों प्रमुख नेता बुलगानिन और खुश्चेव नेहरूजी के निमंत्रण पर भारत पधारे। यात्रा के दौरान खुश्चेव ने नेहरूजी को बड़े गर्व से बताया कि रूसी वैज्ञानिकों ने लाखों लोगों का विनाश करने वाला एक अस्त्र तैयार कर लिया है।

नेहरूजी ने उसकी बात धैयपूर्वक सुनी और प्रतिक्रियास्वरूप गंभीरता से उत्तर देते हुए कहा-

"मिस्टर खुश्चेव! लगभग दो हजार वर्ष पूर्व एक महान योद्धा ने इस भारत

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पर शासन किया था, उसका नाम था—सम्राट अशोक। उसने अनेक युद्ध लड़े और अपने राज्य का विस्तार किया। उसके सेनापति हर युद्ध में विजयी होते और आकर उसे बताते कि हजारों मारे गये और हजारों बंदी बना लिए गए। उसे मिलने वाली अधिकांश खबरें रक्तरंजित हुआ करती थीं। आखिर इन हत्याकांडों और रक्तपात की खबरें सुन-सुनकर वह ऊब गया और उसका झुकाब बौद्ध धर्म की ओर होने लगा। एक दिन उसके एक सेनापति ने आकर उसको एक और विजय की सूचना दी। उसने बताया कि लाखों मारे गए हैं और शत्रु का समस्त राज्य नष्ट-भ्रष्ट हो गया है। अशोक यह सब सह न सका। वह अपने सिंहासन से उठा और म्यान से तलवार निकालकर उसके दो टुकड़े कर दिए, फिर गरजकर बोला—"बस! बहुत रक्तपात और हिंसा हो गई। बंद करो यह सब। अब पूरे देश में शांति का साम्राज्य रहेगा।"

खुश्चेव नेहरूजी से वह ऐतिहासिक घटना सुनकर निरुत्तर हो गये। उन्हें नेहरूजी की शालीनता और शांतप्रियता में अगाध विश्वास हो गया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

19

भारत-चीन सम्बन्ध और नेहरूजी

जवाहरलाल नेहरू एशिया के सभी देशों खासकर पड़ोसी देशों के साथ मैत्रीपूर्ण घनिष्ठ सम्बन्धों की कामना करते थे। सन् 1949 में चीन में गणराज्य स्थापित हुआ। चीन के प्रति नेहरूजी का बहुत लगाव था और चीन के साथ मधुर सम्बन्धों को एक नया आयाम देना चाहते थे। उनका विचार था कि दोनों ही देशों की संस्कृति बहुत प्राचीन है, पश्चिमी साम्राज्यवाद के विषपूर्ण दंश को दोनों को ही झेलना पड़ा है जिसकी वजह से दोनों देशों को अपनी जनता के जीवन-स्तर को सुधारने में दर्शकों तक संघर्ष करना पड़ा है।

इन्ही कारणों से नेहरूजी चीन को हमेशा अपना समर्थन देते रहे। उनके समर्थन के प्रमाण हैं–ब्रिटेन द्वारा भारतीय सैनिकों को चीन भेजने की आलोचना उन्होंने 1927 मे ब्रुसेल्स में आयोजित दलित सम्मेलन में खुलकर की। 1937 में जापान ने चीन पर आक्रमण कर दिया तो नेहरूजी ने इसे मनमानी कार्रवाई बताया। 1949 में चीन में गणराज्य की स्थापना पर उसे मान्यता प्रदान करने में भारत सबसे आगे था। कम्युनिस्ट चीन को संयुक्त राष्ट्र का सदस्य बनाने के लिए नेहरूजी ने जोरदार सहयोग और समर्थन दिया जबकि पश्चिमी देशों के गुट ने भारी विरोध प्रकट किया था। सन् 1950 में चीन द्वारा तिब्बत पर प्रभुत्व जमाने का प्रयास किया गया जिससे तिब्बत की जनता की सदियों पुरानी स्वायत्तता खतरे में पड़ गई लेकिन तब भी नेहरूजी ने धैर्य से काम लिया। नेहरूजी चीन को यह विश्वास दिलाना चाहते थे कि भारत का उसके साथ सैद्धान्तिक अथवा व्यावहारिक कोई

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मतभेद नहीं है। न ही भारत अपने किसी पड़ोसी देश की भूमि पर बदनीयती रखता है।

नेहरूजी की इच्छा रही कि चीन शांतिपूर्ण ढंग से उन्नति की राह पर आगे बढ़े। वह अपने सहयोग तथा विश्वास से उसकी सभी गलतफहमियाँ दूर करने को प्रयत्नशील रहे।

जून 1954 में चीन के प्रधानमंत्री चाऊ-एन-लाई के भारत आगमन पर उनका भव्य स्वागत किया गया। दोनों देशों के प्रधानमंत्री ने 'पंचशील' के पाँच सिद्धांतों पर हस्ताक्षर किये और उनका अनुकरण करने को सहमत हुए–

1. एक-दूसरे की प्रादेशिक अखंडता एवं प्रभुसत्ता का सम्मान करना।
2. एक-दूसरे के विरुद्ध आक्रमक कार्यवाही न करना।
3. एक-दूसरे के घरेलू मामलों में हस्तक्षेप न करना।
4. समानता एवं परस्पर हित की नीति का पालन करना।
5. शांतिपूर्ण सहअस्तित्व की नीति का पालन करना।

इसके बाद नेहरूजी ने भी 1954 में ही चीन की यात्रा की। चीन पहुँचने पर उन्होंने कहा "मैं यहाँ शांति और सद्भावना का दूत बनकर आया हूँ।"

अपनी चीन-यात्रा के संदर्भ में उन्होंने कहा–

"मैं चीन इसलिए जा रहा हूँ क्योंकि यह मकान, देश मुझे सैकड़ों वजहों से आकृष्ट कर रहा है।...

वहाँ जाने का फैसला इसलिए किया कि चीन के मेरे दोस्तों का मुझे निमंत्रण था। और मुझे सदियों पुरानी याद आ रही थी। मेरी आँखों के सामने जैसे कोई इतिहास का एक विशाल वितान तान रहा था। हिंदुस्तान और चीन द्वारा सभी क्षणों की भोगी दुख-सुख की घड़ियाँ याद आ रही थीं, मौजूदा संघर्ष के सभी क्षण काफूर होने लगे थे, जैसे रेगिस्तान में अरबवासी अपने तंबू समेटकर चल देते हैं। हमारा यह वर्तमान भी बीत जायेगा और भविष्य में समा जायेगा, हिंदुस्तान रहेगा और चीन भी रहेगा। दोनों आपस में मिलकर अपने कल्याण के लिए दुनिया के कल्याण के लिए काम करेंगे।

मैं चीन इस वजह से जा रहा हूँ कि वह आज हम दोनों के दुश्मनों के खिलाफ आजादी की लड़ाई में हिम्मत और हौसले, पक्के आदि इरादे और एकता की शानदार मिसाल बन गया है, वह न जाने कितनी मुसीबतें और तबाही झेलकर आज भी सिर उठाकर खड़ा हुआ है। मैं वहाँ अपनी श्रद्धा और अपनी शुभकामनाएँ अर्पित करने जा रहा हूँ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं चीन जा रहा हूँ लेकिन मेरा दिल हिंदुस्तान में है और जहाँ-जहाँ जाऊँगा, वहाँ मेरी आंखों में हमेशा हिंदुस्तान की तस्वीर होगी।...

मुझे उम्मीद है कि मैं लौटकर वापिस आऊँगा अपने साथ चीन की एकजुट जनता का हौसला, आशा की दुर्दम्य किरणें और अपार क्षमता।''

चीन के साथ सद्-इच्छा और वहाँ की शुभ यात्रा के बावजूद 1959 से लगातार भारत के एक विशाल क्षेत्र पर चीन ने अपना अधिकार जतलाना प्रारंभ कर दिया। नेहरूजी को इससे बड़ा कष्ट हुआ। चीनियों की माँग को स्वीकार करने का अर्थ था भारत के भूगोल में आमूल परिर्वतन करना और हिंदुस्तान के ताज हिमालय को उसे भेंट के रूप में दे देना।

इन सभी समस्याओं के साथ नेहरूजी विश्व मानवता को समर्पित अपनी अनन्त यात्रा पर बढ़े चले जा रहे थे।

एक दिन 'हिंदी-चीनी भाई-भाई' का नारा देने वाले चीन की विशाल सेना ने भारत की उत्तरी सीमा पर आक्रमण कर दिया। वह इतिहास का काला दिन था 20 अक्टूबर, सन 1962।

मित्र-घात और विश्वास-घात का पूरी दूनिया में एक ऐतिहासिक उदाहरण था। नेहरूजी ने महसूस किया कि धोखे से उनकी पीठ में छुरा घोंपा गया,है। अपमान और बर्बरतापूर्ण कार्रवाई का घूँट पीकर भी वे संयत बने रहे।

22 अक्टूबर को आकाशवाणी से देश की जनता के नाम उन्होंने एक संदेश दिया-

''भारत ने खास तौर से कोशिश करके दोस्ती की और सहयोग किया चीनी हुकूमत से, वहाँ की जनता से और उसकी वकालत की दुनिया की अदालतों में। और चीनी सरकार ने भलाई का जवाब बुराई से दिया है। यहाँ तक कि हमारे मुल्क पर हमला करके उसने उसके कुछ हिस्सों पर कब्जा कर लिया। कोई भी खुद्दार मुल्क इसे बरदाश्त नहीं कर सकता, न इसको पसंद करेगा। जाहिर है कि हिंदुस्तान, जिसके लोग आजादी से मोहब्बत करते हैं, कभी भी इसके नीचे सिर नहीं झुका सकते, चाहे नतीजा कुछ भी हो।''

जाति, धर्म, भाषा के मतभेद भुलाकर सारा देश प्रधानमंत्री के आह्वान पर एकजुट हो गया। भारत की आजादी की रक्षा के लिए बलिदान देने के लिए तैयार हो गया। चारों ओर भारतमाता की जय के नारे गूँजने लगे।

नेहरूजी ने दुनिया के सभी राष्ट्राध्यक्षों और शासनाध्यक्षों को पत्र लिखते हुए अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"यह बड़े खेद का विषय है कि चीन ने भारत की नीतियों का जवाब बदी से दिया है। जब से हमारा देश स्वतंत्र हुआ है, हमारी नीति बराबर चीन के साथ मित्रता और अच्छे सम्बन्ध रखने की रही है। और हमने दुनिया की परिषदों में चीन का पक्ष लिया है। मगर दुख है कि बदले में चीन ने हमसे शत्रुता ही निभाई बल्कि छल और कपट का ही व्यवहार किया है।"

शांतिप्रिय देश पर आक्रमण से विश्व के देशों ने चीन की घोर निंदा की। तटस्थ राष्ट्रों ने सम्मेलन बुलाया। अमेरिका और ब्रिटेन द्वारा भी सहायता भेजी गई। भारतीय सेना के मुँहतोड़ जवाब और विश्व की एकजुटता से आतंकित चीन ने 21 नवंबर की अर्द्धरात्रि को युद्ध विराम की घोषणा कर दी।

1962 के भारत-चीन संघर्ष ने नेहरूजी को बहुत ही निराश और बेचैन कर दिया था। जीवन के अंतिम दिनों में नेहरूजी के आत्मसम्मान को बहुत ठेस लगी थी। यद्यपि जीवन के बाकी के अठारह महीनों में रक्षा तथा कूटनीति के क्षेत्र में सकारात्मक साधन जुटाए और ऐसे उपाय किये जिससे बाद में भारत को बहुत लाभ हुआ।

नेहरूजी और भारत को रक्षा की त्रुटियाँ समझ आ चुकी थीं जिन्हें दूर कर भविष्य में कठिन चुनौतियों का देश सफलतापूर्वक सामना कर सका।

■■■

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc No.....790...
Dated...16/11/1992

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आधुनिक भारत के निर्माता

पं. जवाहरलाल नेहरू

व्यक्तित्व और विचार

पं. जवाहरलाल नेहरू का जीवन प्रारंभ से ही अपने तथा अपने परिवार की पृष्ठभूमि में ही अत्यंत रोचक है। पर वह भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष और स्वराज की प्राप्ति के उपरांत भारत के निर्माण के साथ जुड़ा है। आजादी के समय और आजादी के बाद जो भूमिका पं. नेहरू की रही है, वह अभूतपूर्व है। नेहरू केवल कल्पनाशील ही नहीं बल्कि संपूर्ण जीवन में कर्मशील भी रहे। अपने विचारों और आदर्शों को उन्होंने अमलीजामा पहनाने की निरंतर कोशिश की है। वे हर मसले की जड़ में जाते थे और अपने सिद्धांतों की कसौटी पर तौलते थे। उनके जीवन में आदर्शवाद और कर्मशीलता का अद्भुत मिश्रण है।

पंडित नेहरू पर अनेकों पुस्तकें अंग्रेजी तथा अन्य भारतीय और स्वदेशी भाषाओं में लिखी गई हैं। यही नहीं, उनकी स्वरचित पुस्तकों, लेखों तथा भाषणों के अनुवाद भी अनेक भाषाओं में उपलब्ध हैं। पं. नेहरू का व्यक्तित्व इतना महती और बहुपक्षीय है कि उसका कोई-न-कोई पक्ष हर एक व्यक्ति को प्रभावित करता है। यह जीवनी लेखक ने साधारण व्यक्तियों और नवयुवकों को दृष्टि में रखते हुए लिखी है, ताकि ऐसे पाठकों में पं. नेहरू के व्यक्तित्व के प्रति उत्सुकता उत्पन्न हो। यह उत्सुकता पाठक को उनकी रचनाओं की ओर भी आकर्षित करेगी।

ISBN 978-93-5083-153-3
DB 05993
A.H.W. Sameer Series
Biography, Autobiography & Memoirs/Political Leaders

डायमंड बुक्स
Shop online at www.dpb.in

₹ 150

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant